मूल्य : चार रुपये पचास नये पैसे (४.५०)
प्रथम संस्करण : अगस्त १९५९
अनुवादक : पण्डित दीनानाथ 'देहलवी'
प्रकाशक : सुबोध प्रकाशन, दिल्ली
मुद्रक : हरिहर प्रेस, दिल्ली

न हँसो देख के तदबीर को पलटे जाते ।
देर लगती नहीं तक़दीर को पलटे जाते ॥

प्रकाशकीय

हिन्दी पाठकों की अन्य प्रादेशिक भाषाओं की कृतियों से परिचित होने की दिनों-दिन बढ़ती हुई सद्प्रवृत्ति को देखते हुए, उर्दू के सुविख्यात उपन्यासकार मिर्ज़ा हादी 'रुसवा' के 'ज़ाते शरीफ़' उपन्यास का हिन्दी अनुवाद 'खुश मज़ाक' प्रस्तुत है। उर्दू साहित्य में रुसवा साहब का स्थान बहुत ऊँचा है और उनके उपन्यास बहुत प्रसिद्ध हैं। उनके एक उपन्यास 'उमराव जान अदा' को तो उर्दू साहित्य में क्लासिक का दर्जा प्राप्त है और अभी तक उर्दू साहित्य में उस के मुक़ाबले का अन्य कोई उपन्यास नहीं लिखा गया। नवाबी ज़माने के लखनऊ के जन-जीवन का जीता जागता चित्र खींचने में जो सफलता रुसवा साहब को मिली है वह बहुत कम लेखकों को प्राप्त हुई है। प्रस्तुत कृति भी उनकी इस कला का जीता जागता नमूना है। सारा उपन्यास शुरू से आख़िर तक इस क़दर दिलचस्प है कि आप मंत्र मुग्ध होकर रह जायेंगे और एक बार शुरू कर देने पर यह पुस्तक आप के हाथ से उस समय तक न छूट सकेगी जब तक कि आप इसे अन्त तक पढ़ न जायें।

अनुवाद के बारे में हम यह कह सकते हैं कि इसे कहीं कहीं छू-भर दिया है ताकि मूल भाषा का आनन्द ज्यों का त्यों बना रहे। अन्यथा, सारा कुछ पोचर हो जाता।

प्रायः उर्दू के शब्दों को हिन्दी में लिखते हुए एक विशेष कठिनाई आ पड़ती है और वह है उनके नीचे बिन्दी लगा कर लिखना। यथासम्भव

प्रयत्न किया गया है कि ऐसे अक्षरों के नीचे बिन्दी लगाई जाए, पर यदि कहीं ऐसा नहीं हो पाया है, तो वह प्रेस की असमर्थता अथवा भूल है।

हमें आशा है और साथ ही विश्वास भी कि हिन्दी के पाठक हमारे अन्य प्रकाशनों की भांति, इसे भी अपनायेंगे और भविष्य में और भी श्रेष्ठ साहित्य प्रकाशित करने के लिये हमें प्रोत्साहित करेंगे।

गुरुघंटाल

प्रयत्न किया गया है कि ऐसे अक्षरों के नीचे बिन्दी लगाई जाए, पर यदि कहीं ऐसा नहीं हो सका है तो वह प्रेस की असमर्थता अथवा भूल है।

हमें आशा है और साथ ही विश्वास भी कि हिन्दी के पाठक हमारे अन्य प्रकाशनों की भांति इसे भी अपनायेंगे और भविष्य में और भी श्रेष्ठ साहित्य प्रकाशित करने के लिये हमें प्रोत्साहित करेंगे।

गुरुघंटाल

एक

हमें यह बात बचपन में मुसलिम ने सिखाई है।
बुराई में भलाई है भलाई में बुराई है।।

गर्मियों के दिन हैं, सुबह का वक्त है। अभी सूरज ऊपर नहीं आया है। ठण्डी हवा चल रही है। जो लोग गर्मी के मारे रात भर करवटें बदल बदल कर तड़पा किए हैं उनकी आँखों में नींद का खुमार भरा हुआ है मगर कारबार की ज़रूरतों ने बिस्तर से उठाकर बैठा दिया है। कोई हुक्का भरने की फ़िक्र में है, कोई हाथ-मुँह धो रहा है कोई कपड़े पहन रहा है कोई भगवान का नाम लेकर घर से नौकरी की तलाश में निकला है। बाज़ारों में चहल-पहल है। खोंचेवाले गलियों में चीखते फिरते हैं। बाज़ नींद के मतवाले अभी तक सो रहे हैं और देर तक सोवेंगे। हज़रत अब्बास की दरगाह के पास नखीरवास को जो सड़क जाती है, उस पर थोड़ी दूर चलकर बायें हाथ को जो गली मुड़ी है, इसी गली में कुछ कदम के फ़ासले पर कश्मीरी मुहल्ला है और इस मुहल्ले में चंद मकान हैं। एक में हकीम साहब रहते हैं। उनका दरवाज़ा उत्तर की तरफ़ है। दरवाज़े के पास एक छोटा सा कमरा है। इसी कमरे में हकीम साहब मरीज़ों को देखते हैं। इसके आगे चबूतरा है, इस पर सायबान पड़ा है। चबूतरे से मिला हुआ एक इमली का दरख़्त है। यहाँ दो-तीन कुर्सियाँ और पाँच चार मूढ़े पड़े हुए हैं। हकीम साहब घर से निकल कर कुर्सी पर बैठे हैं।

आदमी ने हुक्का भरके सामने रख दिया है। हकीम साहब ने हुक्के के दो ही कश लिये होंगे कि दो साहब और अपने-अपने घरों से निकलकर बाद मामूली दुआ सलाम और मिजाजपुर्सी के सामने मूढ़ों पर आ बैठे। उनमें से भी एक साहब के हाथ में पेंड थमा हुक्का है, खूब सुलगा हुआ।

हकीम साहब 'मीर साहब वल्लाह, आपका हुक्का तो इस वक्त क़यामत कर रहा है, मजब ढा रहा है।

मीर साहब (हुक्का हकीम साहब के सामने लाकर) : लीजिये मुलाहजा फ़र्माइये शौक़ कीजिए।'

हकीम साहब : 'जी तो यही चाहता था। (अपने हुक्के की तरफ़ इशारा करके) पर यह हुक्का।

मीर साहब 'मुझे इनायत कीजिए ?'

हकीम साहब 'खुदा जाने नबीबख्श किस तरह हुक्का भरते हैं। पेंड पहर हो गया अभी तक सुलगा ही नहीं।

नबीबख्श (होंठों-होंठों में मुस्कराकर) 'ए, हुजूर, अभी तो भरके रखा है। भारी तवा है सुलगते सुलगते सुलगेगा। लाइये फूंक दूं। अगर ऐसी ही जल्दी है, तो सुलफ़ा ही भरवा लिया कीजिये

नबीबख्श हुक्के से चिलम उतारकर चले ही थे कि मीर साहब ने चिलम हाथ से ले ली।

मीर साहब 'अब क्या हुक्के को ग़ारत करोगे। देखो मैं दुरुस्त किये देता हूं।

हकीम साहब : 'आप तकलीफ़ न फ़रमाइये दुरुस्त हो जायगा। नबीबख्श की तरफ़ आंख से इशारा किया। नबीबख्श चिलम लेने को बढ़े ही थे कि मीर साहब बोले : 'नहीं तुम रहने दो मैं दुरुस्त कर लूंगा।

दारोगा साहब जो अभी तक चुपके बैठे थे बोले : 'यह मुमकिन नहीं। अब मीर साहब चिलम की जान न छोड़ेंगे।'

हकीम साहब 'इसमें शक नहीं कि जैसा शौक हुक्के का हमारे जनाब मीर साहब को है ऐसा कम ही होता है।

दारोग़ा साहब : 'क्यों न हो अफ़ीम के शौक़ में ख़ास चीज़ है ।

हकीम साहब 'इसमें तो शक नहीं । अफ़ीमची के मुक़ाबले में हुक्के का शौक़ और किसी को नहीं होता ।

दारोग़ा साहब : 'नस्ब पहचानने वाले होते हैं । हुक्के की देख भाल इन्हीं के हिस्से में है ।

मिर्ज़ा साहब (एक और साहब जो अभी आकर सामने दारोग़ा साहब के क़रीब कुर्सी पर बैठ गये हैं) यों कहिये हुक्के के हक़ में मसीहा हैं ।

मीर साहब 'वाह वाह ! जियो ।'

हकीम साहब (मुस्कुराकर) : 'दुरुस्त ।

दारोग़ा साहब 'मीर साहब के लतीफ़े तो क़यामत के होते हैं गज़ब की बात कहते हैं । यह मसीहा के वास्ते 'जियो' । क्या ख़ूब ।

मतलब यह कि दोनों जिसमें तबियत के मुवाफ़िक़ चुस्की देने लगी । हुक्के की पीढ़ियाँ गिनने लगे । इतने में हकीम साहब के घर से ख़ास-दान आया । सब ने पान खाये । महफ़िल का रंग जम गया । मामूली मज़ाक़-दिल्लगी के बाद गम्भीर मसलों पर बातचीत चल निकली ।

हकीम साहब 'कहिये दारोग़ा साहब, आपकी सरकार में क्या कैफ़ियत है ।

दारोग़ा साहब : 'मेरी सरकार कैसी ? सरकार तो मरहूम नवाब साहब के दम तक थी । अब हम कोई चीज़ नहीं । अब और ही लोगों का क़ब्ज़ा है ।

मिर्ज़ा साहब बेगम साहिबा को आपका बड़ा एतबार था क्या वह भी ख़िलाफ़ हो गईं ?

दारोग़ा साहब 'नहीं ख़ुदा सलामत रक्खे उनको । अभी तक तो तनख़्वाह दिये जाती हैं मगर लोगों को इसकी भी शिकायत है । देखिये अब मैं तो कहता हूँ कि इस बेकसी की हालत से बेहतर है कि पूरी-पूरी बेतरफ़ी हो जाय बिलकुल अलग कर दिये जायें । बग़ह इसमें से मेरा क्या होता है ।

हकीम साहब 'यह क्यों ?'

दारोग़ा साहब हकीम साहब अब इस सरकार में पहला तरह कर

बदनामी है।

हकीम साहब 'छोटे नवाब साहब का क्या हाल है ?'

दारोगा साहब 'कुछ न पूछिये। कुछ कहा नहीं जाता। चंद लोग मुझे हुए हैं। उन्होंने अपने रंग पर चढ़ा लिया है।'

हकीम साहब 'यह कहिए बेगम साहिबा का भी कहना नहीं सुनते।

दारोगा साहब 'बेगम साहिबा क्या चीज हैं। इस हालत में बड़े नवाब साहब भी कब्र से उठकर चले आयें तो उनकी भी कुछ न सुनी जायगी।

मिर्ज़ा साहब 'कहते हैं कि और छोटे नवाब साहब ही के कब्ज़े में हों।

हकीम साहब इसमें क्या शक है। यह सारी मनमानी इसी की तो है मगर वह तो अभी नाबालिग है।

मिर्ज़ा साहब : 'नाबालिग हैं तो क्या हुआ साथियों ने तो महाजन लगा रखे हैं। खूब इस्लाफ़ रुपया उड़ रहा है।

दारोगा साहब 'जी हाँ खुदा की कुदरत है।

हकीम साहब 'अच्छा तो यह कहिये यह सरकार भी मिटी। अच्छा बेगम साहिबा को क्या मिला ?'

दारोगा साहब 'क्या मिला ? नवाब साहब के वसीके में से दो रुपये तीन आने चार पाई। तीस हज़ार के नोट हिस्से में आये। बेगम साहिबा का इसकी क्या परवाह है। वह अपने घर से खुश हैं। मुर्शिदाबाद से जो चाहें मँगा लें। मगर मुर्शिदाबाद की आमदनी का हाल किसी को मालूम नहीं।

हकीम साहब : 'और बेटे से कैसी बनती है ?'

दारोगा साहब 'बहुत चाहती है। मगर उनकी हरकतों से ग़मगीन है।'

हकीम साहब : 'इतना मैं कहे देता हूँ कि एक न एक दिन बिगड़ेगी जरूर।

दारोगा साहब : 'जी हाँ इसमें क्या शक है जब तक कि छोटे नवाब साहब अपनी हरकतों से बाज न आ जायें।

हकीम साहब (मुस्कुराकर) : दारोगा साहब हमें बेगम साहिबा के पास नौकर रखवा दीजिये।

दारोगा साहब (बात का पहलू समझकर) : 'जी नहीं वह ऐसी बेगम नहीं

जाती थी। मगर जब कोई टुकड़ा कामदानी का या कामेदार या कोई किरम की चौगोशिया टोपियाँ किसी मशहूर कारीगर के हाथ की या सुर्ख़ियाना मुनब्बर जब किसी फेरीवाले के हाथ लग जाता था तो वह पहले हकीम साहब ही को दिखाता था। कपड़ों की क़िस्मों का भी अच्छा सलीक़ा था। अच्छे-अच्छे दर्ज़ी उनके कपड़े सीते हुए घबराते थे। अंगरखा जिसकी चोली चौकपन की बखे में बड़ से बड़ हो उसकी काट को हकीम साहब से बेहतर कोई नहीं जानता था। यह सब सामान इसलिये था कि आपको मालदार औरतों को फँसाने का निहायत शौक था। आपकी हिम्मत-मर्दाना हर वक़्त इस तरफ़ लगी रहती थी कि कोई नसीबेवार बेगम फँस जाय ताकि बुढ़ापा चैन से कटे। अक्सर बेगमों पर डोरे डाले जाते थे मगर अभी तक कोई सोने की चिड़िया जाल में फँसी न थी।

दो

नवाब मुश्ताकहुसैन की ड्योढ़ी लखनऊ में कौन नहीं जानता। कुछ ज्यादा दरियाफ़्त पता देने की नहीं। बजीम इमामन महदी के पुराने-पुराने आदमी लंदन तक पहुँच सकता है। यह तो हमारे मकान से चार ही कदम के फ़ासले पर है। चलो इस वक़्त वहीं चलें।

क्या आलीशान मकान है। इसको बने हुए अभी थोड़े ही दिन हुए होंगे। बनते-बनते बनने ही नहीं पाया नवाब की ज़िन्दगी ने वफ़ा न की साथ न दिया। रह गया। मगर जिस सलीके से बनवाया था। क्या शानदार फाटक है। सामने

चमनबंदी किस कयामत की है ! दाहिनी तरफ दीवानखाना किस खूबसूरती से बनाया गया है । बाग के दरमियान जो बारहदरी है, वह बनते-बनते रह गई । बाईं तरफ जनानी ड्योढ़ी पर दो दरबान बैठे-बैठे हुक्का पी रहे हैं । वह बड़े मियाँ जो सामने तिपाई पर बैठे हुए कुछ गुनगुना रहे हैं, स्वर्गीय नवाब के बड़े नमक-हलाल नौकरों में से हैं । इन्होंने छोटे नवाब को गोदियों में खिलाया है । मियाँ करीम खाँ इन्हीं का नाम है ।

यह महलसरा का पर्दा उलटकर छत से कौन बाहर निकल आया । जी इमामन महरी यही है । बेगम साहिबा की खासुलखास । 'शायद इन्हीं से अंदर का कुछ भेद मिले तो मिले । यह फिकरा जनाब हकीम साहब का था । यह रात के नौ बजे का वक्त हकीम साहब यहाँ कहाँ ?

बात यह थी कि सुबह को दारोगा साहब से जिस बारे में छेड़छाड़ की थी जिस पर दारोगा साहब नाराज हुए, तो वह बात टाल दी गई, उसकी फिक्र हकीम साहब को बहुत दिन से थी । बड़े नवाब साहब के मरने के बाद आपको यह खब्त सवार हुआ कि मालदार बेगम से किसी किस्म का ताल्लुक जायज या नाजायज पैदा करना चाहिये । आज इस वक्त रात को इस फिक्र में आये हैं कि किसी न किसी से कुछ भेद बेगम साहिबा का लेना चाहिये । मामला बहुत मुश्किल था और कामयाबी की भी उम्मीद कम ही थी मगर हकीम साहब को अपनी सूरत अपने स्वभाव खानदानी और कुल-बड़ाई पर पूरा भरोसा था । किसी दूसरे को इस मामले का भेद देना भी मंजूर न था इसलिये मौके वारदात की देखभाल करने के लिये खुद ही तशरीफ लाये हैं । एक नौकर पीछे-पीछे है । ज्योंही महरी दरवाजे से निकली हकीम साहब ने आदमी की तरफ मुड़कर देखा । वह हाथ बांधे हुए आगे को बढ़ा ।

हकीम साहब : 'नबीबख्श ।

नबीबख्श 'हुजूर ।

हकीम साहब : देखो इस महरी को पहचान लो ।

नबीबख्श (जरा जोर से) : 'यह महरी । इसको तो मैं जानता हूँ ।

हकीम साहब 'मियाँ चुप रहो । कोई सुन न ले । हाँ यही महरी । तुम

आती थी। मगर जब कोई टुकड़ा जामदानी का या जामेवार या कोई किरन की चौगोशिया टोपियाँ किसी मशहूर कारीगर के हाथ की या फुन्दियादार पुशबंद जब किसी फेरीवाले के हाथ लग जाता था तो वह पहले हकीम साहब ही को दिखाता था। कपड़ों की कितरने का भी अच्छा सलीक़ा था। अच्छे-अच्छे दर्जी उनके कपड़े ब्योंतते हुए घबराते थे। अंगरखा जिसकी चोली बाँक-पन की वजे में बढ़ से बढ़ हो उसकी काट को हकीम साहब से बेहतर कोई नहीं जानता था। यह सब सामान इसलिये था कि आपको मालदार औरतों को फँसाने का निहायत शौक था। आपकी हिम्मत-मर्दाना हर वक्त इस तरफ लगी रहती थी कि कोई वसीक़ेदार बेगम फँस जाय ताकि बुढ़ापा चैन से कटे। अक्सर जगहों पर डोरे डाले जाते थे मगर अभी तक कोई सोने की चिड़िया जाल में फँसी न थी।

नवाब मुख्तारुद्दौला की कोठी लखनऊ में कौन नहीं जानता। कुछ ज्यादा जरूरत पता देने की नहीं। बकौल इमामन महरी के पूछते-पूछते आदमी लंदन तक पहुँच सकता है। यह तो हमारे मकान से चार ही क़दम के फ़ासले पर है। चलो इस वक्त वहीं चलें।

क्या आलीशान मकान है! इसको बने हुए अभी थोड़े ही दिन हुए होंगे। बनने ही नहीं पाया नवाब की जिन्दगी ने वफ़ा न की साथ न दिया। बनते-बनते रह गया। मगर किस सलीके से बनवाया था। क्या शानदार फाटक है। सामने

मनबंदी किस क़यामत की है! दाहिनी तरफ़ दीवानख़ाना किस ख़ूबसूरती से बनाया गया है। बाग़ के दरमियान जो बारहदरी है, वह बनते-बनते रह गई। बाईं तरफ़ ज़नानी ड्योढ़ी पर दो दरबान बैठे-बैठे हुक़्क़ा पी रहे हैं। यह बड़े मियाँ जो सामने तिपाई पर बैठे हुए कुछ बुदबुदा रहे हैं स्वर्गीय नवाब के बड़े नमक-हलाल नौकरों में से हैं। इन्होंने छोटे नवाब को पोतड़ों में खिलाया है। मियाँ करीम ख़ाँ इन्हीं का नाम है।

यह महलसरा का पर्दा उलटकर झट से कौन बाहर निकल आया। जी इमामन महरी यही है। बेगम साहिबा की ख़ासुलख़ास। 'शायद इन्हीं से अंदर का कुछ भेद मिले तो मिले।' यह फ़िक़रा जनाब हकीम साहब का था। यह रात के नौ बजे का वक़्त, हकीम साहब यहाँ कहाँ?

बात यह थी कि सुबह को दारोग़ा साहब से जिस बारे में छेड़छाड़ की थी जिस पर दारोग़ा साहब नाराज़ हुए, तो वह बात टाल दी गई, उसकी फ़िक्र हकीम साहब को बहुत दिन से थी। बड़े नवाब साहब के मरने के बाद आपको यह ख़ब्त सवार हुआ कि मालदार बेवा से किसी क़िस्म का ताल्लुक़ जायज़ या नाजायज़ पैदा करना चाहिये। आज इस वक़्त रात को इस फ़िक्र में आये हैं कि किसी न किसी से कुछ भेद बेगम साहिबा का लेना चाहिये। मामला बहुत मुश्किल था और कामयाबी की भी उम्मीद कम ही थी मगर हकीम साहब को अपनी सूरत अपने स्वभाव जानकारी और चुप-चढ़ाई पर पूरा भरोसा था। किसी दूसरे को इस मामले का भेद देना भी मंज़ूर न था इसलिये मौक़े वारदात की देखभाल करने के लिये ख़ुद ही तशरीफ़ लाये हैं। एक नौकर पीछे-पीछे है। ज्योंही महरी दरवाज़े से निकली हकीम साहब ने आदमी की तरफ़ मुड़कर देखा। वह हाथ बाँधे हुए आगे को बढ़ा।

हकीम साहब: 'नबीबख़्श।'

नबीबख़्श: 'हुज़ूर।'

हकीम साहब: 'देखो इस महरी को पहचान लो।'

नबीबख़्श (ज़रा ज़ोर से): 'यह महरी। इसको तो मैं जानता हूँ।'

हकीम साहब: 'मियाँ चुप रहो। कोई सुन न ले। हाँ यही महरी। तुम—

इसे क्या जानो ?

नबीबख्श : इससे आपको क्या मतलब। आपका काम किसी तरह हो जायगा।

अच्छा अब हकीम साहब और मिर्जा नबीबख्श को यहीं छोड़िये। एक ज़रा छोटे नवाब साहब की महफ़िल का रंग देखिये।

यह इस वक़्त दीवानख़ाने में हैं। बैठने का कमरा दुलहिन की तरह सजा हुआ है। फ़र्श फ़रूश शीशे आलात जो चीज़ है लाजवाब है। तो इसमें छोटे नवाब साहब के सलीक़े और शऊर को कोई दख़ल है ? बड़े नवाब के बैठने का कमरा है। अभी उनको इन्तक़ाल किये हुए दिन ही कितने हुए ? चालीसवाँ भी तो नहीं हुआ। दो चार महीने के बाद देखियेगा इस बारहदरी में उल्लू बोलेंगे। यह हम क्या कहते हैं, हर समझदार कह सकता है। दरो-दीवार से यही सदा आ रही है। ज़रा छोटे नवाब साहब के नौकरों और साथियों को देखिये। शहर के छँटे हुए बदमाश जमा हैं और यह जो उन में दो चार सूरतें नज़र आती हैं, ख़ुदा ही उनसे बचाये। चार ही दिन में न यह मकान होगा न यह सामान। जिसके दम से रौनक़ थी, वही दुनियाँ से उठ गया। छोटे नवाब को न अक़्ल न तमीज़, न कोई उम्दा सलाहकार। दिन-रात जिन लोगों के घेरे रहते हैं, उनमें से हरएक चालाकी में अफ़लातूं मक्कारी में उस्ताद, बदमाशी में लासानी है। नवाब साहब को अपने आप कोई सलीक़ा सिवाय हाहा-हूहू करने के आता नहीं है। या यह कि दो-तीन दौर चाँदी के पी लिये अंटा ग़फ़ील हो गये या कोई रसीले नैनोंवाली नज़र पड़ गई, तो उसे पाँच की जगह पच्चीस ख़र्च करके बुलवा लिया। थोड़े दिनों में दीवाली के फ़ेलख़ाने में होंगे मगर इस वक़्त तो मौज उड़ा रहे हैं। जवानी का आलम है शराब है बाज़ारी लोगों की भीड़ है, लाखों लाखों की धूम मच रही है। एक ही दौर की कसर है नवाब साहब ख़ाक में मिला ही चाहते हैं।

अब ज़रा महफ़िल के अन्दर भी कुछ गुन-गुन सुनना चाहिये।

महलसरा के अन्दर दालान में बेगम साहिबा सामने तख़्त की चौकी पर पान तकिया लगाये बैठी हैं। किसी पर्दा-नशीन की शक्ल हूबहू बयान करने से

बेगम : 'आख़िर माजरा क्या है ? कहती क्यों नहीं ? और गमा को क्यों साथ नहीं ले आती ।

महरी : 'इस वक़्त मौक़ा नहीं है ।

बेगम साहिबा : 'कुछ कह तो क्यों मौक़ा नहीं ।

महरी ने कुछ होठों ही होठों में कहा जिसे बेगम साहिबा ने नहीं सुना ।

बेगम साहिबा : 'हाय ! यह मेरे सामने इस तरह चबा-चबाकर कर बातें करती है । मुर्दार की शामतें आई हैं ।

महरी : 'हुज़ूर अब मैं आपसे क्या कहूँ । वहाँ तआल्लुक पूरे गए हैं । औरतज़ात का गुज़र नहीं ।

बेगम साहिबा : 'अरे यह क्या कहा औरतज़ात का गुज़र नहीं । क्या किसी ने तुमसे कुछ कहा ?'

महरी : 'कहा क्या काम पुराना मुश्किल हो गया । हुज़ूर, मैं आपके सदके हो जाऊँ । इजाज़त नहीं दी जाती । मुझे दस-बारह बरस इस घर में हो गये । अंदर से बाहर तक किसी ने आधी बात तक नहीं कही । आँख उठाके नहीं देखा । अब जैसे-जैसे नये आदमी छोटे नवाब नौकर रखते जायेंगे वैसी ही वैसी बातें होंगी । यह मुआ हबशी जो नौकर हुआ है अब बाहर जाऊँ, मुझे रोकता है । चाहे हुज़ूर नौकर रक्खें या न रक्खें हुज़ूर मैं बाहर न जाऊँगी ।

बेगम साहिबा : 'यह कौन मुआ हबशी है । महलदार ज़रा तो जाना बाहर । देख तो करीम खाँ ड्योढ़ी पर है । अभी निकालो इस मुए हबशी को । जो साहब हमारे घर का नाम बदनाम होता है । अभी तो बड़े नवाब का चालीसवाँ भी नहीं हुआ और अभी से यह बातें ड्योढ़ी पर होने लगीं । ना साहब ऐसे आदमियों का हमारे यहाँ काम नहीं ।'

महलदार ड्योढ़ी पर गई । करीम खाँ को बुलाया ।

महलदार : 'यह हबशी कौन नया नौकर हुआ है ?

करीम खाँ : 'क्या तुम नहीं जानती ।

महलदार : 'मैं मुए को क्या जानूँ ।'

करीम खाँ : 'अरे वही औलाद का नवासा मवक्कल ।

महलदार: 'दीवाने का तमाशा! खुदा दुनिया भर का उठाईगीरा। यह छोटे नवाब को हो क्या गया है कि ऐसे आदमियों को घुसेड़ते हैं। बेगम साहिबा ने हुक्म दिया है कि अभी घर से निकाल दो।'

करीम खाँ: 'बहुत खूब।'

यह 'बहुत खूब' इस लहजे में कहा था कि महलदार समझे कि करीम खाँ को इसमें कुछ हिचक है।

महलदार: 'बहुत खूब नहीं। तुम बेगम साहिबा का मिज़ाज जानते हो।'

करीम खाँ: 'मेरी तरफ़ से दस्तबस्ता अर्ज़ कर दो कि हुज़ूर, मेरे निकाले नहीं निकल सकता। बुढ़ापे में मुझे अपनी आबरू देना मंज़ूर नहीं। यह यों ही जब इधर निकल आता है मुझ पर फब्तियाँ छाँटता है, आवाज़ें कसता है। मैं घुसघुस घुला करता हूँ और चुप हो रहता हूँ। ऐसे मूज़ियों के कौन मुँह लगे? मैं कुछ मुँह से कहूँ और यह उल्टी-सीधी सुनाने लगे तो मेरी इज़्ज़त खाक में मिल जाए।'

महलदार: 'अच्छा तो मैं यों ही जाकर कहे देती हूँ।'

करीम खाँ: 'बेशक यों ही कह दो हम उसके मुँह न लगेंगे।'

महलदार घर में गई और जो कुछ करीम खाँ ने कहा था सब बयान कर दिया। मुद्दतों से ऐसी वारदात नहीं हुई थी कि बेगम साहिबा का कोई हुक्म टला हो। खुद बड़े नवाब बेगम से डरते थे और उनका मिज़ाज भी इस क़िस्म का था कि जो मुँह से कहा वही किया। ज़मीन टल जाय आसमान टल जाय उनका कहना न टले। फ़ौरन दूसरा हुक्म हुआ।

बेगम साहिबा: 'अच्छा तो जाओ, छोटे नवाब को बुला लाओ। अगर तबीयत ज़्यादा ख़राब हो, तो गोद में उठा लाओ और नहीं तो पर्दा करो मैं खुद जाऊँगी।'

महलदार यह हुक्म लेकर करीम खाँ के पास गई।

करीम खाँ: 'बुआ महलदार, इस हुक्म की तामील भी मुझ से नहीं हो सकती।'

महलदार: 'करीम खाँ यह आज तुम्हें हो क्या गया है, जो बात तुमसे

कहीं जाती है, टुकड़ा सा तोड़कर हाथ पर रख देते हो।

करीम खाँ : 'मैं सच कहता हूँ इस वक्त मैं छोटे नवाब के पास नहीं जा सकता।

महलदार 'क्यों ?

करीम खाँ : 'क्यों क्या नहीं जाते।

महलदार 'आखिर कुछ सबब तो बतलाओ। बेगम तो मुझसे हिरी की तिरी पूछती हैं। यहाँ तुम हर बात का वो टूक जवाब दे देते हो। मेरी जान मुई आफत में है। हेरे फेरे करते मरते टाँग टूटी जाती है।

करीम 'तुम्हा मैं सच कहता हूँ मेरे जाने का यहाँ मौका नहीं। इससे ज्यादा और क्या कहूँ ?

महलदार : 'अच्छा तो पर्दा कराके बेगम साहिबा खुद जायेंगी।

करीम खाँ : 'बेगम साहिबा के जाने का भी मौका नहीं है।

महलदार आखिर क्यों ?

करीम खाँ फिर वही क्यों। कह दिया मौका नहीं है।

महलदार : 'भला हुजूर इस बात को मानेंगी।

करीम खाँ मानें या न मानें। मैंने जो बात असल थी कह दी।

महलदार 'तुम तो मुब्हम मैं कहते हो। कुछ खोल कर बात करो तो कोई समझे भी।

करीम खाँ 'अच्छा तो अब सुनो साफ साफ। मैं तो चाहता हूँ मालिक की चुगली न खाऊँ और तुम जानती हो मुझसे छोटे नवाब की कैसी मुहब्बत है, मगर क्या करूँ (एक दोहत्थड़ मुँह पर मारकर) तकदीर फूट गई।

इतना कहकर करीम खाँ रोने लगा।

महलदार हक्का-बक्का हो गई, आखिर माजरा क्या है। घबराकर कहने लगी 'कहो तो क्या है। आखिर तबीयत कैसी है ?

करीम खाँ (आँसू दामन से पोंछकर) 'अल्लाह के फज़ल से तबीयत अच्छी है।

महलदार 'फिर क्या है ?'

करीम खाँ अरे कहता हूँ तकदीर फूट गई ! यहाँ इस वक्त नशे में सब झूम-झूम कर रहे हैं। छोटे नवाब बहोश पड़े हैं।

महलदार 'क्या किसी ने फ़लक सैर खिला दी ?'

करीम खाँ फ़लक सैर सिर फिरती है। यहाँ बोतलें उड़ती हैं।

महलदार 'तो उनमें क्या मज़ा होता है। विलायती पानी की बोतलें बड़े नवाब के वक्त में भी आती थीं। मुझे एक दफ़ा खाना हज़म नहीं हुआ था बड़े नवाब ने मुझे सारी की सारी बोतल पिला दी। उसमें तो नशा-वशा कुछ भी नहीं था। और अगर नशा होता तो बड़े नवाब क्यों पीते। हमारी बेगम भी पीती हैं।'

करीम खाँ 'क्या नन्हीं बनी हो ! विलायती पानी नहीं लाल पानी।

महलदार 'ऊँ ऊँ ए है क्या नवाब की सोहबत में कोई लाल पानी पीता है ? यह मुआ तुम्हीं पीता होगा।

करीम खाँ 'सब पीते हैं।

महलदार 'ए है तो क्या नवाब भी पीने लगे।

करीम खाँ : 'जी हाँ इसी का तो रोना है।'

महलदार 'है ! मैं भला अब क्या मुँह लेकर कहूँ ?

करीम खाँ 'इसीलिये तो मैं नहीं कहता था।'

महलदार 'अरे वह मुए सभी तो पीते-पीते अपना बुरा हाल करेंगे।

करीम खाँ 'उनसे कहना मुनासिब नहीं है।'

महलदार (थोड़ी देर ठहर के) देखो करीम खाँ यह बात अच्छी नहीं। आखिर एक दिन फेर खुलेगा ही। बेगम से कह देना ठीक है। यह घर की तबाही के लच्छन हैं। हमको तुमको ऐसी बातें नहीं चाहिएँ। बेगम साहिबा के दुश्मनों पर जो कुछ गुजर जाय गुजर जाय, मैं तो कह दूँगी।

करीम खाँ 'मेरे जाने तो अभी न कहो।

महलदार 'फिर कब कहूँ।

करीम खाँ : 'अच्छा तुम्हें अख्तियार है।

तीन

दूसरे दिन सुबह को, मिर्ज़ा नबीबख्श अल्लामा फ़हामा मुल्ला वहीदा की ड्योढ़ी पर पहुँचे। कहीं टिकाव का सहारा न मिला। पहले फाटक के इर्द-गिर्द हेरे-फेरे किया किये। आख़िर सामने एक फुलके वाले की दुकान थी यह वहीं पहुँचे। एक पैसे की फुलकियाँ लीं। गरम-गरम ताज़ी-ताज़ी फुलकियाँ पैसे की पाँच मिलीं उनको खाया। उसके बाद तामलोट में बंबे से पानी लेकर पिया। फुलके वाले का हुक्का लेकर पीने लगे। थोड़ी देर के बाद इधर-उधर की बातें करके फुलके वाले के राज़दार बन गये। एक पैसे की फुलकियाँ और खाईं। उस दिन बड़ी देर तक बैठे रहे अल्लामा महरी घर से निकली ही नहीं। आख़िर थक कर वापिस आये।

दूसरे दिन सुबह को फिर पहुँचे।

नबीबख्श (फुलकेवाले से): 'भई क्या कहूँ, तुम्हारे फुलकों ने आज फिर खींच बुलाया। ले देखो ला एक पैसे के।

फुलके वाला: 'तो एक पैसे के क्या लेते हो? दो पैसे के लो लो। एक पैसे में तो कल्ला भी गरम न होगा।

नबीबख्श: अच्छा तो भई तुम्हारी ख़ातिर दो ही पैसे के दे दो। मगर यार चटनी ज़रा ज़्यादा देना।

फुलके वाला: 'तो जितनी जी चाहे चटनी ले लो। यह कहकर चटनी की

पुड़िया सामने रख दी।

नबीबख्श 'भई तुम्हीं अपने हाथ से लगा दो। मगर यार चटनी तो बासी मालूम होती है।

फुनकेवाला 'वाह! बस इसी से तो जी जलता है। अभी सुबह को तो हमने पाव भर खटाई पीसकर चटनी बनाई है, तुम कहते हो बासी है। मालूम हुआ आप चटनी पहचानने में बड़े मश्शाक़ हैं।

नबीबख्श : 'यह अच्छी हुई। आप चटनी के सौ बार मुझे कह दीजिये मैं बुरा नहीं मानता।

फुनकेवाला (एक बारगी खड़ा होकर) : 'मैं भी दिल्लगी नहीं करता। दिल्लगी और दूकानदारी से बैर है।

नबीबख्श 'तो क्या मैं कुछ बुरा मानता हूँ। आप सौ दफ़े दिल्लगी कीजिये। मियाँ यहाँ तो दिन रात दिल्लगी में ही बसर होती है।

फुनकेवाला 'अच्छा तो भई हम ठहरे दूकानदार। हमारी क्या मजाल जो गाहकों से दिल्लगी करें।

नबीबख्श 'अच्छा तो हम ऐसे गाहक नहीं हैं। हम तो चाटने के आशिक़ हैं। तुम्हारी फुनकियाँ वल्लाह ऐसी अच्छी मालूम हुईं। जरा एक बात खूब जरा करके निकालो तो एक आने की हकीम साहब को लेता जाऊँ। अगर उनके मुँह लग गईं तो वो एक आने की रोज मेरे हाथों मँगवाया करेंगे।'

फुनकेवाला (लड़का दूकान पर बैठा था उससे) : 'अरे जरा हुक्का तो भर ले।

लड़का 'उस्ताद, तम्बाकू तो है नहीं।

फुनकेवाला 'तो ले क्यों नहीं आता तम्बाकू नहीं है, तम्बाकू नहीं है।'

नबीबख्श चौरसिया तम्बाकू जम बरदार से हकीम साहब के लिए खरीद कर लाये थे वह उनके चादरे में बँधा हुआ था। फौरन चादरा खोलके बोले 'लो इसमें से भरो।

यह कह कर कोई डेढ़ छटांक तम्बाकू टिकिया से तोड़कर लौंडे को दे दिया। माने मुफ्त दिये बेदाम।

हसनू : 'हाँ हाँ, वह अब बारादरी में नाच गाना हुआ था।'

महरी : 'वह नाच गाना तो बड़ी शादी में हुआ था। तब तुम्हारी दुकान कब थी। वहीं मैं नई नई नौकर हुई हूँ। वही छोटे नवाब वाले घर वाले हैं।'

खरीदार : 'मैंने तो पहले ही कह दिया। कई निकल चुके हैं उसके बाद इन्होंने दुकान रखी है।'

महरी : 'अब मुझे तो याद नहीं। हाँ यही कोई पाँच छः बरसें हुई होंगी।'

मियाँ नबीबख्श को अब इस इतिहास के सिलसिले से कुछ ज़्यादा ताल्लुक न रहा था क्योंकि इत्मीनान महरी जिसकी तलाश में वह दो दिन से फिर रहे थे सामने खड़ी थी। मियाँ हसनू पहले खरीदार को फुनकियों का दोना बनाकर दे चुके हैं। वह अब सिर्फ़ एक नया हुक्के के मुंतज़िर हैं। दूसरा मियाँ नबीबख्श के कब्ज़े में है। वह महरी के साथ ज़िक्र में मसरूफ़ हैं और हुक्के पर कुछ कम कर दम खींच रहे हैं। फुनकी वाले की नज़र भी हुक्के की तरफ़ है मगर तम्बाकू मियाँ नबीबख्श का दिया हुआ इसलिए इस वक़्त हुक्के पर मालिकाना हक़ है। लौंडा बिलकुल ही थक कर मियाँ के पास मुँह बनाये बैठा बड़बड़ा रहा है। बी महरी फुनकियों की बस्ती कर रही है। मियाँ हसनू ने अभी आग कन्न म डाला है। अब वह इस फ़िक्र में हैं कि पहले दूसरा किसका दोना बनाऊँ। अभी तक कोई राय क़ायम नहीं हुई। मियाँ नबीबख्श का दम भी अब गवारा नहीं पड़ता। उनकी तमाम तवज्जह इस तरफ़ है कि बी महरी से बातचीत की राह खुले। कोई तरकीब अभी तक ख़याल में भी नहीं आती। जैसे किसी से मेल बढ़ाना हुआ उससे यह कहना कि 'मैंने आपको कहीं देखा है' यह नुस्ख़ा बहुत पुराना हो गया था जैसे उसे किसी फ़र्ज़ी नाम से पुकारा। जब उसने कहा कि 'मेरा नाम तो यह नहीं' तो फ़ौरन पूछा 'फिर क्या नाम'। जब उसने बताया तो कह दिया 'हाँ हाँ' माफ़ करना भूल गया था। बाद उसके सही नाम लेकर उससे बातें करने लगे। इसमें ज़रा भी नई बात नहीं। या यह कि अगर किसी औरत से बात करनी हो तो किसी का नाम लेके पूछा जैसे 'अहमद ख़ाँ अब कहाँ रहते हैं'। जब उस औरत ने कहा 'मैं क्या जानूँ', तो आप हँसने लगे। इस सूरत में वह औरत ज़रा मुस्कराकर सामने नव्ची

है कि जिस शख़्स का नाम लिया जाता है वह उसके जाने हुए लोगों में है या नहीं ।

इस हालत में औरत बात को टालकर कोई और ज़िक्र शुरू कर देती है। ऐसे ऐसे सैकड़ों फ़िक़रे सिफ़ारिशियों के मँजे हुए होते हैं और इन सबसे चुस्त फ़िक़रा यह है कि जिससे बात करनी हो उसके हालात किसी तीसरे आदमी से दरयाफ़्त कर लिये और बहुत ही पुरअसर और अनिया तदबीर दोस्ती बढ़ाने की यह है कि जिस शख़्स से दोस्ती बढ़ानी हो अब उससे किसी तीसरे से दिलचस्पी होती हो तो जिससे दोस्ती करनी है उसकी तरफ़ से अपने आप जवाब देने लगे। मगर यह तदबीर उस सूरत में चल सकती है, जहाँ साथ बैठने का मौका मिले या इससे बेहतर यह है कि अगर वह शख़्स किसी से बातें करता हो तो उसे गौर से सुनता रहे और उसमें नमक मिर्च लगाकर दिल में रख ले। दोनों सूरतों में कुछ न कुछ हाल उसकी पिछली ज़िन्दगी के मालूम हो जायेंगे। बात करने का मौका मिलने पर इस जानकारी से काम ले। इससे उसको यक़ीन हो जायेगा कि बात करने वाला उसके निजी हालात से किसी हद तक वाक़िफ़ है। इससे बेतकल्लुफ़ी बहुत जल्दी हो जायेगी। मियाँ नबीबख़्श ने इसी तदबीर से काम लिया। अगर तो हुक्का जो अब करीब बुझने के था मियाँ हसनू के हाथ में दे दिया और फ़ौरन महरी की तरफ़ मुतवज्जह हुए।

नबीबख़्श 'मैंने कहा तुम्हें कोई नौ बरसें तो हुई होंगी इस सरकार में नौकर हुए।

महरी पहले तो कुछ अचम्भे में आई, इसलिये कि नबीबख़्श का अन्दाज़ा बिल्कुल ठीक था। उन्होंने दिल ही दिल में हिसाब लगा लिया था कि आरज़ानी ख़ानम की शादी को पाँच बरस हुए। बड़ी बाजी अक्सर छठे सातवें साल हुआ करती है इस हिसाब से नौ दस बरस होते हैं। महरी को अपनी पहले कही हुई बात याद रखने की कोई वजह न थी। बोली 'हाँ यही कोई नौ दस बरसें हुई होंगी।

नबीबख़्श 'तो छोटे नवाब की मुसलमानी को नौ बरस हो गये। ऐ लीजिये दिन जाते भी कुछ देर नहीं लगती। अभी कल की बात है।

खरीदार (दोना हाथ में लेकर) 'जी हाँ दिन जाते कोई देर नहीं लगती। यह कहकर एक फुलकी मुँह में रखी और चलते हुए।

नबीबख्श 'कहिये अब सरकार का क्या हाल है ?

महरी 'अच्छा हाल है और क्या हाल है।

नबीबख्श 'अजी मेरा मतलब है कि किसी के पास सेर आटे का भी सहारा हो सकता है।

महरी 'अल्लाह रक्खे मोटे नवाब की सरकार में नित नये नौकर होते हैं। क्यों ? क्या तुम कहीं नौकर नहीं हो ?'

नबीबख्श : 'जी मैं तो नौकर हूँ। मेरा भाई बहुत दिनों से यों ही बैठा है।'

महरी 'देखो मैं कहूँगी मगर एक बात है जमानत देनी होगी।

नबीबख्श 'जमानत एक से हजार तक की खुद हमारे हकीम साहब कर देंगे।

महरी : 'कौन हकीम साहब।

नबीबख्श (इस वक्त नाम बतलाना ठीक न समझकर) 'वही हकीम साहब जो दरगाह के पास रहते हैं।

महरी 'ऐ, तो नाम बताओ।

नबीबख्श (भोले बनके) 'नाम तो मुझे मालूम नहीं।

इस बात पर महरी ने जोर से एक कहकहा मारा। मियाँ हसनू भी मुस्कुराये।

हसनू 'अच्छी कही ! जो साहब यह नौकर हैं कि मालिक का नाम तक मालूम नहीं।

नबीबख्श (दिखलाने को खिसियाने से होकर) 'हमें नाम से क्या मतलब, काम से काम है। मशहूर हकीम हैं, सब कोई हकीम साहब कहते हैं वही मैं भी कहता हूँ।

महरी : 'अच्छा तो जमानत करा दोगे ?'

नबीबख्श 'बराबर'

महरी : 'अच्छा भई, नौकर तो मैं करा दूँगी पर एक महीने की तनख्वाह

फ़ैज़ू गंधी की दुकान पर ठेका लिया। यहाँ पानी पिया। उसकी दुकान से तम्बाकू लेके हुक्का भरा। दो चार कश पिये। हुक्का फ़ैज़ू के हवाले किया। आगे बढ़े। आगे रमज़ान कुंजड़े की दुकान मिली। उससे तीन पैसे की नारंगियाँ लीं। यहाँ भी हुक्का पीना ज़रूर है। आगे बढ़े। तम्बाकू वाले की दुकान मिली। यहाँ एक बड़ा नागी हुक्का हर वक़्त भरा रहता है। आम चलने वालों पर वाजिब है कि जब इधर से गुज़रें, एक दो कश पी लिये। और चार क़दम आगे बढ़े। चाय वाले की दुकान मिली। यहाँ फ़र्ज़ कीजिए कि चोरी से पुड़िया अफ़ीम बिकती है। यह सदर स्टेशन है। यहाँ कम से कम आध घण्टे ठहरना ज़रूरी है। दो पैसे की पुड़िया अफ़ीम की ली घोलकर पी। एक पैसे के बिस्कुट और एक पैसे की प्याली चाय की पी। फिर ही हुक्का भरा ख़ूब जी भर के पिया। अब ताज़े दम हो गए। ऐसे ही समझ लो सैकड़ों मौके हुक्का पीने के हर जगह मिल सकते थे। हर दुकान पर हुक्का पीने का आहम उसूल यह था कि अक्सर लोग हुक्के के शौक़ीन होते हैं मगर अपने हाथ से भरना पसंद नहीं करते। मियाँ नबीबख़्श को इसमें ख़ास मलका था। बहुत ही फुर्ती से हुक्का भरते थे। मगर इस गुण के साथ इतना दोष भी था कि अगर दूसरा पीने वाला मज़म्मत करे तो बहुत ही पस्त बता भी देते थे। हकीम साहब इनकी इन हरकतों से नाराज़ रहते थे। मगर मुफ़्लिस कारगारों मे बग़ैर इनके काम ही नहीं चल सकता था। इस वजह से यह हकीम साहब की ज़िन्दगी का मियाँ नबीबख़्श एक ज़रूरी हिस्सा बन गए थे। यह हकीम साहब के ख़ास ख़िदमतगार थे। इनके अलावा एक बुड्ढा आदमी गुलामअली दरबान पर और था। चार कहार नाम मात्र के लिए नौकर थे। तफ़सील इसकी यह है कि मकान के दरवाज़े पर कहारों का अड्डा था और यह कोई ज़रूरी बात न थी कि हर शख़्स इस बात को जानता हो कि इन कहारों में से कोई हकीम साहब का नौकर नहीं है। चारों वर्दियाँ अलबत्ता एक दफ़ा बनवाना पड़ी थी। जब कहीं जाने की ज़रूरत हुई, वर्दियाँ पहना दीं सवार हो गए। जब वहाँ से आये किराया दे दिया वर्दियाँ ले लीं। किराया जो मरीज़ों से वसूल होता था, उसे मियाँ नबीबख़्श अपने पास रखते थे। घर पर आकर मुनासिब किराया कहारों

को दे दिया गया तो तौर, तरला फ़िदया मय फ़ीस बेगम साहिबा की तहवील में दाख़िल हुए। बेगमात के फँसाने के शौक़ के सिवाय हकीम साहब को मुक़द्दमेबाज़ी से भी बहुत बड़ा शग़फ़ था। शहर में जिस क़दर भारी भारी जाली मुक़द्दमे दायर होते थे उनकी कौंसिल में आपका शरीक होना ज़रूरी समझा जाता था। शहर के बाज़ वकील जो बहुत चलते पुर्ज़े समझे जाते हैं और अक्सर जाली मुक़द्दमे मोल लिया करते हैं, उनसे दोस्ताना ताल्लुक़ात थे। अच्छे मोअज़्ज़िज़ झूठे गवाह मुहैया करने और उनको तैयार कर लेने में आपको ख़ास मलका था। दवाख़ाना के वक़्त के बाद से रात के बारह बजे से आपके घर पर तमाम शहर के छटे हुए जालियों का जलसा रहता था। झूठे वारिस पैदा करना, अच्छे ख़ासे वारिसों को नाजायज़ क़रार देना, जाली दस्तावेज़ें बनाना, अदालत से मिसलों का उड़वा देना, झूठी रजिस्ट्रियाँ करा देना, ग़रज़ कि आप अपना सानी न रखते थे।

इस क़िस्म की दरपोशी कार्रवाइयाँ जो किसी ख़ास मंसूबे में कामयाब होने के लिए ज़रूरी हों, इस क़िस्म के मंसूबों में मामूली तौर से मुफ़ीद हों, एक ख़ास सिलसिले और इन्तज़ाम के साथ हमेशा जारी रहती थीं। आपके ख़ास दोस्त जिनमें हर एक जालसाज़ी के किसी न किसी सीग़े में पहुँचा हुआ था, अक्सर अपने काम से बने रहते थे। इन सब में एक बुज़ुर्गवार दस्तावेज़ बनाने वाले थे जो शहर भर के जालियों के पीर मुर्शिद थे। इनको हम आगे मुर्शिद के नाम से याद करेंगे और इसी तरह इनके बड़े बेटे को ख़लीफ़ा कहेंगे जिन पर हकीम साहब की ख़ास मेहरबानी थी। अक्सर तशरीफ़ लाते थे। अक्सर नये नये बनाये हुए मुक़द्दमे सलाह के वास्ते उन्हें सुनाये जाते थे। मुश्किल मामलों में जो पेच दरपेच कठिनाइयाँ पड़ जाया करती हैं उनका सुलझाना व हल करना उन्हीं के सुपुर्द था। अगरचे मुर्शिद को इन बातों से वैसी कि ध्यान पहुँचे हुए लोगों की हुआ करती है, अब फ़राग़त हासिल थी लेकिन अक्सर फ़रेबी कार्रवाइयों में बिला वास्ता के हाथ बँटाते थे। बुढ़ापे की वजह से अब आपने नई कार्रवाइयाँ बन्द कर दी थीं। जालसाज़ों के हुनर में आप अपने ज़माने के उस्ताद थे। मगर आपकी

खास्तगारियाँ अगर मिल जायें तो कई बड़े-बड़े पीरी तैयार हो जायें। इस छोटे से नाविल में इसकी गुंजाइश नहीं मगर जहाँ तक आपका हकीम साहब के मामलों में दखल होना सबसे खूब मिल देंगे। मगर अब बुढ़ापे की वजह से किसी नये मामले मुकद्दमे का इन्तज़ाम पैरवी अपने बलबूते पर न लेते थे। लेकिन इस हुनर से लगाव आपको यहाँ तक हो गया था कि नये नये वालियों के बड़े-बड़े नामों के बारे में सब हाल सुनने का आपको खास शौक था। इसलिये यहाँ बैठे-बैठे भी घबराता किसी नामी वकील के मकान पर चले गये। कभी हकीम साहब के पास चले आए। एक मौलवी साहब अपने बड़े यारगार थे। उनसे घड़ी भर सोहबत रही। खुलासा यह कि अपने वक्त को ऐसी ही दिलचस्पी व इतमीनान के साथ गुज़ार रहे थे। यह कैसे मुमकिन था कि हकीम साहब मुर्शद-कामिल से अपने मनसूबे को न कहते। मगर हमको यह पक्की तौर से मालूम हुआ है कि मुर्शद-कामिल की राय इस मामले में हकीम साहब के खिलाफ थी। मुर्शद-कामिल के वा एक गुर्गे छोटे नवाब की सरकार में लगे हुए थे और घड़ी घड़ी की खबर मुर्शद को पहुँचती रहती थी। मगर इस क़दर ख्याल सिर्फ तहकीकात या शौक की वजह से था वरना इस सरकार से मुर्शद को कुछ ज्यादा तआल्लुक न था। मगर खलीफ़ा जी को तआल्लुक था इसलिए गोया कि इन्हीं को तआल्लुक था। इसके हालात भी आपको मालूम हो जायेंगे। मगर अब हकीम साहब खुद ही अपनी पक्की राह रखते थे। लिहाज़ा मुर्शद की खास पैरवी इस काम में कुछ ज़रूरी न थी और न मुर्शद ही को कहीं अपने मन की करने से रोकने पर ज़िद थी। दिन में जो कुछ हो सके ऐसे मनके आदमी फाँसी पर भी मुँह से नहीं निकालते।

चार

इमामन महरी ने नबीबख्श के भाई मोहम्मद बख्श को ड्योढ़ी सरकार में नौकर रखवा लिया। नबीबख्श ड्योढ़ी पर आने जाने लगे। इमामन से रब्त जब्त बढ़ाने की फ़िक्र हुई। फुलवालियों की दुकान पर जा बैठने की ज़रूरत न रही थी मगर बात यह है कि मियाँ करीम खाँ कुछ ऐसे शुष्क मिज़ाज के आदमी थे कि नबीबख्श की चालाकी ने उन पर कोई असर न किया। उनकी आँखों से दूर रहने आने का इशारा ही नहीं टपकता था बल्कि साफ़ तौर से ऐसा ही मंशा उनका ज़ाहिर होता था। वह इस बात को हरगिज़ पसन्द न करते थे कि ड्योढ़ी पर ग़ैर आदमी दम भर भी ठहरे।

मियाँ करीम खाँ भी हुक्का पीते थे मगर मिज़ाज में एहतियात इस क़दर थी कि न किसी का हुक्का खुद पीते थे और न अपना हुक्का किसी को देते थे। प्यासे को पानी पिलाने का कष्ट उठाना धर्म का आदेश है मगर यह कष्ट उठाना वह ज़रूरी न समझते थे क्योंकि प्यासों के लिए सबीलें लगी हुई थीं। छोटे दर्जे के नये नौकरों से उनको कोई मतलब न था। न उनको किसी के पास जाने की ज़रूरत थी और न उनके पास कोई फटकता था। महल के नौकरों में अगर उनको किसी से मुनासिबत थी तो वह भी महलदार थीं। और किसी से ज़्यादा मेल जोल न था। महल की तमाम औरतों पर उनका रौब छाया हुआ था। लड़के उनसे डरते थे बल्कि उनका नाम लेकर डराये जाते थे। मियाँ नबीबख्श दो एक बार ड्योढ़ी पर गये और करीम खाँ साहब से बहुत कुछ खातिरदारी ज़ाहिर की मगर वह किसी तरह न पसीजे। हर बात का ऐसा दो-टूक जवाब देते थे कि अपना सा मुँह लेकर रह जाते थे। पहले रोज़ उन्होंने

भाई करीम खाँ कहकर उन्हें बुलाया मगर उन्होंने कुछ इस तेवर से उनकी तरफ घूर के देखा कि दुबारा भाई करीम खाँ कहने की हिम्मत न हुई।

खुलासा बात यों है कि एक कुलफीवाले के दुकान के सिवा और कोई जगह जमने की उन्हें नजर नहीं आई। मोहम्मद बख्श के नौकर हो जाने के बाद इमामन से इनका मामला खत्म हो चुका था मगर इनको तो इमामन से बहुत कुछ काम निकालना था इसलिये कुलफीवाले की दुकान पर दिन में दो एक बार इनको जाना जरूरी था। इमामन की उम्र अब ऐसी न थी कि उस पर कोई आशिक होता। जवानी को रुखसत हुए एक मुद्दत गुजर चुकी थी। मगर वे यह अभी तक हर बात में जवानी की कसम खाया करती थीं।

सुनते हैं यह किसी जमाने में बहुत कैमाल थी मगर अब इस औसाफ को दिखलाने का कोई मौका न रहा था। अफसोस! अगर भी इमामन का वह जमाना होता तो नबीबख्श को शायद अपना मतलब निकालने के लिए दिक्कत न उठानी पड़ती। फौरन आशिकों में नाम लिखवा लेते मगर अब बहुत कुछ भूमिका बाँधने की जरूरत थी। मतलब भी कठिन था। फौरन जबान से उसे कह डालना सहल काम न था। इमामन के हाव भाव से एक बात खास तौर से पहले दिन की बातचीत से ही नबीबख्श समझ गये थे यानी वह अपनापन जो उसने नौकर रखवाने पर एक महीने की तनख्वाह लेने पर जाहिर किया था। यह मालूम हो चुका था कि इमामन रुपये की तरफ से ऐसी बेपरवाह नहीं है। रही यह बात कि रुपया बटोरने का शौक किस हद तक है आया उसमें कायदा और नाजायज का ख्याल भी है या नहीं इमामन की जाहिरी वज्अ और पहनने ओढ़ने से इतना जरूर समझ पड़ता था कि चार रुपया महीना तुरन्त इससे वह ठाठ नहीं हो सकता। गुलबदन का लहँगा वासकट की गोट घुटनों से ऊपर इस्की तनजेब का दुपट्टा बादामी रंगा हुआ मैनू की कुर्ती हाथों में चाँदी के मोटे मोटे कड़े चाँदी की चूड़ियाँ उँगलियों में अँगूठियाँ कानों में चाँदी के पत्ते बालियाँ सोने की बिजलियाँ पाँव में मोटे मोटे कड़े छड़े पाँव की उँगलियों में छल्ले आपका लिबास और जेवर कुछ मामूली चीजों का सा न था। हर चीज

थीं। सूरत शाहिरी को देखकर मालूम पड़ता था कि सुराख भी आपकी टट्टू के पालन से कुछ कम न होगी। गोरी पानी जैसा मुँह स्याह चमकीली जिल्द शीशे की तरह छोटी छोटी सी आँखें उनमें काजल फँसा हुआ जैसा हुआ था। मोटे मोटे होंठ, हाथों में मेहदी लगी हुई। भर भर हाथ चूड़ियाँ। रोज शाम को दो पैसे के हारों का खर्च भी था इसलिए कि 'जान है तो जहान है' और इनकी अकेली जान होगी तो भी शायद जरूरत न थी। मियाँ ममदू भी इनके दम से जिये हुए थे। वह किसी कदर नाजुक मिजाज थे। रात को उन्हीं के साथ खाना खाती थीं। इधर भी बजे ऊपर उन्होंने एक रकाबी में कोई सेर भर की चपातियाँ दो तीन पराठे, प्याजी में सालन और उसके मसाला को कुछ सरकार के दस्तरख्वान से बचा बचाया मिला सफेद रूमाल में बाँध कर हाथ में लटका लिया। रास्ते में मियाँ हसनू से दो पैसे की फुलकियाँ ली। पाव पाव भर पैसे की शक्कर, पैसे की अफीम आने का तम्बाकू यह सब सामान लेकर कोठरियों पर पहुँची। मियाँ ममदू इन्तजार में बुर्रा तम्बोली की दुकान पर बैठे हुए हैं। मियाँ ममदू एक नौजवान बांके लोगों से आदमी कोई पच्चीस छब्बीस बरस की उम्र लुंगी बाँधे हुए, गुलाबी कुर्ता गले में पट्टों में तेल पड़ा हुआ हाथ में लठ पकड़े बैठे हुए हैं। इधर यह गई और इन्होंने देखा कि वह दुकान पर बैठे हैं यह वहीं ठिठकी। उन्होंने देख तो लिया मगर बेपरवाही से मुँह फेर कर बुर्रा से बातें करने लगे। यह नखरा किये बैठे हैं उठने ही नहीं दो चार मिनट यह ठहरी रहीं। आखिर कब तक करें। दुकान ही पर जा पहुँची 'ले अब चलते हो या नहीं।

ममदू 'चलते हैं। भूख के मारे दम निकल गया। अब आई हैं तो यह हुकूमत।

इमामन 'अभी नौ बजे हैं देर कहाँ हुई?

ममदू 'दस बज गये। इनके यहाँ अभी नौ ही बजे हैं।

मगर भूख बुरी बला है। ज्यादातर इंतजार इनका भी पसंद न था। झट से दुकान से उठकर साथ साथ हो लिये। यह कोई ऐसा राज न था कि मलीबख्श को इसकी खबर न हो जाती। दो ही तीन दिन के बाद मियाँ ममदू का ठेका

आपको मालूम हो गया। इत्तफ़ाक़ की बात यह थी कि असग़र सुबहान खाँ के अखाड़े पर कुश्ती लड़ते थे और यह भी किसी ज़माने में सुबहान खाँ के शागिर्द हुये थे। असग़र आपके पीरभाई ठहरे। मुलाक़ात तो न थी मगर जानते ज़रूर थे। इस मौक़े पर इस वजह से बेतकल्लुफ़ी बढ़ा लेना कुछ ऐसी बड़ी बात न थी।

असग़र का मकान बिजन बेग खाँ के कटरे में था और चौपटियों पर इनका उठना बैठना रहता था। दूसरे ही दिन मियाँ नबीबख्श ने इनका सुराग लगाकर मुलाक़ात कर ली। मियाँ असग़र का ढंग कहे देता था कि इनको रुपये की हर वक़्त ज़रूरत रहती थी। अलावा निजी खर्च के जिसका बहुत सा भार इमामन पर था जुआ एक ऐसी मद है कि उसमें राज के राज तक खप हो जाते हैं, इससे और भी रुपये की ज़रूरत रही आती थी। इमामन ने दुनिया देखी थी। वह अपने शौक़ के लिये एक मामूली रक़म से ज़्यादा खर्च नहीं कर सकती थी और फिर कुछ लिगोटी लाठी भी न थी। एक जवान लड़की ब्याही हुई, पाँच बरस की नवासी उसके खर्च की ज़िम्मेदारी भी इमामन के सर पर ही थी। इसके साथ एक तोता एक मुर्ग़ा तीन मुर्ग़ियाँ एक जोड़ा बत्तख का और सबसे बढ़कर अपना शौक़ीन जीवड़ा। मियाँ असग़र का जिस तरह भार इमामन उठाती थी उसी को यह ग़नीमत समझते थे। इमामन ने इनको एक हद पर रक्खा था कि यह उससे ज़्यादा तलब भी न कर सकते थे। जुए के लिये पहले ही क़समा-क़समी हो गई थी मगर यह छुपकर खेलते थे। फिर उसके लिये रुपये का जुटाना भी उन्हीं के ऊपर था। मियाँ नबीबख्श ने दो ही बातों में उनको हमवार कर लिया और उन्होंने काम कर देने का बंदोबस्त इमामन को बीच में डालकर अपने ज़िम्मे ले लिया था। हकीम साहब से सामना करा दिया गया। उन्होंने पहले ही दिन पाँच रुपये के हिसाब दिये और पाँच सौ रुपये कामयाबी होने पर मियाँ असग़र को देने कहे और यह भी कहा कि दौरान में ज़रूरत के माफ़िक़ काम चलाने के लिये और भी रुपये वक़्तन फ़वक़्तन दिये जाया करेंगे और यह इस तय हुई रक़म से न काटे जायेंगे। इन पाँच रुपयों में से सवा रुपया मियाँ नबीबख्श ने ले लिया। बाक़ी मियाँ असग़र ने

अपने हाथ में रक्खा। क़िस्मत साथ दे रही थी। उस दिन जुए में भी यह अच्छे रहे। पौने चार से दस हो गये।

अब क्या था मियाँ अमजद इस दिन अमीर थे। आज उन्होंने इमामन के लिए दस आने की तीन गज़ छींट और बारह आने की सेव गज़ वाली मौस ली। रात का रोज़ की तरह की इमामन बिजन बेग खाँ के कटरे में मियाँ अमजद के घर एक टूटे से कोठरे में अलबेला चारपाई पर बैठी है। चारपाई के पाँयते की तरफ़ मियाँ अमजद बैठे हुए हैं। दोनों सर जोड़े खाना खा रहे हैं। चारपाई पर एक कपड़ा नया ख़रीदा हुआ रक्खा है।

इमामन (ज़रा गुस्से करके) 'यह रुपया तुम्हें कहाँ से मिला ?'

अमजद (बड़े अकड़ से) 'कहीं से मिला।

इमामन 'मिलता कहाँ से जुआ खेले होंगे। मैं बाज़ आई इस कपड़े से। देखो फिर तुम जुए में जाने लगे।

अमजद 'तुम्हारे सर की क़सम यह रुपया जुए का माल नहीं है। अभी तुम से क्या कहें एक रक़म हाथ आई है। जो तुम चाहो तो बहुत कुछ मिल सकता है।

इमामन 'मैं क्या चाहूँ मुझसे न होगा।

यह समझी कहीं चोरी करवाने को तो नहीं कहता है।

अमजद 'कितनी बेगुरी हो। अभी सुना नहीं और पहले ही से नहीं कर दी।

इमामन 'अच्छा कहो।

अमजद अच्छा जो हम कहें वह करोगी।

इमामन 'जो मेरे करने का काम होगा वह करूँगी।

अमजद 'हाँ हाँ तुम्हारे करने का काम है।

इमामन 'तो कहो तो सही।

अमजद 'क़सम खाओ।

इमामन 'पहले मैं सुन लूँ तो क़सम खाऊँ।

अमजद 'नहीं कोई ऐसी बुरी बात नहीं है।

इमामन : अच्छा तो फिर कहते क्यों नहीं।

खुलासा यह है कि थोड़ी सी बातें बनाने के बाद मियाँ अमजद ने अपना मतलब इमामन से कहा। बात के कई पहलू निकले। आखिर उस पहलू पर दोनों राजी हो गये जिसमें उन्हीं दोनों का बराबर फ़ायदा था।

पाँच

यह हसरत की चितवन से है आशकार
किसी आने वाले का है इंतज़ार।
आने वाले की मदारात का बेहद है ख़याल
किये जाते हैं हमी अर्ज़ की हालत क्या है।
किये बैठा है मजे आपका बेशिकवे ग़ैर
बेतकल्लुफ़ यहीं आ बैठिये आगोश समेत।

रात के नौ बजे होंगे। हकीम साहब के मकान पर तखलिये की सोहबत है। सामने गाव पे लगे खुद बदौलत बैठे हैं। उनके करीब मसनद से मिली हुई सी इमामन तशरीफ़ रखती हैं। कुछ फ़ासले पर सामने मियाँ अमजद और नबीबख्श मुनकिर नकीर की तरह हाज़िर हैं।

हकीम साहब : अच्छा बुआ इमामन तुम्हारी कार्रवाई भी देखता हूँ।

इमामन : मेरी कारगुज़ारी क्या और मैं क्या? बेगम साहिबा का क़ाबू में आना कुछ आसान बात तो है नहीं मगर जहाँ तक हो सकेगा कोशिश करूँगी। आइन्दा आपकी तक़दीर है। मगर एक बात मैं कह दूँ कि बेगम हैं तो अमीर

आदमी मगर रुपये की बड़ी मासकी है। पहले जरा खर्चा पोहेगा फिर तो पाँचो माम आपके हैं।

हकीम साहब : 'मगर निकाह हो जाय।

इमामन 'हाँ मियाँ यह तो मैं आप ही कहने वाली थी। अभी तो मैं हामी नहीं भरती हूँ। उनका इंदिया से लूँ तो जवाब दूँ। म र पहले कुछ रुसम का खर्च है।

हकीम साहब (खर्च के नाम पर जरा रुककर) 'पहले रुपया खर्च हो गया और जो निकाह न हुआ।

महरी ऐ लो आप तो पहले ही नहीं किये देते हैं।

हकीम साहब 'तो फिर पक्की हो।

महरी मेरे पक्के होने से क्या काम चलेगा। क्या मेरे साथ निकाह होगा।

हकीम साहब (हँसके) : 'क्या मुजायका है।

इमामन (अमजद की तरफ देखकर) 'क्यों ?

अमजद ने मुस्कुरा कर सर नीचा कर लिया बोले : 'फिर क्या हर्ज है ?

हकीम साहब 'अच्छा तो पहले क्या खर्च होगा ?

महरी : 'यह मैं नहीं कह सकती जितना खर्च पड़ जाय।

हकीम साहब आखिर उसकी कुछ इन्तहा भी तो हो।

महरी : 'अब मैं क्या इन्तहा बताऊँ।

अमजद 'यही कोई दो सौ का खर्च है। फिर तो आपके कब्जे में आ जायँगी। फिर चाहे कौड़ी न खर्च कीजिए।

नसीबउल्ला : 'फिर खर्च क्या करेंगे। उनकी जान माल के तो आप मालिक हो जायेंगे

इमामन : 'अल्लाह मैं सब कदरत है।

हकीम साहब : 'यह तो यह तो तुमने फिर कच्ची बात कही।

इमामन 'हुजूर कैसी-कैसी बातें करते हैं। दूसरे के दिल मैं दिल डालना कुछ सहज है। मौका पाकर कुछ कहूँगी।

हकीम साहब : 'क्या कहोगी ?'

इमामन : 'जो वक्त पर बन पड़ेगा ।

नबीबख्श : 'हुजूर इसमें आप कुछ दखल न दीजिए । यह औरतों की बातें हैं । औरतें ही इसे खूब जानती हैं । आपको अपने मतलब से मतलब है ।

अमजद : 'हुजूर इनको आप क्या समझते हैं ? आफ़त की पुड़िया है । अभी यह मुँह से कुछ नहीं, मगर देखियेगा ।

इमामन 'अल्लाह के हाथ है । खुदा चाहे तो बेगम को मोम कर दूँ ।

नबीबख्श 'यह तो मैं जानता हूँ । तुमको कुछ समझाना पड़ता है ?

हकीम साहब : 'अच्छा तो कब जवाब दोगी ।

इमामन 'आज कौन दिन है ।

नबीबख्श 'पीर का दिन है ।

इमामन : अच्छा तो आज तो नहीं ।

हकीम साहब : 'कल सही ।

इमामन 'कल तो मेरी प्यारी की सालगिरह है । मुझे फुरसत न होगी । मंगल बुध जुमेरात जुम्मा जुमे को जवाब दूँगी ।

हकीम साहब : 'यों तो इतने दिन ।

इमामन : 'हाँ मियाँ । क्या कोई मुँह का निवाला है ।

अमजद : हुजूर हाँ देर आयद दुरुस्त आयद ।

नबीबख्श क्या मुजायका है ।

हकीम साहब : 'बहतर, तो जुमे को किस वक्त आओगी ।

महरी : 'जब काम से फ़रागत मिलेगी ।

हकीम साहब किसी वक्त का नाम लो ।

इमामन 'ए मियाँ मैं क्यों कर कह सकती हूँ ।

अमजद : 'बस हुजूर यही वक्त समझिये । मैं इनको ले आऊँगा ।'

नबीबख्श इस लहजे से जैसे कोई सिफारिश करता हो कि कुछ दे दीजिये बोले 'हुजूर अब इनको मुजरिम समझिये । इनकी नकेल तो इनके हाथ में है ।

बाकी बातें हो चुकी थीं । रुखसत का वक्त था । हकीम साहब के कोरे

इसके बाद शाह साहब ने कहा, 'अच्छा तो आप तशरीफ़ ले जाइये। मेरे वज़ीफ़ा पढ़ने का वक्त है। कल इसी वक्त फिर आइयेगा।'

उन्नीस

नौ बजे के बाद नवाब साहब शाह जी से रुख़सत होकर गाड़ी में सवार हुए। कुछ देर तक दोनों चुप रहे। नवाब अचम्भे में डूबे हुए थे। बात क्या करते। आख़िर खलीफ़ा जी ने ख़ामोशी तोड़ी।

खलीफ़ा: 'हुज़ूर, यह तो अजीब मामले हैं जो शाह जी ने बतलाये हैं। मेरी तो समझ में नहीं आते। इतना जानता हूँ कि पहुँचे हुए लोगों में हैं, मगर...'

नवाब: 'परसों रात को पानी तो मैंने जाकर मँगाया था। इतना याद है और ग़ज़ब क्या है कि बीबी मक़सूद ने बरफ़ का पानी दिया हो। उसके बाद मैं सो रहा। जब मेरी आँख खुली है, मुझे ख़ूब याद है कि तुरफ़ैन पहलू में न थी। मगर नींद का ख़ुमार मेरी आँखों में था। फ़ौरन फिर ग़ाफ़िल होकर सो रहा। सुबह को सात बजे आँख खुली। तुरफ़ैन पहलू में सो रही थी। मैंने प्यार बरस से हुक्का लगाया। यह सब वाक़यात मुझको याद हैं।'

खलीफ़ा: 'अच्छा तो अब घर पर चल के बीबी मक़सूद से दरयाफ़्त किया जाय। ख़ैर, यह मामले तो घर पर चलकर तय हो जायेंगे, लेकिन नवाब अगर यह वाक़या सच्चा है, तो बड़े मुल्क जाएँगे। परिस्तान की सैरें होंगी। परियों का नाच देखेंगे। जो बातें क़िस्से कहानियों में सुनते हैं, आपकी बदौलत आँखों

हैं देख लेंगे। मगर इसी वक्त वायदा कर लीजिए कि हमें भी वहाँ ले चलियेगा या नहीं।

नवाब अभी तक सोच विचार में पड़े हैं। एलफ्रेड कंपनी में गुल बकावली का तमाशा कई बार देखा था उसी का समाँ आँखों में फिर रहा है। बादे अरम का नवाब बनजाने का मनसूबा बार-बार दिल में आता है। पन्ने का महल और उसकी सजावट का दिल में ख़ाका खिंचता है, मगर अभी तक यह नक्शे अच्छी तरह नहीं जमते हैं। इसलिये कि कुछ शक है कुछ यक़ीन। मगर उम्मीद यक़ीन ही का पहलू दबाए हुए है। नाकामयाबियों के ख़याल दिमाग़ से बाहर निकले जाते हैं। सब्ज़-परी को एक टूटे झोंपड़े में देखा था। उसी पर दिल लोट गया। अब उसकी तसवीर का ख़याल पन्ने के महल में और ही जोबन दिखा रहा है। और यह ख़याल कि वह हम पर मर रही है एक अजीब उमंग दिल में पैदा कर रहा है। इस वक्त नवाब साहब अपने जोश में ताज उस मलूक से कुछ कम नहीं। मगर अभी तक यह बातें दिल ही दिल में हैं। कमबख़्त यह बुज़दिली मुँह से नहीं निकलने देती। फिर अमीरन बी के टहोके और भी सितम कर रहे हैं। आख़िर इतना ज़बान से निकल ही गया 'सरकार मगर ऐसा हो तो मैं ज़रूर आपको ले चलूँगा। मगर अभी तो कुछ समझ में नहीं आता।

अमीरन 'हाँ समझ में तो मेरे भी नहीं आता मगर करामत अली शाह साहब एक बेलालच आदमी हैं। एक से हज़ार तक नहीं लेते। फिर उनको बेकार बातें बनाने से क्या मतलब।

नवाब : 'हाँ आदमी तो बेपरवाह मालूम होते हैं।

अमीरन 'ए हुज़ूर यह तो शहर भर जानता है कि बारह बरस इसी जगह पर बैठे हो गये। शहर के अमीर रईस और महाजन सभी तो आते हैं। किसी दिन सुबह को जाकर देखिए। अच्छा ख़ासा दरबार होता है, मगर आज तक किसी से एक पैसे का भी सवाल नहीं किया। लोगों से यह भी सुनने में आया है कि कीमिया बनाते हैं। इसका हाल इस तरह सुना कि पहले हर जुमेरात को यह दस्तूर था कि मोहताजों को चाँदी सोने की डलियाँ बाँटा करते थे। और इस भेद के छुपाने की बहुत तदबीर की। जब से लोगों ने मशहूर कर दिया

औरात बन्द हो गई। मगर अब भी चक्कर देते होंगे। कोई और तरीका निकाला होगा। इतना सुना है कि नौ बजे के बाद रात को निकल जाया करते हैं। बारह बजे तक शहर की गश्त करते हैं और ठीक बारह बजे दरिया में नहाते हैं। उस वक़्त से सुबह तक खुदा की इबादत में लगे रहते हैं।

नवाब 'और सोते कब हैं ?

ख़लीफ़ा 'चालीस बरस हो गये रात को नहीं सोते। सुबह को सूरज के निकलने के बाद नमाज़ पढ़के ज़रा के ज़रा सो जाते हैं।

नवाब 'चालीस बरस हुए नहीं सोये ?

ख़लीफ़ा 'सोते तो यह कमाल क्यों कर हासिल होता ? जिन या भूत प्रेत को क़ाबू में करना तो उनके लिये खेल है। आपके शहर में यह एक शख़्स है। एक ही कामिल है। बल्कि दूर दूर इनके मुक़ाबले नहीं है।

नवाब : 'भला कोई कुछ हासिल किया चाहे तो बतायेंगे भी

ख़लीफ़ा बतायेंगे मगर उसी को जिसकी क़िस्मत में होगा।

नवाब 'भला यह क्योंकर मालूम हो कि क़िस्मत में है या नहीं ? क़िस्मत का हाल सिवाय ख़ुदा के कौन जानता है ?

ख़लीफ़ा : 'यह सच है। मगर इन लोगों को अपने इल्म के ज़रिए से मालूम हो जाता है। जिसकी तक़दीर में न होगा वह अगर सर भी पटक मारे तो कभी न बतायेंगे और जिसकी तक़दीर में होगा उसे ख़ुद ढूँढ़ते फिरेंगे। मिन्नतें करके बतायेंगे।

नवाब 'वल्लाह मेरा भी चाहता है इनसे कुछ हासिल करूँ।

ख़लीफ़ा 'हम दुनियादारों से यह काम नहीं हो सकते। आप से गोश्त खाना छोड़ना मुमकिन नहीं। इसके अलावा और परहेज़ इस क़दर सख़्त हैं कि हम से आप से निभ नहीं सकते।

नवाब 'अगर वह बताने को कहें तो, तो मैं सब छोड़ सकता हूँ। बात ही आदमी दिल पर रख ले तो सब कुछ कर सकता है।

ख़लीफ़ा बजा है। अच्छा तो अगर आपकी तक़दीर में है तो शाह साहब ख़ुद ही आप से कहेंगे। आप अभी अपने मुँह से कुछ भी न कहियेगा। मगर

आपकी तकदीर में होगा तो वह आप ही मिलेंगे।

नवाब : 'हाँ यह आपने खूब बताया। मगर तकदीर में होगा तो आप ही खुद बतायेंगे।

खलीफा : 'हुक्म पहुँचेगा।

नवाब : 'यह मैं नहीं समझा।

खलीफा : 'तसख़ीर, तस्वीर या जादू टोना कुदरत के भेद हैं। अगले वक्तों से सीने बसीने चले आते हैं। जिसकी तकदीर में होता है, कामिल उस्ताद उसे तलाश करके बता देता है।

नवाब : 'उस्ताद कामिल उसे क्योंकर पहचान लेता है।

खलीफा : 'उसकी सूरत देखकर, रमल फेंककर या ज्योतिष से। आपने अलाउद्दीन का तमाशा थियेटर में देखा है। मुल्क अफ़रीका को ख्याल कीजिये और चीन को। हजारों कोस का फासला है। वहीं से उसने जन्म-पत्र देख के दरयाफ्त किया कि वह चिराग मुस्तफा दर्जी के हाथों दफीने से निकल सकता है। दफीना जादूगर को खुद ही मालूम था। मगर उसके निकाले निकलता तो खुद ही क्यों न निकाल लेता।

नवाब : 'दुरुस्त है और फिर देखिये कि वह चिराग अलाउद्दीन के पास रहा। जादूगर को न मिला।

खलीफा : 'और उसके साथ छल्ला भी अलाउद्दीन को मिला।

नवाब : 'छल्ला और चिराग दोनों मियाँ अलाउद्दीन के हाथ आए। चीन के बादशाह की लड़की से शादी हुई। जिन्दगी भर चैन किया। जादूगर को क्या मिला। मुफ्त जान भी खोई। इतना बखेड़ा नाहक उठाया। पहले ही जन्म-पत्र में देख लेना था कि वह चिराग और छल्ला जिसकी तकदीर में है। उसी की तावेदारी करना थी।

खलीफा : 'इसमें क्या शक है और इसमें एक और भेद भी है। पहुँचे हुए लोगों की यह शान है कि बेपरवाह हों। जादूगर के लोभ ने उसकी जान ली। तसख़ीर और तस्वीर या जादू से जाती फ़ायदा उठाना नहीं है। ऐसा करने से इन चीजों की तासीर जाती रहती है।

नवाब : 'यह भी सही है। तो फिर इन चीज़ों से मज़ा ही क्या ?'

खलीफा : 'दिल बड़ा फ़राख़ हो जाता है। किसी चीज़ की ज़रूरत ख़ुद ही नहीं रहती। सात अक़्लीम की बादशाहत हो तो ख़ाक है।'

नवाब 'अच्छा ख़ुद न सही। दूसरों को तो नफ़ा पहुँचा सकते हैं। ख़ुदा की राह में ख़र्च करें। आप खाया न खाया। हज़ारों रुपये रोज़ का पकवान पकवा कर मोहताजों को बाँटा करूँ। सैकड़ों आदमियों को हज और तीर्थ यात्रा के लिए रवाना करूँ। मोहताज बेवा औरतों की माहवार तनख़्वाह मुक़र्रर करूँ बिन ब्याही लड़कियों की शादियाँ कराऊँ। एक आलीशान मसजिद बनवाऊँ—जामा मसजिद से बड़ी और उसी के पास एक इमामबाड़ा—हुसेनाबाद से बढ़कर।

खलीफा 'नवाब अगर आपकी नीयत ऐसी है तो आप ज़रूर अकसीर पा जायेंगे।

इन बातों में गाड़ी मकान के पास पहुँच गई। नवाब और खलीफा जी उतरे। रात के दस बजे थे। मामूली शगलों के बाद दस्तरख़्वान बिछा। खाते ही आराम किया। खलीफा जी अपने घर चले आये।

बीस

दूसरे दिन सुबह को ही उस रात के वाक़यात की तहक़ीक़ात शुरू हुई। नौकरों के इज़हार होने लगे।

धोबी मक़बूल 'नवाब आपके नमक की क़सम उस दिन रात को तो मैं

सात बजे से आप से छुट्टी लेकर घर चला गया था। रात भर मुहल्ले के यहाँ रहा। उसकी एक बरात थी। जिस वक्त मैंने हुजूर से छुट्टी ली है खलीफा जी भी तो बैठे थे।

मजार बख्श 'हुजूर ने उस दिन रात को पानी तलब ही नहीं किया। (खलीफा जी की तरफ इशारा करके) आप जानते हैं रात भर जागता हूँ। जिस वक्त जी चाहे पुकारिये। एक आवाज में मेरी आँख खुल जाती है।

मुरशीद (मामूली नवाब की नौकर) 'खलीफा जी होश की दवा करो। बात का बतंगड़ न बनाओ। नवाब ने रात भर नहीं आराम किया। उस रात मेरे सर में दर्द था। मैं खुद रात भर जागा की। न मिला पानी, न पलँगड़ी ही परिस्तान गई। यह सब किस्से कहानियों की बात है। किन खुराफों में पड़े हो।

खलीफा : 'आह तुम क्या जानो ? हाँ तुमको ऐसा ही मालूम हुआ होगा। शाह साहब कभी गलत न कहेंगे।

मुरशीद : 'यह कौन शाह साहब जम्बू के पट्ठे हैं ?'

खलीफा 'बे बस बस। जबान सँभाल के बातें करो। और जो जी चाहे मजाक करो शाह साहब के लिए कुछ न कहना।'

नवाब (नाराज होकर) 'यह क्या बेहूदगी है। एक पहुँचे हुए आदमी को बेअदबाना गालियाँ देना। मुरशीद यह बातें तुम्हारी हमको पसन्द नहीं।

मुरशीद 'बहुत से ऐसे मुल्ला सयाने देखे हैं। सिवाय फरेब के और कोई बात नहीं।

खलीफा 'सच है। जैसा आदमी होता है, उसको सब वैसे ही मालूम होते हैं।

नवाब 'वल्लाह, सच कहा।

मुरशीद (खिसियानी होकर) तो हम फरेबी हैं ?

खलीफा 'इसमें शक क्या है।

मुरशीद 'और तुम ?

खलीफा 'तुम ऐसों को भी बाजार में बेच लें।

सुरैया 'इसमें शक क्या है। ज़बान से सच ही निकला।

खलीफ़ा फ़रेब न देते तो तुम यहाँ क्योंकर बैठी होतीं।

सुरैया 'यह मैं अपने मुँह से नहीं कह सकती क्योंकि आप शरीफ़ आदमी हैं। मैं समझती थी कि दिल में शुक्रिया अदा करना काफ़ी है। अब आपने खुद ही इज़हार कर दिया। बेशक मैं आपकी अहसानमंद हूँ।

खलीफ़ा 'अब आप यों आईं। अच्छा मज़ाक हो चुका। मेहरबानी करके किसी को बुरा भला न कहा कीजिए। उसके फ़रिश्ते सुनते हैं। इससे सरकार का नुकसान है।

सुरैया 'नुकसान हो सरकार के दुश्मनों का। बुरा भला कहने से मुझे क्या फ़ायदा है? मैंने तो दुनिया की एक बात कही। अक्सर मशहूर इस्माईल कीमियागर, फ़कीर, जोगी जोगी रमे हुए खिलाड़ होते हैं। श्री नज़ीर को कीमिया का बड़ा शौक था। एक कामिल महीने भर तक मकान पर ठहरे रहे। पराठे कोरमे बालाइयाँ खाते रहे। लौंडियों से लौंडियों की तरह खिदमतें लीं। आखिर एक कड़े की जोड़ी लेकर चलते हुए। अब शायद परियों के पहाड़ की सैर कर रहे होंगे। वहाँ अक्सीर की बूटी ढूंढकर लायेंगे और श्री नज़ीर का मकान सोने का बना देंगे।

खलीफ़ा : 'श्री नज़ीर हमेशा की उस्ताद हैं। उनका नाम यों ही लोग लाते हैं। हराम के माल का मामला है। हम तो खुद दुनिया भर के सयाने हैं। ऐसे फ़कीरों को खूब पहचान लेते हैं। हम को क्या कोई धुल देगा।

सुरैया : 'नज़ीर को तुम बेवकूफ़ कहो। मेरी समझ में तो वह ऐसा नहीं। अपनी भलाई बुराई खूब समझती हैं। मगर शाह साहब ने कुछ तो ऐसा करिश्मा दिखाया था कि धूल में आ गईं।

खलीफ़ा : 'चकमा क्या खाया था? मैं बताऊँ। फ़कीर ने सोना उनके हाथ से बनवा दिया था। चकमा खा गईं।

नवाब (ज़रा चौंक कर) 'हाथ से बनवा दिया।

खलीफ़ा : 'जी हाँ। यह तो इन मक्कारों के बायें हाथ का खेल है। चिड़िया में पैसा रख के नाल में रखा। फूँककर देते वक्त आँख बचाकर निकाल

लिया। तोला भर सोना बढ़िया में रख दिया। चक्कर देकर निकाल लिया। देखने वाला जानता है सोना बन गया।

नवाब 'मगर किसी ने देखा नहीं।

खलीफ़ा 'ए हुज़ूर, यह तो एक तरह की नज़र-बंदी है। यह मदारी जो तमाशा करते फिरते हैं, उसमें बैठ में रख देते हैं। खबर नहीं होती।

नवाब 'हाँ यह तमाशा मैंने खूब देखा। मामूजान के मकान पर खूब मेरी बैठ से चवन्नी निकली।

खलीफ़ा 'बस यही समझ लीजिये। मगर यह तमाशे वह लोग करते हैं, जिनको कुछ लेना होता है।

नवाब 'क्या बात कही है। सच्चे फ़कीर की पहचान यही है कि किसी से वास्ता न रक्खे।

सुरधर 'मगर ऐसे पहुँचे हुए किसी से मिलते कब हैं ?'

खलीफ़ा 'मिलते क्यों नहीं ? जिसको कुछ उनसे मिलना होता है उससे मिलते हैं।

सुरधर 'जी हाँ तो आपको कोई मुरब्बत मिल गये होंगे।

नवाब : 'उनको तो नहीं हम मिले हैं।

सुरधर (नौर से नवाब सूरत देखकर, और जरा मुस्कुरा कर) 'दुरुस्त।

नवाब (नाराज़ होकर) : अब मुझ से भी तुम मज़ाक करने लगे।

सुरधर : 'मेरी क्या मजाल। मगर नवाब चाहे मार डालो मुझे यकीन नहीं। मैं फ़कीरों की नामल नहीं। देख लीजियेगा इसमें कुछ न कुछ फ़रेब ज़रूर है।

खलीफ़ा : 'लाहौल क्या कुव्वत ! शाह साहब ऐसे नहीं हैं।

नवाब 'खुदा माफ करे। करामत अली शाह साहब की तरफ से तो मैं खुद कसम खाता हूँ कि वह फ़रेबी नहीं हैं।

सुरधर करामत अली शाह का नाम सुन कर सन्नाटे में आ गई। खलीफ़ा ने नवाब की तरफ़ एक जरा नाराज़ होकर देखा। मतलब यह था कि नाम क्यों बता दिया। नवाब खुद शर्मिंदा होकर इधर उधर देखने लगे। बातचीत

का सिलसिला खतम हो गया।

आज के दिन और कोई वाकया ऐसा न हुआ जो लिखने के लायक हो। सिर्फ एक बात याद रखने लायक है कि खलीफा जी दिन भर नवाब साहब के घर पर रहे। एक दम के लिए भी जुदा न हुए।

इक्कीस

आज शाम को वायदे के मुताबिक करामत अली शाह साहब से मुलाकात हुई। शाह साहब बहुत ही नाराज दिखलाई पड़े। नवाब साहब को देखते ही बोले 'आखिर आपके मिजाज से बचपन अभी तक नहीं गया। यह जादू की बातें हैं। इनको मजाक न समझियेगा। अभी सवेरा है कहिये तो किसी न किसी तरह रोक दूं। मैं और आमिलों की तरह मुझे पसंद नहीं। किसी को बेगुनाह सजा देना या कैद करना मैं हरगिज गवारा नहीं करता। आखिर जिन भी तो खुदा के बनाये हुए हैं। अलावे इस चीज से शुरू से आज तक मैंने जिन कौम में से किसी को तकलीफ नहीं दी क्योंकि आमिलों का अंजाम बुरा होता है। माशूक को आशिक से जुदा करना मेरी राय में बड़ा गुनाह है। लेकिन आपके बुजुर्गों से साहब सलामत थी। सब्ज-परी को किसी तरह रोक ही दूंगा या उसके माँ बाप से खबर कर दूंगा वह मना करेंगे। आपको बाजारी औरत का शौक काफी है। वाह नवाब साहब मैं आपको ऐसा न समझता था। और अभी सवेरा है मुझे इस बुढ़ापे में झंझट में न डालिये।'

नवाब साहब को नाराजगी की वजह थोड़े ही लफ्जों के बाद मालूम हो गई। मेरा बोलना एक ऐसा जुर्म है जिसकी माफी मुश्किल से हो सकती है। सब्ज-कबा को रोक देना शाह साहब ने तो मुँह से कह दिया बड़ी दिल पर क्या बात क्या गुजर गई। बाग-ए-आलम और पन्ने के महल का ख़याली नक्शा और उसकी सुनहरी सजावट में सब्ज-कबा का जलवा आँखों के सामने नाच रहा था। दिल ही में कह रहे हैं भला यह क्योंकर हो सकता है कि सब्ज-कबा रोक दी जाय या उसके माँ बाप को खबर दी जाय। हाय ! सब्ज-कबा पर नाराजगी पड़ेगी। मेरी चाहने वाली को सदमा पहुँचे यह मुझे क्योंकर गवारा हो सकता है।

मगर हाल यह है कि मुँह से बात नहीं निकल सकती। बड़े नाज-नखरों में परवरिश पाई। हमेशा आस पास खुशामदियों का जमाव रहा। जो बात की बुरी या भली सिवाय तारीफ़ के किसी ने फटे से मुँह तक नहीं कहा। मौलवी साहब जिनसे कभी पढ़ते थे मियाँ-मियाँ कहते उनका मुँह खुश्क होता था। कानों ने कभी इस तरह की बातें न सुनी थी जो शाह साहब की जबान से सुनी। दूसरे इस मामले में इश्क की पुट लगी हुई थी। सब्ज-कबा की झलक देख भी चुके थे। बखुदा चाहने के काबिल है। दिल पहले ही से नरम था। दूसरे मेरा का कुल जाना बावजूद खलीफ़ा जी के समझाने के खुमार की हालत में हो गया था। उसकी वजह से अपना दिल खुद ही बेकरार रहा था। एक दम आँसू जारी हो गये शाह साहब का दिल पत्थर का न था जो एक कम-उम्र साहब-जादे को रोते देख कर न पसीजता। खलीफ़ा जी या हमदर्द मुसाहब पास था। उनके इशारे और सिफ़ारिश शाह साहब से भोले नवाब की सिफारिश कर रही थीं। खुलासा बात यह कि शाह साहब बोले 'हा बाबा जाम रोते हो।

इस बात से आँसू और भी बहने लगे। गरम आँसुओं की बूँदे साँवले गालों पर बह कर दामन पर टपकने लगीं।

खलीफ़ा (नवाब) 'हुजूर रोइये नहीं। शाह साहब ने सिर्फ़ नसीहत की राह से कहा था। शाह साहब खुदा के लिए हमारे नवाब को न रुलवाइये।

शाह साहब (रूमाल हाथ में लेकर) 'ना बेटा तुम्हारा रंज मुझे नागवार है। तुम्हें मेरे सर की क़सम न रोओ। अच्छा मैं तो किसी न किसी तरह बात बना लूं गा।

इसी बीच मे अचानक शाह साहब के ऑगन के पिछवाड़े से एक धमाके की आवाज आई इस तरह कि सब चौंक पड़े।

शाह साहब (नवाब साहब से) 'बस अब रोइये धोइये नहीं। आप नवाब को सँभालिये। अम्मा-अब्बा ने किसी को भेजा है। मैं जाता हूँ। देखूँ क्या पैगाम आया है।

यह कह कर शाह साहब उठ गये।

नवाब साहब ने जल्द जल्द आँसू पोंछे। सँभलकर बैठ गये।

खलीफा जी : 'देखा आपने उस दिन की बातें सब शाह साहब को मालूम हो गईं। सारा कसूर उस कमबख्त बाजारी रंडी का है। मुफ्त मे नाराजगी दिखाई। नवाब इस वक्त का आपका रोना मेरे दिल से पूछिये। वल्लाह! आपकी आँखों से जितने आँसू गिरे, उतनी ही लहू की बूँदें मेरे कलेजे से टपकी होंगी। अच्छा वो चुड़ैल जाती कहाँ हो? इसका बदला तुमसे न ले लिया तो कोई बात नहीं। जो साहब हमने तो कहा था और, सरकार की बदौलत पचास रुपये माहवार इनको मिलते हैं मिलें। हमारा क्या नुकसान है? मगर वह तो घर पर चढ़ने लगी। बेहतर है। अब उनका रहना ठीक नहीं। एक तो शाह साहब दूसरे अम्मा-अब्बा के खिलाफ होगा। इसके अलावा और भी एक बात है जो हमने आँख से देखी है मगर मुँह से नहीं निकाली। खयाल यह था कि हमारी सरकार को उसकी तरफ किसी क़दर रगबत थी। काहे को ऐसी बात कहें जिससे दुश्मनों को किसी तरह का मलाल पहुँचे।

नवाब अभी तक बिलकुल चुप बैठे थे। खलीफा जी की बातें लाजवाब थीं। पहले तो कई बातों को सिर्फ रंज और शैरतमन्दी की वजह से जोश में जबान से निकल गई थीं उनका तो कुछ जवाब हो ही नहीं सकता। आखिर का फिक़रा जरा चुभता हुआ था। अगरचे नवाब का पूरा ध्यान उस वक्त अम्मा-अब्बा और उसके गुस्से की तरफ था जिसकी आमद की खबर उस धमाके की आवाज मे थी

की लेकिन रस्क बुरी बला है। खलीफ़ा जी का आखिरी फ़िकरा उसी की तरफ़ इशारा करता था। लिहाज़ा इसी हालत में नवाब के दिल में एक घुमस सी पैदा हो गई।

नवाब 'यह क्या बात ?

खलीफ़ा : 'जी कुछ नहीं। यह आपसे कहने की बात नहीं है। अब इन खयालों को जाने दीजिये। बाज़ारी औरतों का यकीन ही क्या ? मगर यहाँ इन बातों का मौका नहीं है।

नवाब चुप तो हो रहे इसलिये कि यहाँ सचमुच इन बातों का मौका न था। मगर दिल में रश्क ने एक गहरा नश्तर चुभो दिया था जिससे गोया खून बह रहा था। अगरचे बाहिर में यहाँ इन बातों का मौका न था मगर खलीफ़ा जी ने जिस मंशा से इस बात को छेड़ा था उस पर नज़र करने से मालूम होगा कि यही वक्त और यही जगह इन बातों के लिये ज़रूरी थे। इसकी तो पहले ही कसमा-कसमी हो गई थी कि जो बातें शाह साहब के मकान पर हों चाहे वह किसी किस्म की क्या न हों उनको दूसरी जगह मुँह से न निकाला जाय। इसलिये इस मौके पर यह दो तीन फ़िकरे कान में डाल दिये गये। ताकि कानों में होकर दिल में जाएँ और अपना ज़हर खून में फैलाते रहें जिससे आइन्दा कभी इसका खराब असर बाहिर हो। इसके बाद खलीफ़ा जी कुछ देर चुप रहे, गोया नवाब साहब के साथ सब्र-कज़ा के पैग़ाम का इन्तज़ार कर रहे हैं। शाह साहब को गये हुए करीब आधे घन्टे के हुआ। आखिर कोई कहाँ तक चुपका बैठा रहे।

नवाब (चुपके से) : 'शाह साहब को बड़ी देर लगी।

खलीफ़ा 'जी हाँ मामला भी तो पेचीदा है।

नवाब : क्या ?

खलीफ़ा 'आपको नहीं मालूम। जिन्नों की मेद खुल जाने से बड़ी दिक़ होती है और यह सौतापे का मामला शुरु होता है। कहीं आपने कुछ और हाल तो हुरदैन से नहीं कह दिया। शायद नशे में कुछ ज़बान से निकल गया हो।

नवाब (चौंककर) 'मैंने उस दिन की बातों के सिवा और कुछ भी हुरदैन

चीख मार के दम से गिर पड़ी । बालिर उनकी आवाज सुनके दौड़े गये । झोपड़ी तो वहाँ रक्खी हुई थी । उन्होंने देखी । आदमी से उठवा कर फिकवा दी । मुझ पर बहुत खफा हुए । वह घर ही से निकाले देते थे । आखिर जब मुझसे अपने सर की कसम ले ली मजबूर होकर छोड़ना पड़ा । सारी मेहनत बरबाद हो गई ।

नवाब : तो यह कहिये । आप भी धुन स्वतम हैं ।

खलीफा 'भी कुछ भी नहीं । तीन बरस मुफ्त खाक छानी । महीनों तो आधी रात को मरघट पर गया हूँ ।

नवाब : 'और आपको डर नहीं लगता था ? आधी रात के वक्त मरघट जाना । वल्लाह कमाल किया । मुझसे तो हो न सकता

खलीफा : 'आप ही का कौल है कि आदमी दिल पर रख ले तो सब कुछ कर सकता है ।

नवाब यह सच है मगर वल्लाह रोंगटे खड़े हो जाते हैं । वहाँ भूत-प्रेत सब मिलते होंगे ।

खलीफा 'मिलते क्यों नहीं वहाँ अच्छी खासी भूतों की पंचायत सी होती है । कोई बैठा चिलम उड़ा रहा है, कोई नक्की न ना रहा है कोई मुँह से शोले निकाल रहा है । मजा तो उस वक्त आता है जब आपस मे लड़ाई होती है । पहले गाली-गलोज हुई, फिर हाथा-पाई होने लगी । उनमे से एक मस्त भैंसा बन गया दूसरा भी फौरन ही भैंसा बन गया । खटाखट सींग चल रहे हैं । थोड़ी देर के बाद कुत्तों की सी लड़ने की आवाज आने लगी । ऐ लीजिये दम भर में हाथी हो गये । टक्करें चलने लगीं । नवाब देखने लायक सैर होती है ।

नवाब : और यह मरघट है कहाँ ?

खलीफा 'एक मरघट ? शहर में दस बारह मरघट हैं । एक तो यहीं थोड़ी दूर है । चलिये एक दिन ।

नवाब : 'मुझे माफ कीजिए ।

खलीफा : 'आमिलों में क्या कम लोग होता है, जिसका आपको शौक है ।

नौकर रख लिया। हजार दो हजार रुपये खर्च हो गये पहर भर में शोहरत हो गई।

बाहई दौलत के लुटाने में एक लुत्फ़ खास है जिसे दर-हक़ीक़त किसी क़िस्म के मौक़े की ज़रूरत नहीं। शराब, रंडी, नाच रंग, सैर शिकार, खेल तमाशे यह सब बहाने ही बहाने हैं। अगर गौर से देखा जाय तो दौलत लुटाने वालों को इन चीज़ों से ज़्यादा मज़ा नहीं मिलता। इस क़िस्म की शौक़ीनियाँ किफ़ायतशारी से भी हो सकती हैं—बल्कि जो ऐसा करते हैं वही ज़्यादा मज़े भी उड़ाते हैं। मगर रुपया जिनके हाथ में काटता है वह क्या करें? उनको तो उसी के फेंकने में मज़ा आता है। हमारे छोटे नवाब साहब इसी मर्ज़ में मुब्तला थे। एक रंडी पहले ही से नौकर थी—खुर्शीद। उसमें एक नहीं कई ज़रूरत से ज़्यादा थी। अब यहाँ इस दूसरी को देख के इसके भी नौकर रखने की फ़िक्र हुई। इस बेजा काम और बेहूदा ख़्वाहिश का इलाज क्या है? मुसाहब और ख़लीफ़ा जी जो दिखाने के लिये तो बड़े नेक सलाहकार बने हुए थे उनका यह मन्शा था कि दौलत के बहाव का एक ही रुख़ कर दिया जाये और वह रुख़ अपने घर की तरफ़ हो।

जब बादशाह बाग़ में उस बाज़ारी सुन्दरी से नवाब की आँखें लड़ीं और नवाब साहब ने उससे ताल्लुक़ क़ायम करने का इरादा किया तो सबसे पहले यह इरादा उससे ही कहा जाता जो इस वक़्त उनके साथ था यानी ख़लीफ़ा जी से। ख़लीफ़ा जी ने पहले तो बड़े ख़ैरख़्वाह बन के मना किया। इस मना करने से यह मन्शा न था कि नवाब साहब बाज़ आएँ बल्कि चली हुई तबीयत को और ज़्यादा उकसाना था। अब नवाब साहब की तबीयत का ज़्यादा ज़ोर देखा तो ख़ुद ही तरफ़दार बन गये। गाड़ी से उतरे। एक नौकर को भेज कर उसकी नायका से अलग बुलाकर कुछ इधर-उधर की बातें करके चले आये। अब तक ख़लीफ़ा जी और नायका से बातचीत हुआ की नवाब निहायत ही बेचैनी से इन्तज़ार करते रहे। हज़ारों दुआएँ माँगीं। सैकड़ों मिन्नतें मानीं। मगर अफ़सोस कि ख़लीफ़ा जी ने किसी वजह से इस हसरत को पूरा न होने दिया।

ख़लीफ़ा 'पाँच सौ रुपया माहवार माँगती है।

छोटे नवाब पाँच सौ रुपये का नाम सुनके कुछ पस्त से हो गये। इस

लिये कि अगरचे दौलत काफ़ी थी मगर वह सब बेगम साहिबा के कब्ज़े में थी। कानून से अभी नाबालिग थे। पाँच सौ रुपये माहवार की रंडी नौकर रखने की ताकत थी न हिम्मत। बोले 'अच्छा तो एक रात के लिये लाएँ।

खलीफ़ा : 'मैंने बगैर आप के कहे कहा था वह रात की नहीं होती। खुदा की कुदरत! पाँच सौ रुपया माहवार! सौ रुपये पर तो कोई पूछेगा नहीं। आपका नाम सुनकर मुँह फैलाती है। हुजूर, क्या यही रंडी है और सैकड़ों हैं।'

नवाब एक दबी हुई आह भर के बोले 'जाने दो।

खलीफ़ा : 'फिर क्या किया जाय। पाँच सौ रुपया भी मुमकिन है मगर उस लियाकत का आदमी भी हो।

नवाब ज़ाहिरा अपनी बेपरवाही जताने के लिये बोले 'नहीं पाँच सौ की लियाकत तो नहीं है।

खलीफ़ा 'पाँच सौ कैसे? सौ रुपये पर भी मेंहगी है।

नवाब 'हाँ बस यही सौ डेढ़ सौ।

खलीफ़ा 'अब आपने हद की बात कह दी। डेढ़ सौ सब कसीदों के। हम यही समझे थे कि सौ रुपये माहवार तनख्वाह दी जायगी और पचास रुपये ऊपर से खर्च होंगे। मगर वह तो पुट्ठे पर हाथ नहीं रखने देती।'

नवाब ठण्डी दिल से बोले : 'दफ़ा करो।

खलीफ़ा : जी हाँ, दफ़ान कीजिये। देखिये एक और मामला है उसे देख लीजिए।

नवाब 'कहाँ?

खलीफ़ा : 'अब कहाँ बताऊँ? दिखाऊँगा।

नवाब 'अच्छा कैसा? यह उसके सामने लौंडी मालूम होगी।

नवाब : 'और तनख्वाह क्या लेगी? कुछ कम पर हो जायगी?

खलीफ़ा : 'पहले देख लीजिये। उसके बाद बातचीत की जायगी।

नवाब : 'अच्छा तो आज ही बुलवा भेजिये।

खलीफ़ा 'हुजूर आज कैसा दस दिन में भी मुमकिन नहीं। क्या कोई कसबी आयगी है? घर गिरस्त है।

नवाब : 'फिर क्योंकर दिखा दीजियेगा ?'

खलीफ़ा : 'हम तो किसी न किसी तरह दिखा देंगे।'

नवाब : 'तो फिर कब ? इतने कहने से यहाँ तो इश्तयाक़ हो गया। रात भर नींद न आयेगी और आप टालमटोल करते हैं। फिर क्योंकर बात बने।'

खलीफ़ा : 'हुजूर, अभी नातजुर्बेकार हैं। इश्क़बाज़ी के यही तो मज़े हैं। जिस क़दर फ़िराक़ की मुश्किलें ज्यादा होती हैं उसी क़दर मिलने का मज़ा बढ़ जाता है। अभी तो आप इश्क़ के कूचे में दाख़िल भी नहीं हुए और न बाज़ारी औरतों से आपने ताल्लुक़ात पैदा किये। यह इश्क़ नहीं है। इससे इश्क़ ही क्या ? दस की जगह बीस खर्च किए यह हाथ जोड़ने लगी। इश्क़-बाज़ी का मज़ा पर्दानशीनों से है। परदो दरबार है पैग़ाम न सलाम है। आते जम रहे हैं। नाकामयाबियाँ बेताबियाँ सारे मिलना शौक़ की तड़प है। गरज़ कि जो जो मज़े इश्क़-ए-पर्दानशीन में मिलते हैं, बाज़ारियों से उसका एक ज़र्रा भी मुमकिन नहीं। फिर लुत्फ़ यह कि अगर इश्क़ पर्दानशीन में कामयाबी हो गई और वह क़ाबू में आयी, फिर क्या है ? उम्र भर निबाह देती है। बाज़ारी औरतें बेवफ़ा होती हैं। एक इनकी यह आदत है कि जिसकी नौकर हैं उसी के खिदमतगार से अटकी हुई हैं।'

नवाब : 'मगर पर्दानशीन के इश्क़ में मुश्किलें हैं। उसके लिये मुद्दत चाहिये। इतनी फ़ुरसत किसे ?'

खलीफ़ा : 'जब इश्क़ पूरा हो तो सब मुश्किलें आसान हो जाती हैं। देर ज़रूर होती है, मगर आपने सुना होगा 'देर आयद दुरुस्त आयद'। और फ़ुरसत को जो कहिये तो आपको काम ही क्या है ? महज़ बेकारी। उससे यही शग़ल कीजिए। दिल तो एक तरफ़ उलझा रहेगा।'

नवाब के दिल पर इस जादू भरी तक़रीर ने अपना पूरा असर किया। तबीयत पहले से ही मुस्तैद थी अब इस अफ़साने से बिलकुल ही आमादा हो गई। बिना देखे आशिक़ बन गये इसलिये कि खलीफ़ा जी का एतबार उनके दिल पर जमा हुआ था। उनकी एक-एक बात को खुदाई आवाज़ समझते थे।

बादशाह बाग में इस वक्त शहर की बहुत-सी रंडियाँ जमा थीं। नवाब एक-एक तरफ इशारा करके खलीफ़ा से पूछते थे 'ऐसी है, वैसी है'। खलीफ़ा भी हर एक से उसको बढ़कर बतलाते थे। नवाब साहब अनुपम सौंदर्य की कल्पना में मग्न थे। शंपेन की बोतलें बर्फ़ सोडा लेमनेड विलायती नारंगियाँ, यह सब सामान साथ था। दौर चलता जाता था। खलीफ़ा भी खूब बढ़ियल पीने वालों में थे और ताज्जुब यह कि बोतलें खाली हो जायें मगर उन पर नशे का असर न ज़ाहिर हो न कदम बिगड़ें न ज़बान लड़खड़ाये। हाँ अलबत्ता आँखें किसी कदर चढ़ जाया करती थीं। नवाब को भी अच्छी मस्ती हो गई थी। शराब का ख़याली असर ज़्यादा होता है। आदमी जिस चीज़ का ख़याल करता है वैसा ही हो जाता है। नवाब उस वक्त सिर से पैर तक आशिक बने हुये थे। ग़रज़ कि अजब लुत्फ़ था। आठ नौ बजे रात तक यह सैर रही। उसके बाद घर पर आये। खाना तैयार था। नौ बजे दस्तरख़्वान बिछाया गया। नवाब साहब खलीफ़ा जी और चुनींदा चुनींदा मुसाहिबों ने खाना खाया। खाने के साथ ही दौर चलता जाता था। खाना खाते-खाते नवाब को गफ़लत आने लगी। ख़िदमतगारों ने उठाकर पलंगड़ी पर लिटा दिया। खलीफ़ा जी गाड़ी कसवा कर अपने घर को रवाना हुए। रात को तीन बजे नवाब की आँख खुली। ख़िदमतगार को पुकारा। उसने दो गिलास बरफ़ का पानी पिलाया। एक दौर शराब का और दिया। फिर नींद आ गई। अब जो सोये तो दिन को आठ बजे आँख खुली। अब तक नवाब ने गुसल किया रात के कपड़े उतारे, चाय तैयार हुई, इतनी देर में खलीफ़ा भी पहुँच गये। दोनों ने एक साथ चाय पी। तबीयत हरी हुई। वही रात की बातों का सिलसिला शुरू हुआ।

नवाब : कहिये वह रात की बात।

खलीफ़ा 'रात की बात गई रात के साथ। मैंने तो सिर्फ़ उस रंडी की तरफ़ से आपका दिल फेरने के लिए एक बात कह दी थी। आपको यक़ीन आ गया?

नवाब साहब ने इसका वही जवाब दिया जो बात आलम में होते की

दिया था।

नवाब : 'जी हाँ यह झूठ था तो यह कब सच है। ले बस मजाक न कीजिये। लिल्लाह आज उस बाले-बहारी की सूरत एक नजर दिखा दीजिये।

खलीफा 'उफ़ री बेताबी। यही सूरत देख लीजियेगा तो नहीं मालूम क्या हाल होगा? अच्छा खैर, क्या याद कीजिएगा। आज ही उसकी सूरत आपको दिखा दूंगा।

नवाब 'तो किस वक्त। सवारी को हुक्म दे दीजिये।

खलीफा चार बजे।

बारह

और हसरत बाकी नहीं दिल में
एक नजर देखने का हूँ मुश्ताक।

आशिक की हसरतें धीरे-धीरे बढ़ती हैं। जब किसी हसीना का जिक्र किसी से सुना तो पहले सिर्फ इतनी आरजू होती है कि एक नजर उसे देख लें। जब एक नजर देखना नसीब हुआ तो अब यह अरमान पैदा नजर हुआ कि वह हमें एक नजर देख ले। जब यह कठिनाई भी दूर हुई तो अब हम-कलामी का शौक पैदा होता है और अगर यह भी मुमकिन न हुआ तो वहाँ तक संदेशा पहुँचाने की धुन है। गरज कि किसी न किसी तरह इश्क का इज़हार हो उसके बाद दिल के मतलब को जाहिर करना यह काम सख्त मुश्किल है इसलिये कि लफ्जों पर किस्मत का फैसला है। 'हाँ' या 'नहीं'।

हुई। उस नाले मे से होकर फिर कई गलियाँ तय कीं। एक चौराहा सा मिला। इसमें एक पुराना मकान था मगर बहुत ही बोसीदा जगह जगह से टूटा हुआ। इस मकान के बराबर एक और छोटा सा मकान था जिसमें ताला पड़ा था। नसीफ़ा जी ने जेब मे कुंजी निकाली। ताला खोला। नवाब साहब को अन्दर ले गये। लकड़ी का जीना लगा हुआ था। उस पर से कोठे पर चढ़े। एक छप्पर सा पड़ा हुआ था। इस छप्पर मे एक चटाई पड़ी हुई थी। यहाँ दोनो साहब बैठे। जहाँ पर बैठे थे उसके पास दीवार में एक झरोखा था। नसीफ़ा जी ने कहा 'इस झरोखे से आँख लगाकर क़ुदरत का तमाशा देखिये। नवाब साहब ने झरोखे से आँख लगाकर झाँका। सामने पुराना मकान का दालान था। उसमें तख़्तों का चौका लगा हुआ था। पाक तरीके से लगी हुई एक बड़ी बी बैठी हुई थीं।

नवाब साहब 'एक बुढ़िया सामने बैठी है।

नसीफ़ा 'मैं देखूँ'।

नसीफ़ा जी ने कहा 'फिर देखिये। मैं अभी आता हूँ। नवाब साहब दीवार के झरोखे मे नज़र लगाकर फिर देखने लगे।'

आख़िर वह चन्द्रमुखी नज़र आई और नवाब साहब की कुछ नसीबी से इसी तरफ़ मुँह करके बैठी। नवाब साहब देखते ही दंग हो गये। परी की सूरत थी। कराई रंग बड़ी बड़ी आँखें सुतवाँ नाक पतले पतले होंठ, नाज़ुक नाज़ुक नक़्शा वग़ैरा बदन गूंदा सा भर भुबक रूप उठती जवानी। हम तो इतना ही कह सकते हैं कि सौ दो सौ सुन्दरियों में एक सुन्दरी थी। मगर नवाब साहब का झरोखे से जो नज़ारा नज़र आया होगा उसका हाल नवाब साहब के दिल से पूछिये या नसीफ़ा जी की ज़बान से सुनिये।

नवाब : 'वल्लाह क्या प्यारी सूरत है!

नसीफ़ा : ख़ैर, यह कहिये पसंद है या नहीं?

नवाब : 'मेरा तो जान से दम निकला जाता है। हाय! इससे मिलना भी मुमकिन है?'

नसीफ़ा 'मुमकिन है। मगर मुश्किल है। इज़्ज़तदार लोग मालूम होते

है। यह बड़ी दिक्कत से राजी होंगे। कुछ इस नजर से तो आप भी दिलरुबा न था। आप तो उस ऐंडी को लाशानी समझते थे। अब कहिये।

नवाब 'अब उसका जिक्र ही न कीजिये। कहाँ वह और कहाँ यह। वल्लाह कोई मुकाबला ही नहीं। मैंने तो भई, ऐसी सूरत नहीं देखी। मगर अब मिलने की तदबीर बताइये।

खलीफा 'यह तो किया। दुश्वार, बल्कि करीब करीब नामुमकिन।

नवाब 'जो कुछ हो।

खलीफा 'अच्छा तो इस वक्त इन बातों का मौका नहीं। जब जी भर के देख लीजिये। फिर कुछ न कुछ तदबीर की जायगी। आगे आपकी किस्मत।

नवाब : 'हाय ऐसा तो न कहिये। आप तो अभी से कलेजा काटे लेते हैं जी भर के देखना कैसा। अगर जिंदगी भर देखा करूँ तो भी जी न भरे।'

खलीफा : 'तो अब घर चलिये। शाम होती है और यह रास्ता भी ठीक नहीं। यहाँ दिन दहाड़े कपड़े छिन जाते हैं।

खलीफा 'खुदा के लिए एक नजर तो और देख लेने दीजिये।

खलीफा : 'अच्छा जल्दी से देख लीजिये।

नवाब साहब की निगाहें झरोखे से हटती ही न थीं खलीफा जी बड़ी मुश्किल से उठाकर लाये। रास्ते में नवाब साहब अगरचे उस वक्त बहुत पिये हुए न थे मगर मदहोशों की सी चाल चल रहे थे। कदम रखते कहीं थे पड़ता कहीं था। बड़ी मुश्किल से इतना रास्ता पूरा हुआ। रास्ते से खिदमतगार को लिया। गाड़ी पर आये। कोचवान ने गाड़ी की लालटेन रोशन की। खिदमतगार ने बोतल खोली। एक एक दौर चला। उसके बाद रवाना हुए। मनसूर नगर से होते हुए नखास पहुँचे। यहाँ से ताल कटोरे की कर्बला की तरफ गाड़ी मोड़ दी। शाम को अक्सर रोज हुसैनगंज की तरफ जाया करते थे मगर आज खलीफा जी जान बूझकर वीराने की तरफ ले चले ताकि नवाब साहब के दिमाग में वह ख्याल पक्का होकर जम जाय। रोज की तरह आठ बजे तक इधर उधर फिरते रहे। नौ के अमल में मकान पर वापिस आये। नवाब

साहब का भाव ताजा था। सर्द आहें भर रहे थे।

खलीफा जी ने जब यह रंग देखा और ही राह पर चले। बेपरवाही जाहिर करने लगे। गरज कि दो ही घंटे में नवाब को अच्छी तरह कस लिया कामयाबी की छाँह तक न दी। नौजवान अमीर-जादा मुर्ग-ए-बिस्मिल की तरह फड़क रहा था और जालिम खलीफा अपनी कारगुजारी में मस्त हो हो कर और फड़का रहा था। आज रात को नवाब ने खाना भी कम खाया। शराब बहुत सी पी। मगर ख्याल में कयामत की लहरें उठ रही थीं इसलिये नशे का असर बिलकुल न हुआ। खलीफा दस बजे रुखसत हुए। नवाब साहब रात भर पानी से बाहर मछली की तरह तड़पा किये। बड़ी मुश्किल से दो बजे रात को नींद आई।

चौदह

हकीम साहब के घर पर आज किसी के आने का इन्तजार है। मियाँ नबीबख्श इन्तजाम में लगे हुए हैं। तख्तों के चौके पर चाँदनी बिछी गई है। मसनद तकिया ढंग से लगाया गया है। दो फानूस कमरे में रौशन किये गये हैं। खासदान में चाँदी के वर्क की गिलौरियाँ भरी हुई हैं। अहाते में दो फानूस जमीन में गाड़े गये हैं। खुद हकीम साहब के ठाठ देखने के लायक हैं। विलायती शिफन का कुर्ता, जामदानी का अँगरखा, साथ मशरू का पाजामा, वर्क मखमली बूट, झुमझुमेदार टोपी एक तरफ टेढ़ी रक्खी हुई है। दाढ़ी खुर्दबीनी कतरवाई गई है। मूँछों में एक भी सफेद बाल नजर नहीं आता। दूसरा मुर्गा

भी आँखों में लिया गया है। तेल पट्टों में से टपक रहा है। इस में सारा बदन ग़र्क़ है।

सवा आठ बजे के क़रीब गाड़ी की खड़खड़ाहट की आवाज़ आई। मिर्ज़ा नबीबख़्श दौड़े। हकीम साहब घबराकर मसनद से उठ खड़े हुए। गाड़ी महाते के पास थी। बी महरी हाँफती हुई उतरी।

महरी (हकीम साहब से) बरफ़ है।

हकीम साहब हाँ मौजूद है।

नबीबख़्श चाँदी की लुटिया में बरफ़ बना के लाये। बी महरी गाड़ी के पास लेकर गई। महरी लुटिया गाड़ी में देकर वापिस आई। चाँदी का खासदान ले गई। वह भी गाड़ी में गायब हुआ। दूसरे फेरे में चाँदी की हुक़्क़ी को मिर्ज़ा नबीबख़्श ने पहले से भरके रख दी थी ले गई।

हकीम साहब इस इन्तज़ार में हैं कि बेगम साहब उतर के आयेंगी। मसनद तकिये पर कँवलों की रोशनी में तशरीफ़ रखेंगी। मगर कुछ न हुआ। चंद लमहे के बाद महरी जो आई तो हर्फ़-ए-हसरत ज़बान पर लाई। हकीम साहब अंदर की साँस अंदर और बाहर की बाहर सब से हो गये।

हकीम साहब तो क्या उतरेंगी नहीं।

महरी नहीं। इस वक़्त गर्मी बहुत है। देर से सवार हुई हैं। अभी एक जगह और जाना है।

इस बात ने हकीम साहब के दिल पर नश्तर का काम किया मगर हो ही क्या सकता था।

महरी मैं कोई घंटे भर में सवारी पहुँचाकर आती हूँ। आप कहीं जाइयेगा नहीं।

हकीम साहब कुछ उधर के पैग़ाम की राह देख रहे थे मगर महरी ने इस वक़्त तक एक बात भी ऐसी नहीं कही जिससे दिल को कुछ तसल्ली होती। चलते चलते फूलों का गहना चाँदी के चमेलदान समेत उठा लिया और यह जा वह जा। गाड़ी में जा बैठी। गाड़ी चल निकली।

हकीम साहब इस फ़िक्र में हैं, अफ़सोस सोने की चिड़िया जाल के क़रीब

थाकर बैठी खाना खाया और फुर्र से उड़ गई। इतने में नबीबख्श सामने आ खड़े हुए। आये तो बी बसाते हुए आये।

नबीबख्श : 'हाय हम मर न गईं! हमने तो जाना था घड़ी दो घड़ी बैठेंगी। बातचीत होगी आपसे सामना होगा। यह तो बड़ी सवारी आई और रवाना हो गई।

हकीम साहब 'बी महरी की कारस्तानी है।

नबीबख्श (बात का पहलू भूल के) 'महरी का क्या कुसूर मालूम होता है कोई जरूरी काम था। नवाजगंज की तरफ गाड़ी गई है। और फिर आयेंगी। और यह सामान और गुदगुदी भी लेती गई ?

हकीम साहब 'क्या हर्ज है बमेरदान भी तो ले गई।

नबीनरख 'और बमेरदान भी गया ? अच्छा तो कोई दो सौ की रकम ले गई है।

हकीम साहब दिल में अंदाजा करने लगे बाहर्इ इतने ही का माल था। अब देखिये वापिस आता है या नहीं।

वापिसी की फिक्र इसलिये थी कि यह सब असबाब मांगे का था। अगर वापिस न आया तो माल के मालिक से क्या कहा जायगा। हर सूरत में अब तो गया ही। हकीम साहब ने यह अंदाजा दिल ही दिल में किया था मगर नबीबख्श तो ऐसे आदमी थे कि जो हकीम साहब के दिल में हो वह उनकी जबान पर जारी हो जाए।

नबीबख्श 'खैर, जाने दीजिये। खुदा ने चाहा तो कुछ लेकर आयगा।

हकीम साहब को इस वक्त यह बातें कुछ ऐसी अच्छी नहीं मालूम होती थीं। बहुत झुंझलाये हुए बैठे थे। इसलिए कि चाहा यह हुआ था कि बेगम साहब आएँगी दो तीन घंटे तशरीफ रक्खेंगी खाना नोश फर्माएँगी। आज ही कुछ फैसले तय हो जायेंगे। यहाँ यह कुछ भी न हुआ।

हकीम साहब 'मैं कै क्या आयगा ? यह कहते क्या हो ? शायद अफ़ीम ज्यादा हो गई।

नबीबख्श 'बेगम साहिबा को ले के आयगा। अफ़ीम आपकी सलामती में

पन्द्रह

दिल लगाने को न समझो दिल्लगी
दुश्मनों की जान पर बन आयगी।

हमारे भोले भाले नवाब साहब को अभी पहले पहल दिल लगाने का इत्तफ़ाक हुआ है। पर्दानशीनों के इश्क़ में हज़ारों आफ़तों का सामना होता है। आज तस्वीरों से एक झलकी नज़र आती है। उस पर यह सितम कि अगर किसी ने ताड़ते झाँकते देख लिया तो बदनाम हुए। लोग दुश्मन हो गये। अपने बेगानों की नज़रों से गिर गये। एतबार जाता रहा। और अगर किसी ने न देखा तब अपना ज़मीर धिक्कार देता है। और जिसे पाप-पुण्य की तमीज़ नहीं उसे भले आदमी मुर्दा समझते हैं। मगर न हम छोटे नवाब साहब के उस्ताद और न खलीफ़ा जी के सलाहकार, हमको तो सिर्फ़ वाक़यात के लिख देने से काम है।

दूसरे दिन छोटे नवाब खलीफ़ा जी की मिन्नत आरज़ू करके उस खाली मकान में ले गये। नवाब साहब ने झरोखे से झाँक कर देखा। मकान खाली पड़ा था। बड़ी देर तक देखते रहे। न वह तख्तों का चौका था न वह परी-पैकर।

नवाब 'हाय यहाँ तो कोई नज़र नहीं आता।'

खलीफ़ा 'कहीं गई होगी ज़रा ठहरिये।'

नवाब : 'और तख्तों का चौका भी तो नहीं। यह तो जैसे मकान खाली पड़ा है। यह बड़े टूटे हुए सामने पड़े हैं। यह मामला क्या है?'

खलीफ़ा (झरोखे में देख के) 'हाँ सच तो है। हाय यह क्या हुआ?'

क्या लोग मकान से उठ गये ?

खलीफ़ा जी और नवाब साहब दोनों उस छप्पर से बाहर निकले। खलीफ़ा जी ने पहले एक छोटी सी कंकड़ी उस मकान की तरफ फेंकी। फिर एक बड़ा सा ढेला फेंका। मतलब यह था अगर कोई मकान में होगा तो शोर मचाएगा। कोई आवाज़ न आई। इस मकान की दीवारें छोटी छोटी थीं। खलीफ़ा जी और नवाब दोनों दीवार पर चढ़ गये। देखो तो मकान बिलकुल खाली पड़ा है। काली चिड़िया तक नहीं। मकान बिलकुल ढाया हुआ था। सिर्फ़ यही एक दालान बाक़ी था जिसमें उस दिन वह बुढ़िया और वह परी नज़र आई थी।

खलीफ़ा : 'इस मकान में रह कौन सकता है। यह तो बिलकुल गिरा हुआ है।

नवाब : 'फिर वह लोग इसमें क्योंकर रहते थे ?

खलीफ़ा : 'यही तो मैं भी हैरान हूँ। चलिये घर चलें। यह तो कुछ अजीब तिलस्मात है।

नवाब : 'चलिये।

दोनों साहब मकान से बाहर निकले।

खलीफ़ा : चलिये ज़रा हम मकान को अन्दर से देखते चलें।

नवाब : 'हाँ यह तो आपने मेरे दिल की कही।

खलीफ़ा और नवाब दोनों उस घर में गये। कोना कोना देखा। ऐसा मालूम होता था जैसे यहाँ कोई कभी रहता ही न था। चूल्हा न लकड़ी किसी चीज़ का निशान न था। दालान के ताक़ में एक कोरी कागज़ी डिब्बी रक्खी हुई थी। नवाब ने उसे उठा कर देखा। उसमें पाँच गिलौरियाँ एक लाल रेशम की साड़ी में लिपटी हुई रक्खी थीं और सात फूल बेले के पड़े थे। एक कागज़ का पर्चा रक्खा था। गिलौरियाँ निहायत ही नफ़ीस बनी हुई इत्र में बसी हुई थीं। दो पर सोने का वर्क़ लिपटा हुआ था और तीन पर चाँदी का वर्क़ था। कागज़ के पर्चे पर कुछ नक़्श ऐसा बना हुआ था।

८११६ | ८११२

नवाब 'मैं न मानूँ—यह कुछ असरार है।

खलीफ़ा 'इसमें शक ही क्या। लिफ़ाफ़ा पर चलिये। हाँडी को यहीं पटकिये। कल या जाने क्या हो क्या न हो।

नवाब : 'हाँडी तो मैं लेता चलूँगा। मगर आप इस मकान तक क्यों कर पहुँचे। मैं न जानता था। आप बड़े सख्त दिल के आदमी हैं।

खलीफ़ा : 'अब यह किस्सा बयान न करूँगा। दिल काबू में आये तो कहूँ।

खलीफ़ा जी की सूरत और आवाज़ से ऐसा मालूम होता था जैसे कोई डर गया।

दोनों साहब गाड़ी की तरफ़ रवाना हुए। रास्ते में खिदमतगार मिला। नवाब ने हाँडी उसको दे दी। थोड़ी दूर जाके खलीफ़ा ने कहा : 'खूब याद आया। मकान की कुंजी तो मीर साहब को देता चलूँ।

नवाब साहब : 'मीर साहब कौन ?

खलीफ़ा 'जिनका यह मकान है जहाँ से आपने उस परी को देखा था।

वहाँ से थोड़ी दूर पर एक गली में से होके मीर साहब का मकान था। दोनो वहाँ गये। खलीफ़ा ने आवाज़ दी। मीर साहब एक बूढ़े से आदमी नीली लुंगी बाँधे हुए घर से निकल आए।

खलीफ़ा (मीर साहब से) लीजिये हज़रत यह अपने मकान की कुंजी लीजिये।

मीर साहब 'क्यों ख़ैर तो है ?'

खलीफ़ा 'जी कुछ नहीं। मैं न रहूँगा।

मीर साहब : 'आप रहिये या न रहिये एक महीने का किराया जो आपने दिया है वापिस न होगा।

खलीफ़ा : 'जनाब मैं किराये से बाज़ आया। आपका मकान आप को मुबारक रहे।

मीर साहब 'आखिर कुछ कहिये तो। आप इस क़दर नाराज़ क्यों हैं ? मुझसे तो कुछ क़सूर नहीं हुआ ?'

खलीफा : मकान तो वीराने में मकान है। यह मकान जो उसके बराबर है, उसमें कोई रहता था। वह भी उठ गया। अब तो बिलकुल ही उजाड़ हो गया

मीर साहब : उस खंडहर में कौन रहता था। वह तो बरसों से खाली पड़ा है। भला वह किसी के रहने के काबिल है ?

खलीफा : मैंने सुना था उसमें दो औरतें रहती हैं। इसी सहारे पर मैंने मकान लिया था। मेरे घर की औरतें भी वहां रहतीं। मैं किसी दिन आया न आया। खैर आबादी तो थी।

मीर साहब : सुभान। जनाब उस खंडहर में बरसों से कोई नहीं रहता। आपने किस से सुना था कि उसमें औरतें रहती हैं मेरे बड़े भाई का वह मकान है। अगर कोई रहता होता तो मुझे न मालूम होता ? कसूर माफ हो, आपको वहम है।

खलीफा : खैर ऐसा ही होगा। कुंजी तो लीजिये।

मीर साहब ने कुंजी ले ली। खलीफा और नवाब दोनो रुखसत हुए। जिस वक्त खलीफा और मीर साहब में बातें हो रही थीं एक बुजुर्ग उस मुहल्ले के रहने वाले स्याह-फ़ाम से पत्ता कद खड़े सुन रहे थे। जब खलीफा ने कुंजी मीर साहब को दी और वह मकान से चले गये वह साहब साथ साथ हो लिये।

चंद क़दम आगे बढ़कर वह खलीफा से बातें करने लगे।

वह साहब : यह मकान आपने अपने रहने को लिया था ?

खलीफा : जी हाँ।

वह साहब : ग़ज़ब किया था।

खलीफा : क्यों ?

वह साहब : जनाब उस खंडहर में पेर है। रातों को गाने की आवाज आया करती है। मोहर्रम में मातम होता है। रातों को अक्सर रोशनी नज़र आती है। फिर सुबह को जाके देखो तो कुछ भी नहीं। यह तो मुहल्ला भर जानता है कि उसमें जिन रहते हैं। आपने अच्छा किया मकान खाली कर दिया और किराया क्या दिया था ?"

खलीफा 'डेढ़ रुपया ?

वह साहब : 'अच्छा तो आप डेढ़ रुपये से हाथ धाइये। अब कभी उस तरफ का रुख न कीजियेगा।

खलीफा 'मगर मीर साहब को देखिये। हमसे न कहा कि मकान में आसेब है और ऊपर से झुंझलाते हैं। वाह क्या शराफत है।

वह साहब 'बनाब वह क्यों कहते ? उनका तो फायदा था। डेढ़ रुपया आपसे क्योंकर वसूल होता।

खलीफा : अपना तो डेढ़ रुपये का फायदा हुआ और दूसरों की जान पर बन गई होती।

वह साहब : 'उनकी बला से। इसी तरह जब कोई फंस जाता है उससे किराया मार लेते हैं। उस मकान में हजरत कोई ठहर ही नहीं सकता।'

खलीफा : खैरियत हुई कि अभी मैं अपना असबाब वगैरह नहीं लाया था।

वह साहब मुफ्त में बुराई पड़ जाती। मीर साहब की दिल्लगी थी। मेरी राय में तो ऐसे मकान को खुदवा के जमीन बराबर करवा दी जाय।

खलीफा : 'जी हां दुरुस्त है।

इतनी बातें हुई थीं कि वह साहब रास्ते से अलहेदा हो गये। खलीफा और नवाब में इन पिछली घटनाओं पर बातचीत होने लगी।

खलीफा 'सुना आपने यह भी अजीब मामला हुआ।

नवाब : 'मगर यह तो कहिये आप यहां तक क्योंकर पहुंचे ?'

खलीफा : 'बात यह हुई कि मैं कोई आठ दस दिन हुए इधर से जाता था। इस टूटे मकान के करीब पहुंच के मेरी नजर उस हसीना पर पड़ गई। जब मेरी उसकी चार आंखें हुई तो उसने मुस्कुरा कर मुंह फेर लिया। अब मुझे यह खयाल पैदा हुआ कि यहां किस तरह पहुंचना चाहिये। यह मकान मुझको खाली मालूम हुआ। मेरे जी मे आई कि यह मकान किराये पर ले लूं। कोई न कोई सूरत निकल ही आयगी। मेहतरानी खड़ी थी। मैंने उससे दरयाफ्त

किया कि यह मकान किसका है। बस मीर साहब का पता दिया। मैंने मीर साहब के पास जाकर मकान किराये पर ले लिया। यह सब तसवीरें उसने लिये की थीं। उस दिन बादशाह बाग में आप उस रंडी की तारीफ़ करते थे। यह सूरत मेरी नजर में थी। मैंने कहा नवाब साहब को जरा एक झलकी दिखा दू। ऐ लीजिये यहाँ यह मामला निकला। चलिये यहीं तक खैरियत हुई।

नवाब 'मगर क्या बला की सूरत है। मेरी तो नजर से ऐसी सूरत नहीं गुजरी। वल्लाह कलेजे पर एक दाग हो गया।

खलीफ़ा 'अब उसका ख्याल न कीजिये। अच्छा हुआ अभी से हाल खुल गया वरना खुदा जाने क्या आफ़त होती। मगर यह आपका इकबाल है कि आपने परी को आँख से देख लिया। कहीं यह सूरतें देखना नसीब होती हैं। परी का हाल किस्सा-कहानियों में सुनते थे। यहाँ आँखों से देख लिया। मगर एक बात मे आपको और समझाये देता हूँ तिसवाय इसका जिक्र किसी से न कीजियेगा। इन किसीरियों से तो एक और बात समझ में आती है।

नवाब 'वह क्या?'

खलीफ़ा 'इस वक्त का कहना मेरा याद रखियेगा वह आपसे कहीं न कहीं मिलेगी जरूर।'

नवाब 'हाँ यह बात तो मेरे ख्याल में भी आती है। मगर नहीं। मगर उस पर्चे में खुदा जाने क्या लिखा है।

खलीफ़ा 'लाइये देखूँ।

नवाब ने जेब से पर्चा निकाल के दिया 'देखिये खुदा जाने कौन सा खत है?

खलीफ़ा: 'जिन्नी खत है। देखिये मैं करामत अली शाह साहब को ले आऊँगा। वह साहब पढ़ देंगे।

नवाब: 'हाँ ऐसे लोग भी हैं जो यह खत पढ़ लेते हैं?

खलीफ़ा 'जो लोग अमल वगैरह करते हैं, वही पढ़ सकते हैं। आप देखियेगा करामत अली शाह साहब बड़े कामिल हैं। बल्कि वह आपको और कुछ हाल भी बताएँगे। इस फ़न में चलते हैं?

नवाब : 'वल्लाह हमारा शहर लखनऊ लाख गया गुजरा है मगर इसमें अभी हर फ़न का कामिल मौजूद है। मीर करामत अली शाह साहब से मैं जरूर मिलूंगा।

खलीफ़ा 'क़ाबिल मिलने के हैं। मगर बड़ा बेपरवा आदमी है।

नवाब 'कामिल हैं, उनको परवा क्या है। मगर वह हमारे घर काहे को आयेंगे।

खलीफ़ा 'अव्वल तो मैं उन्हें ले आऊँगा और अगर शायद न आवे तो आपको चलने में कोई इन्कार है ?'

नवाब 'मैं आँखों से चलूंगा। अव्वल तो अपना मतलब दूसरे वह फ़क़ीर हैं। ऐसों से मिलना फ़र्ज़ है बल्कि इसी वक़्त चलिये।

खलीफ़ा 'यह तो उनके मिलने का वक़्त नहीं। दूसरे यह कि मैं उनसे आपका ज़िक्र कर दूं तो चलिये। कल बुध का दिन है मैं जाऊँगा। परसों जुमेरात को आपको ले चलूंगा।

नवाब 'रहते कहाँ हैं ?

खलीफ़ा : 'गोमती के उस पार। नसीरुद्दीन हैदर बादशाह की करबला के पास रहते हैं। चलके देखियेगा। क्या सुहावनी जगह है। मेरा तो वहाँ ऐसा जी लगता है कि जब जाता हूँ, उठने को जी नहीं चाहता।

नवाब 'तो कल आप जाइयेगा।

खलीफ़ा : जरूर और खुदा चाहे तो परसों आपको ले चलूंगा। मगर एक बात है कि वह ज़रा अमीरों से कम मिलते हैं।

इन बातों में गाड़ी तक पहुँच गये थे। अब गाड़ी पर सवार हुए। घड़ी का दाम नवाब ने खलीफ़ा से लेकर बड़ी चाव भरी निगाह से कई बार देखा और फिर जेब में डाल लिया।

हलका गिलौरियाँ फूल हार इन में से हर चीज को नवाब बार बार देखते थे। हसरत और शौक़ दोनों ने दिमाग पर कब्ज़ा कर लिया था। किसी और ख्याल को आने ही न देते थे। गाड़ी में बैठकर कुछ देर बाद नवाब साहब ने कहा : 'जी चाहता है इनमें से एक गिलौरी खाऊँ।

खलीफ़ा 'शौक़ से नोश कीजिए। मुझे यक़ीन है कि यह पान वह आपके लिए ही रख गई है। अब करामत अली शाह से पूछें तो कुछ हाल खुले। मुझे तो यक़ीन है कि कहीं उसकी नज़र भी आप पर पड़ गई है। अजब नहीं वह आप पर आशिक़ हो।

नवाब 'नहीं मुझ पर क्या नज़र पड़ी होगी।

खलीफ़ा 'नवाब यह न कहिए। आपकी सूरत-दारी में किसको शक हो सकता है। एक तो खुदा के फ़ज़ल से जामाज़ेबी यह क़यामत की है कि जो आप पहन लेते हैं आप पर फब जाता है। हमने तो ऐसी कपड़े की फबन किसी पर नहीं देखी। हाँ आपकी जान से दूर, बड़े नवाब भी जामाज़ेब थे उन्हें भी पोशाक खूब फबती थी।

नवाब इस मौक़े की तारीफ़ करने को सुनकर बहुत ही खुश हुए 'हाँ वालिद मरहूम की जामा ज़ेबी तो मशहूर थी।

खलीफ़ा 'फिर आप भी तो उन्हीं के बेटे हैं। उनकी कौन सी सिफ़त आपने छोड़ दी है। सूरत-शकल बातचीत का अंदाज़ सब वही है।

नवाब जी हाँ सूरत तो मेरी उनसे बहुत मिलती है।

इन बातों में गाड़ी मकान पर पहुँच गई थी। दोनों उतरे। शराब का दौर चलने लगा। उसके बाद खाना आया। नवाब साहब पर इश्क़ का भूत सवार था। कुछ बराय-नाम खा लिया। खलीफ़ा जी ने बेतकल्लुफ़ भर पेट खाना खाया। उसके बाद नवाब साहब पलँग पर गये। खलीफ़ा जी रुख़सत हुए।

सोलह

जिस दिन बेगम साहिबा पर छोटे नवाब के शराब पीने का भेद खुल गया था उस दिन से उन्हें उनकी तरफ से कोई उम्मीद नहीं रही थी। मगर थीं सब्रमंद। इसलिए उन्होंने छोटे नवाब पर यह नहीं जाहिर होने दिया कि उन्हें सब हाल मालूम है। जानबूझ कर अनजान बनी रहीं ताकि आँख का लिहाज बाकी रहे। नवाब साहब अब मामूली तौर से बाहर ही सोने लगे। बेगम साहिबा ने भी किसी खयाल से उज्र नहीं किया।

सिर्फ सुबह को सलाम के लिए आते थे। इसमें भी कभी-कभी नागा होने लगी। बेगम ने इस पर भी नाराजी जाहिर न की। जब सामना हो गया उन्हीं तेवरों से मिलीं जैसे पहले मिलती थीं। और अगर दो दिन भी महल में न गये खुद न बुलाया। खातिरदारी में जाहिरदारी में किसी तरह की कमी नहीं की। सिर्फ नौकरों को समझा दिया था कि छोटे नवाब के खाने-पीने के बरतन अलहदा रक्खे। मगर इस तरह कि छोटे नवाब को मालूम न होने पावे। खुद हद की मजहब की पाबंद थीं। बड़े नवाब के मरने के बाद तबीयत में परहेज ज्यादा हो गया था। हर चीज को अपने सामने धुलवाती थीं। इस बात में किसी पर एतबार न था। अपना खाना अपने सामने पकवाती थीं। कहीं से कैसी ही चीज तोहफा क्यों न आवे मुमकिन न था कि जबान पर भी रख लें। अमीरों के घर घर आना जाना बिलकुल बंद कर दिया था। छोटे नवाब की आवारगी ने उनके मिजाज में एक खास तअस्सुब पैदा कर दिया था। अब हर चीज से उनको नफरत सी हो गई थी। किसी से मिलना पसंद न करती थीं। दुनिया से कुछ काम न था। चुपचाप बैठे रहना या किताब देखना

या चिट्ठी नवीस से पढ़वा के सुनना। किताबें भी वह जिनमें खुदा और रसूल की कुछ बातें हों। किस्सा कहानियों की किताबों से पहले बहुत शौक था मगर अब उससे जी हट गया था।

चिट्ठी-नवीस गज़ब की औरत थी। नौकर होने के बाद उसने बड़ी कोशिश की कि किसी तरह बेगम साहिबा के मिजाज को अपने रंग पर लाऊँ मगर बेगम साहिबा किसी तरह न पसीजीं। पढ़ी लिखी होने के कारण चिट्ठी नवीस को वह पसंद करती थीं मगर चिट्ठी-नवीस का रंग-ढंग उनको कुछ अच्छा नहीं मालूम होता था। इसलिए बेगम साहिबा ने उनको नौकरों की हद पर रक्खा था। किसी तरह की बेतकल्लुफ़ी का बर्ताव नहीं रक्खा था। बेगम साहिबा के दिल की बातें उनके दिल ही में रहती थीं। कभी किसी से कही सुनी न जाती थीं। बड़े नवाब के मरने के बाद किसी को नहीं बता सकते हैं जिससे उन्होंने अपनी कोई खुफ़िया बात कही हो। हिसाब-किताब के वक्त बिलकुल बेमुरव्वत हो जाती थीं। मुमकिन न था कि उनकी एक कौड़ी भी किसी के ज़िम्मे रह जाय। इससे दिल की तंग मशहूर थीं। असल में ऐसा न था। खर्च करने के मौक़े पर दिल खोलकर खर्च करती थीं। बेजा एक पैसा भी खर्च करना बिलकुल न गवारा था। अब उनके दिल में अगर हसरत थी तो यह थी कि छोटे नवाब लायक़ हों कहीं उनकी शादी करती जाय और आज़ाद हो जाय। बड़े नवाब की ज़िन्दगी में अक्सर कई जगह शादी की बातचीत हुई मगर आज तक कोई बात तय न हुई थी। मामा की लड़की के साथ बचपन से कुछ बातचीत थी।

अफ़सोस! छोटे नवाब की आवारगियों ने माँ की हसरतों को ख़ाक में मिला दिया। बेगम अब दुनिया से बिलकुल दस्तबर्दार थीं। अगरचे उम्र कुछ ऐसी न थी, मगर अपने आप को बुढ़ियों से भी गया बीता कर रक्खा था। किसी चीज़ का शौक़ ही नहीं था। दुनिया उनके लिये बेकार थी और वह दुनिया के लिये।

छोटे नवाब की शादी का ज़िक्र अब भी कभी आ जाता था। बेगम साहिबा को इससे किसी क़दर दिलचस्पी थी। इसलिये कुछ मिनटों के लिये चेहरे पर

उदासी छा जाती थी मगर कुछ सोचकर अपने आप एक ठंडी आह निकल जाती थी। आँखों में आँसू भर आते थे। पहले से ज्यादा उदास हो जाती थीं।

बेगम की इस हालत से चिट्ठी-नवीस और मुगलानी तर हो गई थी। अब उन्होंने चाहा इस जोश से कुछ काम लिया जाय। तरह तरह से बेगम के सामने यह जिक्र छेड़ा।

छोटे नवाब की शरारतों का चर्चा चल रहा था। उसमें ही मुगलानी ने फौरन यह जोड़ लगाया।

मुगलानी : 'हुजूर माफ हो। एक बात में हुजूर भी कोताही करती हैं। शादी क्यों नहीं कर देती?

बेगम : 'भी मुगलानी, कैसी बातें करती हो? छोटे नवाब इस लायक होते तो रोना काहे का था। पराई बेटी को बेकार लाकर फसाऊँ।

चिट्ठी-नवीस : 'हुजूर यह सच है मगर अक्सर देखने में आया है जवानी में नई बात क्या नहीं करते। मगर इधर शादी कर दी बीबी का मुँह देखा मुरीद हो गये सब को छोड़ बैठे, बाहर का आना जाना बंद हुआ। खुदा ने फज़ल किया बच्चा-बाला हो गया। उसमें दिल लग गया। इसीलिये अगले बुजुर्गों का यह कायदा था कि इधर लड़का जवान हुआ उधर शादी कर दी। अब लड़कियाँ बीस बीस बरस की उम्र तक बैठी रहती हैं। लड़कों को रोज नये जैसे जैसे नये कायदे निकलने जाते हैं वैसे वैसे खराबियाँ पड़ती जाती हैं। लड़का हो या लड़की जल्दी शादी कर देने में हजारों आफतों से बचे रहते हैं।

बेगम 'मगर मैंने सुना है कि फिरंगियों की शादियाँ तीस तीस बरस की उम्र में होती हैं।

चिट्ठी-नवीस : 'फिरंगियों की न कहिये। मुल्क मुल्क का रिवाज है। वह अपनी शादियाँ जो आप करते हैं फिर उन्हें अख्तियार है, जब जी चाहे करें।

मुगलानी (बड़े ताज्जुब से) : 'उई बीबी तो क्या आप से लड़न हूँढ लेती हैं।

बेगम : 'और क्या आप से ढूँढ लेती हैं। और जिससे शादी करनी होती है उससे बरसों पयाम-सलाम होता है बाहरे होते रहते हैं। जब अच्छी तरह

कम करती हैं तो शादी करती हैं।

मुग्रलानी 'और यह पयाम-सलाम आप ही करती हैं।

चिट्ठी-नवीस 'ऐ खाला तुम भी क्या भोली बनती हो? खुद नहीं तो क्या तुम पयाम-सलाम करने जाती हो।

मगलानी (ज़रा खफ़ा होकर) 'मेरे दुश्मन पयाम-सलाम करने जावें। यह बात तो कुछ मेरी समझ में नहीं आती। फिर ब्याही लड़की और मर्द से आप ही अपनी शादी की बातचीत करे। और भी बात लिख लिए जाते हैं

चिट्ठी-नवीस 'उनके मुल्क का यही रस्म है। फिर उसमें किसी का क्या इजारा है।

मुग़लानी 'ना साहब हमारी समझ में नहीं आता। किसी मुल्क में ऐसा रस्म नहीं हो सकता और तुम क्या देख आई हो। यही सुनी सुनाई कहती हो, भला तुम्हें क्योंकर मालूम हुआ?

चिट्ठी-नवीस 'हमने अपनी मिस साहिबा से सुना था जो हमें पढ़ाने आती थीं और फिर किताबों में रोज़ देखते हैं। यह अँग्रेज़ी क़िस्सों की किताबें जो आजकल बहुत निकल रही हैं उनसे कुल हाल मालूम हो जाता है। इसलिये कि जिस मुल्क की जो रस्में होंगी वही तो किस्से कहानियों में बयान की जायेंगी।

बेगम 'हाँ यह क़िस्सों की किताबें मैंने भी दो चार देखी हैं। नवाब को बड़ा शौक़ था आलमारी की आलमारी भरी हुई है।

चिट्ठी-नवीस 'ऐ है बेगम साहिबा मुझे बता दीजिये कौन सी आलमारी में हैं। मैं खुद पढ़ा करूँ और आपको सुनाया करूँ।

बेगम : 'यह क्या मेरी किताबों की आलमारी के बराबर जो दूसरी आलमारी है उसमें इसी तरह की किताबें हैं। मगर मेरा तो उन किताबों में दिल ही नहीं लगता। एक झूठ का तूमार होता है। इससे क़ुरान पढ़े। मसिया हदीस देखे जो सवाब भी हो। लोगों का शादी ब्याह की बातें पढ़ने से क्या फ़ायदा?

चिट्ठी-नवीस 'बेगम यह सब सच है, मगर मेरा तो ऐसा जी लगता है कि

जहानी आ जाती थी मगर कुछ सोचकर अपने आप एक ठंडी आह निकल जाती थी। आँखों में आँसू भर आते थे। पहले से ज्यादा उदास हो जाती थी।

बेगम की इस हालत से मिट्ठी-नसीब और मुगलानी तर हो गई थी। अब उन्होंने चाहा इस मौके से कुछ काम लिया जाय। तरह तरह से बेगम के सामने यह जिक्र छेड़ा।

छोटे नवाब की शादियों का चर्चा चल रहा था। उसमें भी मुगलानी ने फ़ौरन यह जोड़ लगाया।

मुगलानी 'कुसूर माफ़ हो। एक बात में हुज़ूर भी कोताही करती हैं। शादी क्यों नहीं कर देतीं?'

बेगम 'ऐ मुगलानी, कैसी बातें करती हो? छोटे नवाब इस लायक होते तो रोना काहे का था। पराई बेटी को लाकर क्यों फँसाऊँ?'

मिट्ठी-नसीब : 'हुज़ूर यह सच है मगर अक्सर देखने में आया है जवानी में मर्द बात क्या नहीं करते। मगर इधर शादी कर ली बीवी का मुँह देखा मुरीद हो गये सब को भूल बैठे, बाहर का आना जाना बंद हुआ। खुदा ने फ़ज़ल किया बच्चा-बाला हो गया। उसमें दिल लग गया। इसीलिये अगले बुजुर्गों का यह कायदा था कि इधर लड़का जवान हुआ उधर शादी कर दी। अब लड़कियाँ बीस बीस बरस की उम्र तक बैठी रहती हैं। लड़कों को कौन कहे, जैसे जैसे नये कायदे निकलते जाते हैं वैसे वैसे खराबियाँ बढ़ती जाती हैं। लड़का हो या लड़की जल्दी शादी कर देने से हजारों आफ़तों से बचे रहते हैं।'

बेगम : 'मगर मैंने सुना है कि फिरंगियों की शादियाँ तीस तीस बरस की उम्र में होती हैं।'

मिट्ठी-नसीब : 'फिरंगियों की न कहिये। मुल्क मुल्क का रिवाज है। वह अपनी शादियाँ को आप करते हैं फिर उन्हें अख्तियार है जब जी चाहे करें।'

मुगलानी (बड़े ताज्जुब से) 'उई बीबी तो क्या आप से खसम ढूंढ लेती हैं।

बेगम : 'और क्या आप से ढूंढ लेती हैं। और जिससे शादी करनी होती है उससे बरसों पयाम-सलाम होता है वादे होते रहते हैं। जब अच्छी तरह

कस लेती हैं तो शादी करती हैं।

मुगलानी 'और वह पयाम-सलाम आप ही करती हैं।

चिट्ठी-नवीस 'ऊई खाला तुम भी क्या भोली बनती हो ? खुद नहीं तो क्या तुम पयाम-सलाम करने वाली हो।

मुगलानी (जरा खफा होकर) मेरे दुश्मन पयाम-सलाम करने जायें। यह बात तो कुछ मेरी समझ में नहीं आती। बिन ब्याही लड़की गैर मर्द से आप ही अपनी शादी की बातचीत करे। और माँ बाप किस लिये हुये हैं ?

चिट्ठी-नवीस : 'उनके मुल्क का यही रस्म है। फिर उसमें किसी का क्या इजारा है।

मुगलानी 'ना साहब हमारी समझ में नहीं आता। किसी मुल्क में ऐसा रस्म नहीं हो सकता और तुम क्या देख आई हो। यही सुनी सुनाई कहती हो, भला तुम्हें क्योंकर मालूम हुआ ?'

चिट्ठी-नवीस 'हमने अपनी मिस साहिबा से सुना था जो हमें पढ़ाने आती थी और फिर किताबों में रात देखते हैं। यह अँगरेजी किस्सों की किताबें जो आजकल बहुत निकल रही हैं उनसे कुल हाल मालूम हो जाता है। इसलिये कि जिस मुल्क की जो रस्में होंगी वही तो किस्से कहानियों में बयान की जायेंगी।

बेगम 'हाँ यह किस्सों की किताबें मैंने भी दो चार देखी हैं। नवाब को बड़ा शौक था आलमारी की आलमारी भरी हुई है।

चिट्ठी-नवीस 'ऐ है, बेगम साहिबा मुझे बता दीजिये कौन सी आलमारी में हैं। मैं खुद पढ़ा करूँ और आपको सुनाया करूँ'।

बेगम : 'वह क्या मेरी किताबों की आलमारी के बराबर जो दूसरी आलमारी है उसमें इसी तरह की किताबें हैं। मगर मेरा तो उन किताबों में दिल ही नहीं लगता। एक झूठ का तूमार होता है। इससे कुरान पढ़े। मर्सिया हदीस देखे जो सवाब भी हो। लोगों का मारी धाड़धाड़ की बातें पढ़ने से क्या फ़ायदा ?'

चिट्ठी-नवीस 'बेगम यह सब सच है, मगर मेरा तो ऐसा जी लगता है कि

जहाँ दो चार बर्क पड़े, फिर छोड़ने को जी नहीं चाहता।

बेगम 'मुए धीठानी काम में तो दिल लगता ही है।

मुगलानी 'हुजूर सच कहती हैं।

चिट्ठी-नवीस : 'जो जी चाहे कहिये। किस्सा कहानियों की किताबों पर मेरा तो दम जाता है।

बेगम 'तुम पर ही क्या मौकूफ है ऐसी बातों में बहुत लोगों का दिल लगता है। ऐ लीजिये 'लज्जते इश्क' और 'फरेबे इश्क' ऐसी बेहूदा किताबें जिनका छपना सरकार ने बंद कर दिया मगर इसको क्या कीजिये कि हजारों आदमियों को जबानी याद हैं। मैंने एक कारचोब बनवाने के लिये घर पर कारीगर बिठाये थे। उनमें एक कारीगर था। मुआ दिन भर 'जहरे-इश्क' चिल्ला चिल्ला कर पढ़ा करता था। इंदर सभा को देखो कैसी मशहूर है। सुबह से शाम तक सैकड़ों लौंडे गलियों में गाते हुए निकलते हैं और खुदा की तारीफ़ का एक शेर भी किसी से कभी नहीं सुना।

मुगलानी : 'मुई कोई बात से बात निकल आती है। सुनती हूँ कोई तमाशा निकला है, जिसे ठेटर कहते हैं। मेरे मुहल्ले में एक बीबी रहती थी। वह बहुत देखने जाती थी। एक दिन वहाँ कोई तमाशा हुआ। वह वहीं गश खाकर गिर पड़ी। मामा साथ थी। डोली में डाल के घर ले आई। ऐ लीजिये उस दिन से दीवानी हो गई। जंजीरों में जकड़ी हुई रहती है।

चिट्ठी नवीस : मैं खुद उस दिन उस तमाशे में मौजूद थी। लैला-मजनूं का तमाशा था।

बेगम 'तो क्या तुमने थियेटर देखा है? क्यों न हो? शौकीन बीमकाई।

थियेटर जाने का हाल सुनके बेगम के तेवर बदल गये थे। चिट्ठी-नवीस भी इस बात को ताड़ गई। चाहती थी बात का पहलू बदल दे मगर अब हो ही क्या सकता था। शौकीन होने का भेद बेगम पर खुद अपनी जबानी खुल गया, इस बात का अन्दाजा मुश्किल से हो सकता है कि और लोग हमारे काम को किस कदर अच्छा या बुरा समझते हैं। बेगम की राय में थियेटर में जाकर तमाशा देखना ऐसा बड़ा पाप था जिसकी तोबा तक कबूल नहीं।

चिट्ठी-नवीस की राय में यह काम कुछ ऐसा बुरा न था।

छोटे नवाब की शादी का ज़िक्र छिड़ा मगर कोई बात तय न हुई। मगर बी मुगलानी और चिट्ठी-नवीस को मालूम हुआ कि छोटे नवाब की शादी के ज़िक्र से बेगम नाख़ुश नहीं होतीं। इस मामले में किसी क़दर गुंजाइश है। अगर बेगम के दिल में किसी तरह जगह हो सकती है तो इसी से हो सकती है। छोटे नवाब की हरकतों से बेगम बहुत ही नाख़ुश थीं। मगर फिर भी थीं। यहाँ तक ख़याल न होगा। बेगम के पास से उठने के बाद दोनों साज़िशियों में यह सलाह हुई कि छोटे नवाब की अम्मा-जानी किसी तरह लेकर कहीं बात ठहराना चाहिये।

सत्रह

रजब की नौचंदी है। लाल कटोरे की करबला में अच्छी भीड़ है। अक्सर आठ पहर वाले ज़ियारत के लिये आ रहे हैं। शहर की ऊँची ऊँची रंडियाँ किस ठाठ से बैठी हैं। करबला के अहाते में जगह जगह दरख़्तों के नीचे फ़र्शों पर दरियाँ चाँदनियाँ बिछी हैं। दरवाज़े के सामने से शहर तक दोरस्ता बाज़ार लगा है। किसी हलवाई की दुकान पर पूरियाँ तली जाती हैं। कहीं ताज़ी जलेबियाँ बन रही हैं। मिठाई के खोंचे लगे हुए हैं। कहीं नानबाई ख़मीरी रोटियाँ गरम गरम तंदूर से निकाल रहा है। कबाबी कबाब भून रहे हैं, तंबो-लियों की दुकानों पर शौक़ीनों की भीड़ है। खोंचे वाले चारों तरफ़ आवाज़

लगाते फिरते हैं। हाजी मस्तीता की कब्रला के फाटक से लेकर रेल की सड़क तक गाड़ियों और इक्कों का हुजूम है। इसी जगह पर सब गाड़ियों से अलग खेतों के किनारे कोई पचास साठ कदम के फ़ासले पर दो गाड़ियाँ खड़ी हैं। एक गाड़ी पर हमारे जनाब हकीम साहब तशरीफ़ रखते हैं और दूसरी गाड़ी में दो तीन औरतें खड़कियों से झाँक रही हैं कोच बक्स पर भी महरी बैठी हुई है। ऐसी गाड़ी जिसकी खड़कियों से औरतें झाँकती हों और खासकर जिसके कोच बक्स पर भी इत्मीनान महरी की सूरत नज़र आये मुमकिन नहीं कि तमाशाइयों का उसके चारों तरफ़ जमघटा न हो जाय। मगर गाड़ी पर दो तीन गज़ के फ़ासले पर महरी के यार-ग़ार मिर्ज़ा चपकन एक गर्द पेंच सर से माथा लिपटा हुआ गुलाबी कुर्ता पहने धोती बाँधे एक लंबी लठ हाथ में लिये पैतरा बदले खड़े हैं और गाड़ी की तरफ़ देखने वालों को बुरे तेवरों से देखते हैं। इस पर भी नज़र बचाकर देखने वाले बाज़ नहीं आते।

उधर हकीम साहब की गाड़ी के बराबर मिर्ज़ा नबीबख्श लाल पगड़ी बाँधे हुए, चुस्त कमर कसे नचारिया हुक्का हाथ में लिए, बड़े पिसम फूँक रहे हैं। जो शख्स ग़ौर कर देखे उसको मालूम हो सकता है कि दोनों गाड़ियों में किसी न किसी किस्म का लुक्फ़िया ताल्लुक ज़रूर है। किसी बिजली की ताक़त का तार, जो आँखों से दिखाई नहीं देता लगा हुआ है और बराबर खबरें आती जाती हैं इसलिये कि इधर हकीम साहब ने जम्हाई ली उधर वो महरी कोच बक्स से उतरी। किसी ने हाथ बढ़ाकर खासदान महरी को दिया। वह हकीम साहब की तरफ़ लेकर रवाना हुई।

हकीम साहब (पान खासदान से निकाल कर): 'क्या अच्छी गिलौरी बनी हुई है? बेगम के हाथ की बनी होगी?

महरी (त्योरी चढ़ाकर): 'बेगम के दुश्मन हाथ से पान लगाने लगें। गिलौरी वाली किसलिए नौकर है? वह भी क्या ग़रीबख़ाने की बीबियाँ हैं कि आप ही मामा, आप ही बीबी आप ही मीसी। चूल्हा फूँक रही हैं, पसीना बहता जाता है एक तरफ़ लड़का दूध पी रहा है। इतने में मियाँ ने पान माँगा। रोटी जलती तवे पर छोड़कर उठीं पिटारी से पान लगाया। फिर

भुन-भुन करती चूल्हे के आगे आ बैठी। जब तक यह पान लगाएँ, रोटी जलकर कोयला हो गई। उधर लड़का चूल्हे में हाथ झुलसे देता है। भई, सच कहूँ मुझे तो इन बीवियों के हाथ से कोई चीज खाते घिन आती है। उसी हाथ से लड़के को दूध पिलाया उसी से रोटी पका रही है उसी से पान लगा रही है। क्यों हकीम साहब कुछ झूठ कहती हूँ। अमीरखाने की बेगमात का क्या कहना ? कोई काम अपने हाथ से करती है ?'

हकीम साहब इस बात से ज्यादा नहीं झेंपे क्योंकि इनकी बीवी अपने हाथ से रोटी पकाती न थीं। वैसा औरत अभी तक जिन्दा थीं गो कि अब आँखों से सूझता कम था। मगर पाव भर की आठ चपातियाँ अब तक पका लेती थीं। अपने बुजुर्गों की दुआ थी। हकीम साहब की बीवी से आठ लड़के पैदा हुए। हन्या बाप की फर्माइश रही मगर इत्तफ़ाक से मिली ही नहीं और मिली तो उसका दूध ठीक न था। इसलिए नौकर नहीं रक्खी गई। यहाँ तक कि इसी इन्तज़ार में लड़कों की दूध बढ़ाइयाँ हो गईं। अब दस बारह बरस से कोई बच्चा नहीं हुआ।

हकीम साहब 'अच्छा यह पूछो, कुछ खाने को मँगवा दिया जाय।'

महरी 'हकीम साहब कुछ हाथ दुरुस्त हैं। बेगम साहिबा बाज़ार की कोई चीज खायें ? वह जो खाना आपने पकवा कर भेजा दस्तरख्वान पर तो रक्खा नहीं। सब लोगों के आगे लाया गया। वह यहाँ का खाना खाती ही नहीं।'

महरी ने यह कह कर एक कहकहा लगाया।

हकीम साहब (ज़रा गुस्सा होकर) 'तो फिर क्या खाती हैं ?'

महरी 'खाती क्या हैं। अपने सामने अँगीठियों पर छोटी छोटी चाँदी की पतीलियों में खानेवाली पकाती है। वही खाती हैं। खुदा के फ़ज़ल से अपने हाथ से ऐसा पकाती है कि मुए बावर्ची क्या पकाएँगे।'

हकीम साहब को बड़ा सदमा हुआ। इसलिये कि आपने उस दिन के खाने में बड़ा इहतमाम किया था। मियाँ अली बख्श बावर्ची ने अच्छी बिरयानी खासपी पकाई थी। सिर्फ़ दूध की रोटी में बीस-बाईस रुपये खर्च हो गये थे।

और खाना भी इसी किस्म का था। पूरे तौर में पूरा पचासा खर्च हुआ था। अफ़सोस बेगम साहिबा ने जबान पर भी नहीं रक्खा। बी महरी और मियाँ अमजद ने दो दिन तक खाया। मगर हकीम साहब दिल में खुश हैं इसलिये कि और खाना खाया या न खाया मुझसे मिलने के शौक में तालकटोरे की करबला तक तो आई हैं।

अठारह

तबीयत में तलव्वुन है कभी खुश हैं कभी नाखुश
सितम का क्या गिला करते करम पर नाज़ क्यों होता।
बनावट जिनकी ऐसी है लगावट उनको क्या होगी
वह आशिक़ जो हुए दिल दर्द तो अपना बुरा होगा।

गोमती के उस पार नसीरुद्दीन हैदर की करबला के सामने एक छोटा सा मैदान है। चारों तरफ़ पतावर के झुंड हैं। इससे एक बड़ा अहाता सा बन गया है। मैदान में खेती नहीं होती। सिर्फ़ चराई के लिए छोड़ दिया गया है। इसके चारों तरफ़ दूर तक आबादी का निशान नहीं। कुछ फ़ासले पे कंजरों की झोंपड़ियाँ पड़ी हैं। इस मैदान के एक तरफ़ एक ऊँचे टीले पर एक कच्चा सा मकान है जो करामत अली शाह साहब ने आरज़ी तौर पर बनवा लिया है। मकान के बाहर एक चबूतरा है। उसके आसपास कुछ फूलों के पेड़ लगे हैं। इस वक़्त चबूतरे पर एक चटाई बिछी है। उसके एक तरफ़ मुसल्ले पर शाह साहब बैठे हैं। शाह साहब का चोग़ा काला है। उस पर सफ़ेद लम्बी

बाली जिस क़दर फबती है कि गोया अँधेरी रात में चाँदनी ने खेत किया है। हाथ में पैतून की माला हजार दाने की। तकिया हाथ के नीचे धरा हुआ है। चेहरा डरावना झुर्रियाँ पड़ी हुई बड़ी सी नाक माथे से फूली हुई, मोटे-मोटे होंठ, बड़े-बड़े दाँत एक जरा माथे को निकला हुआ। पान बहुत खाते थे इसलिए दाँत बिलकुल स्याह हो गये थे। उस पर तम्बाकू की सुसुबू जिसकी महक बात करते वक्त दूर तक जाती थी। मगरचे यह उन लोगों को नागवार हो जो तम्बाकू को नहीं खाते मगर असल में कुछ ऐसी बुरी न थी। बार-बार क़लमे के मारे लगाते हैं। ध्यान में मग्न हैं।

दो दुनियादार सरदमंदे सामने चटाई पर बड़े अदब के साथ बैठे हुए हैं। इनमें से एक हमारे नये फिरके मासेब के मारे छोटे नवाब साहब और दूसरे खलीफ़ा जी हैं। शाह साहब रोजमर्रा के वजीफ़े पढ़ने से फ़ारिग होकर उनकी तरफ़ मुतवज्जह होते हैं।

शाह साहब नवाब साहब मुरशद के हुक्म से आपकी ख़ैरियत रोज ही मालूम होती रहती है। आख़िर आप तशरीफ़ ले आए। कहिये क्या हाल है? यह आख़िरी फ़िक़रा जरा मुस्कुरा कर कहा था।

नवाब बेचारे पहले ही से शाह साहब के रोब से दबे हुए बैठे थे। अभी इन्हें इसकी फ़िक्र ही थी कि क्या जवाब दिया जाय। इरादा किया मगर मुँह से बात न निकली। ख़लीफ़ा जी ने वकालत की।

ख़लीफ़ा जी : 'हुजूर सब जानते हैं। जब आपको रोज रोज का हाल मालूम है तो फिर इस वक्त की वाक़ओं का बयान करना बेकार है। वक्त बरबाद करने से फ़ायदा क्या?

नवाब साहब दिल में बहुत ही खुश हुए कि अगर मैं जवाब देता तो इससे ज्यादा और क्या कहता।

शाह साहब : 'हाँ मुझे मालूम है। शिकायतें सुनते-सुनते नाक में दम हो गया। वह शख़्स जिसकी तलाश में आप आये हैं बरसों से आपकी तलाश में है। साहबजादे, तक़दीर के अन्धे हो शाह जिन के वजीर की बेटी सब्ज क़बा आप पर आशिक़ हो और आप यह बेपर्वाही करें जिससे औरतज़ात जो मामूली

तीर से रंज पहुँचता है। इतनी बात आपको बताये देते हैं कि ताकत रखने वाले लोगों की माशियत में भी मामूल को माफ़िक बनना पड़ता है। आप अपने को सँभालिये। यह मामला ही और है। अगर सीधे रहियेगा तो इसका मज़ा उठायेगा वरना पछताइएगा।

शाह साहब ने यह कुछ बातें इन तेवरों से कही थी कि नाज़बुर्दार नवाब बेचारा बिलकुल सहम गया मगर दिल कड़ा करके अपनी हालत का इज़हार किया।

नवाब : बचपन में जो हालत हो वह तो ज़रूर माफ़ी के क़ाबिल है मगर आइन्दा आपके इशारे के माफ़िक अमल किया जायगा।

लतीफ़ा जी : हुज़ूर हमारे नवाब साहब हैं तो अभी कम उम्र मगर बहुत ही नेक और साफ़-दिल हैं। जो आप फ़रमाइये उससे रत्ती भर भी फ़र्क़ न होगा।

शाह साहब (मुस्कुरा कर) : अच्छा यह तो कहिये आप आजकल आराम कहाँ करते हैं?

नवाब (घबरा कर) : 'वालिद के इन्तकाल के बाद से घर में दिल नहीं लगता। अक्सर दीवानख़ाने में सोया करता हूँ।

शाह साहब : दुरुस्त।

यह इस लहजे से कहा कि गोया नवाब ने अपना हाल ग़लत कहा था।

लतीफ़ा : 'जी हाँ सही कहते हैं। नौ दस बजे रात तक तो मैं खुद हाज़िर रहता हूँ। खाना खाने के बाद नवाब अपने पलँग पर सो जाते हैं। मैं घर चला जाता हूँ।

शाह साहब : 'हाँ तो आपको क्या मालूम कुछ लोग नवाब साहब के पलँग के पास भी रहते हैं उनसे दरयाफ़्त कीजिये।

लतीफ़ा जी : 'यह पहेली तो मेरी समझ में नहीं आती। कुछ और साफ़ कहिये।

शाह साहब : 'नहीं अभी कुछ न कहूँगा। अभी नवाब साहब कम उम्र हैं। ऐसा न हो चौंक जायें।

खलीफा : 'तो क्या कोई डर की बात है ?

नवाब (दिल को कड़ा करके) 'नहीं आप बेतकल्लुफ फर्माइये। मैं डरने का नहीं।

शाह साहब : 'हाँ इसकी तो मुझे उम्मीद है। आप हैं किस खानदान से। आप ही के बुजुर्गों ने हिन्दुस्तान को फतह किया था। कौमी असर कहाँ तक न होगा। अच्छा तो आप सुनिये। आप उस जगह से जहाँ बजाहिर आराम करते हैं कई हजार कोस के फासले पर उठवा लिये जाते हैं। उम्दा क्या के खास कमरे में पौने बजकर चालीस मिनट तक कल रात को आप सोये। उसके बाद फिर एक छिन में अपनी जगह पहुँचा दिये गये। मगर यह आपकी सूरत पर जाहिर है। किसी तरह की तकलीफ नहीं देती। परसों रात का जिक्र है कि आप यहीं आप पड़े थे। आपने अपने नौकर चैंची मकसूद को आवाज दी। फ़ौरन एक जिन्न चैंची मकसूद की शक्ल बनकर हाजिर हुआ। आपने बरफ का पानी माँगा। उसने पिलाया। फिर आपके पहलू में जो माशूका सो रही थी और जो इस वक्त आपसे कई हजार कोस के फ़ासले पर आपके कमरे में पड़ी खुर्राटे ले रही थी उससे पूछा था। चैंची मकसूद ने आपसे कहा 'अभी बाहर गई है। इसके बाद आपने थोड़ी देर इंतजार किया। बरफ़ के पानी में परियों के पहाड़ की शराब मिली हुई थी। वह पेश की। आपको फ़ौरन बेहोश कर दिया। फिर आपका चाहने वाला पहलू में आ गया। यह सवा तीन बजे रात का वाकया है। उसके बाद एक घंटे अट्ठाईस मिनट आप परिस्तान में और रहे। फिर आपकी पलँगड़ी आपके कमरे में पहुँचा दी गई। रास्ते में आपने बेहोशी की हालत में गजब की करवट ली थी। अगर जिन्न आपकी पलँगड़ी के पास न होता तो पहाड़ से गिर पड़ते और दुश्मनों का पता भी न मिलता। यह सब बातें आपको ख्वाब-ओ-ख्याल मालूम होती होंगी मगर वाकयात बिलकुल सही हैं। इसलिये कि मेरे पास एक एक मिनट के बाद खबर पहुँचती है।

नवाब इन वाकयात को सुनकर अचम्भे में डूब गये। इसलिये कि सिर्फ एक रात पहले की बात थी। बहुत सी बातें शाह साहब के बतलाने को सच्चा साबित करती थीं। सिवाय बजा और ठीक कहने के कोई जवाब न बन पड़ा।

इसके बाद शाह साहब ने कहा : 'अच्छा तो आप तशरीफ़ ले जाइये। मेरे वज़ीफ़ा पढ़ने का वक़्त है। कल इसी वक़्त फिर आइयेगा।'

छब्बीस

नौ बजे के बाद नवाब साहब शाह जी से रुख़सत होकर बग्घी में सवार हुए। कुछ देर तक दोनों चुप रहे। नवाब अचम्भे में डूबे हुए थे। बात क्या करते। आख़िर ख़लीफ़ा जी ने ख़ामोशी तोड़ी।

ख़लीफ़ा : हुज़ूर यह तो अजीब मामले हैं जो शाह जी ने बतलाये हैं। मेरी तो समझ में नहीं आता। इतना जानता हूँ कि पहुँचे हुए लोगों में हैं मगर

नवाब : 'परसों रात को पानी तो मैंने जाकर माँगा था। इतना याद है और अजब क्या है कि बीबी मन्सूर ने बरफ़ का पानी दिया हो। उसके बाद मैं सो रहा। जब मेरी आँख खुली है मुझे ख़ूब याद है कि ख़ुरशीद महलू में न थी। मगर नींद का ख़ुमार मेरी आँखों में था। फ़ौरन फिर ग़ाफ़िल होकर सो रहा। सुबह को सात बजे आँख खुली। ख़ुरशीद महलू में सो रही थी। मज़ार बख़्श ने हुक्का लगाया। यह सब वाक़यात मुझको याद हैं।

ख़लीफ़ा : 'अच्छा तो अब घर पर चल के बीबी मन्सूर से दरयाफ़्त किया जाय। ख़ैर, यह मामले तो घर पर चलकर तय हो जायेंगे लेकिन नवाब अगर यह वाक़या सच्चा है तो बड़े लुत्फ़ आएँगे। परिस्तान की सैरें होंगी। परियों का नाच देखेंगे। जो बातें क़िस्से कहानियों में सुनते हैं, आपकी बदौलत आँखों

से देख लेंगे। मगर इसी वक्त वादा कर लीजिए कि हमें भी वहाँ ले चलियेगा या नहीं।

नवाब अभी तक सोच विचार में पड़े हैं। एलफ्रेड कंपनी में गुल बकावली का तमाशा कई बार देखा था उसी का समाँ आँखों में फिर रहा है। बागे-इरम का नक्शा बनवाने का मनसूबा बार-बार दिल में आता है। पन्ने का महल और उसकी सजावट का दिल में खाका खिंचता है, मगर अभी तक यह नक्शे अच्छी तरह नहीं जमते हैं। इसलिये कि कुछ शक है कुछ यकीन। मगर उम्मीद यकीन ही का पहलू दबाये हुए है। नाकामयाबियों के खयाल दिमाग से बाहर निकले जाते हैं। सब्ज-परी को एक टूटे खंडहर में देखा था। उसी पर दिल लोट गया। अब उसकी तसवीर का खयाल पन्ने के महल में और ही जोबन दिखा रहा है। और यह खयाल कि वह हम पर मर रही है एक अजीब उमंग दिल में पैदा कर रहा है। इस वक्त नवाब साहब अपने जोश में ताज-उल मलूक से कुछ कम नहीं। मगर अभी तक वह बातें दिल ही दिल में हैं। कमबख्त बद जुबानी मुँह से नहीं निकलने देती। फिर खलीफ़ा जी के टहोके और भी सितम कर रहे हैं। आखिर इतना जबान से निकल ही गया 'वल्लाह अगर ऐसा हो तो मैं जरूर आपको ले चलूँगा। मगर अभी तो कुछ समझ में नहीं आता।

खलीफ़ा 'हाँ समझ में तो मेरे भी नहीं आता मगर करामत अली शाह साहब एक बेलालच आदमी हैं। एक से हजार तक नहीं लेते। फिर उनको बेकार बातें बनाने से क्या मतलब।

नवाब हाँ आदमी तो बेगरज़ मालूम होते हैं।

खलीफ़ा 'ए हुजूर यह तो शहर भर जानता है कि बारह बरस इसी जगह पर बैठे हो गये। शहर के अमीर रईस और महाजन सभी तो आते हैं। किसी दिन सुबह को आकर देखिये। अच्छा खासा दरबार होता है, मगर आज तक किसी से एक पैसे का भी सवाल नहीं किया। लोगों से यह भी सुनने में आया है कि कीमिया बनाते हैं। इसका हाल इस तरह खुला कि पहले हर जुमेरात को यह दस्तूर था कि मोहताजों को चाँदी सोने की डलियाँ बाँटा करते थे। और इस भेद के छुपाने की बहुत तासीर थी। जब से लोगों ने मशहूर कर दिया

सौ रात बसर हो गई। मगर अब भी बराबर बैठे होंगे। कोई और तरीका निकाला होगा। इतना सुना है कि नौ बजे के बाद रात को निकल जाया करते हैं। बारह बजे तक शहर की गश्त करते हैं और ठीक बारह बजे दरिया में नहाते हैं। उस वक्त से सुबह तक खुदा की इबादत में लगे रहते हैं।

नवाब 'और सोते कब हैं ?'

खलीफा 'चालीस बरस हो गये रात को नहीं सोते। सुबह को सूरज के निकलने के बाद नमाज पढ़के जरा के जरा सो जाते हैं।

नवाब : 'चालीस बरस हुए नहीं सोये ?

खलीफा : 'सोते तो यह कमाल क्यों कर हासिल होता ? जिन या भूत प्रेत को काबू में करना तो इनके लिये खेल है। आपके शहर में यह एक शख्स है। एक ही कामिल है। बल्कि दूर दूर इनके मुकाबले नहीं हैं।

नवाब 'भला कोई कुछ हासिल किया चाहे तो बताएँगे भी

खलीफा 'बताएँगे मगर उसी को जिसकी किस्मत में होगा।

नवाब 'भला यह क्योंकर मालूम हो कि किस्मत में है या नहीं ? किस्मत का हाल सिवाय खुदा के कौन जानता है ?

खलीफा : 'यह सच है। मगर इन लोगों को अपने इल्म के जरिए से मालूम हो जाता है। जिसकी तकदीर में न होगा वह अगर सर भी पटक मारे तो कभी न बतायेंगे और जिसकी तकदीर में होगा उसे खुद ढूँढते फिरेंगे। मिन्नतें करके बतायेंगे।

नवाब 'वल्लाह मेरा जी चाहता है इनसे कुछ हासिल करूँ।

खलीफा : 'हम दुनियादारों से यह काम नहीं हो सकते। आप से शौक जाना छोड़ना मुमकिन नहीं। इसके अलावा और परहेज इस कदर सख्त हैं कि हम से आप से निभ नहीं सकते।

नवाब 'अगर वह बताने को कहें तो, तो मैं सब छोड़ सकता हूँ। बात ही आदमी दिल पर रख ले तो सब कुछ कर सकता है।

खलीफा 'बजा है। अच्छा तो अगर आपकी तकदीर में है, तो शाह साहब खुद ही आप से कहेंगे। आप अभी अपने मुँह से कुछ भी न कहियेगा। मगर-

आपकी तक़दीर में होगा तो वह आप ही देंगे।

नवाब 'हाँ यह आपने खूब बताया। अगर तक़दीर में होगा तो आप ही खुद बतायेंगे।

खलीफ़ा 'हुक्म पहुँचेगा।

नवाब : 'यह मैं नहीं समझा।

खलीफ़ा 'अक्सीर, तस्ख़ीर या जादू टोना कुदरत के भेद हैं। अगले वक़्तों से सीने बसीने चले आते हैं। जिसकी तक़दीर में होता है कामिल उस्ताद उसे तलाश करके बता देता है।

नवाब 'उस्ताद कामिल उसे क्योंकर पहचान लेता है।

खलीफ़ा : 'उसकी सूरत देखकर, रमल फेंककर या ज्योतिष से। आपने अलाउद्दीन का तमाशा थियेटर में देखा है। मुल्क अफ़रीका को ख़्याल कीजिये और चीन को। हज़ारों कोस का फ़ासला है। वहाँ से उसने जन्म-पत्र देख के दरयाफ़्त किया कि वह चिराग़ मुस्तफ़ा दर्जी के हाथों दफ़ीने से निकल सकता है। दफ़ीना जादूगर को खुद ही मालूम था। अगर उसके निकाले निकलता तो खुद ही क्यों न निकाल लेता।

नवाब 'दुरुस्त है और फिर देखिये कि वह चिराग़ अलाउद्दीन के पास रहा। जादूगर को न मिला।

खलीफ़ा 'और उसके साथ छल्ला भी अलाउद्दीन को मिला।

नवाब 'छल्ला और चिराग़ दोनों मियाँ अलाउद्दीन के हाथ आए। चीन के बादशाह की लड़की से शादी हुई। जिन्दगी भर चैन किया। जादूगर को क्या मिला। मुफ़्त जान भी खोई। इतना बखेड़ा नाहक़ उठाया। पहले ही जन्म-पत्र में देख लेना था कि वह चिराग़ और छल्ला किसकी तक़दीर में है। उसी की ताबेदारी करना थी।

खलीफ़ा 'इसमें क्या शक है और इसमें एक और भेद भी है। पहुँचे हुए लोगों की यह शान है कि बेपरवाह हों। जादूगर के लोभ ने उसकी जान ली। अक्सीर और तस्ख़ीर या जादू से ज़ाती फ़ायदा उठाना नहीं है। ऐसा करने से इन चीज़ों की तासीर जाती रहती है।

सात बजे से आप से छुट्टी लेकर घर चला गया था। रात भर छुट्टन के यहाँ रहा। उसकी एक बरात थी। जिस वक्त मैंने हुजूर से छुट्टी ली है, खलीफ़ा जी भी तो बैठे थे।

मज़ार बख्श 'हुजूर ने उस दिन रात को पानी तलब ही नहीं किया। (खलीफा जी की तरफ इशारा करके) आप जानते हैं रात भर जागता हूँ। जिस वक्त जी चाहे पुकारिये। एक आवाज़ में मेरी आँख खुल जाती है।

नुरदीन (मामूला नवाब की नौकर) खलीफा जी होश की दवा करो। बात का बतंगड़ न बनाओ। नवाब ने रात भर नहीं आराम किया। उस रात मेरे सर में दर्द था। मैं खुद रात भर जागा की। न जिन्न आए, न परीज़ादी ही परिस्तान गई। यह सब किस्से कहानियों की बात है। किन गुमानों में पड़े हो।

खलीफा : 'वाह तुम क्या जानो? हाँ तुमको ऐसा ही मालूम हुआ होगा। शाह साहब कभी गलत न कहेंगे।

नुरदीन 'यह कौन शाह साहब उल्लू के पट्ठे हैं?

खलीफा 'बस बस बस। ज़बान सँभाल के बातें करो। और जो जी चाहे मज़ाक करो शाह साहब के लिए कुछ न कहना।

नवाब (नाराज़ होकर) : 'यह क्या बेहूदगी है। एक पहुँचे हुए आदमी को बेअदबाना गालियाँ देना। नुरदीन यह बातें तुम्हारी हमको पसंद नहीं।

नुरदीन 'बहुत से ऐसे मुल्ला सयाने देखे हैं। सिवाय फ़रेब के और कोई बात नहीं।

खलीफा : 'सच है। जैसा आदमी होता है, उसको सब वैसे ही मालूम होते हैं।

नवाब 'वल्लाह, सच कहा।

नुरदीन (खिसियानी होकर) तो हम फरेबी हैं?

खलीफा इसमें शक क्या है।

नुरदीन 'और तुम?

खलीफा 'तुम ऐसों को भी बाज़ार में बेच लें।

सुरबीर : 'इसमें शक क्या है। ज़बान से सच ही निकला।'

ख़लीफ़ा : 'फ़रेब न देते तो तुम यहाँ क्योंकर बैठी होतीं।'

सुरबीर : 'यह मैं अपने मुँह से नहीं कह सकती क्योंकि आप शरीफ़ आदमी हैं। मैं समझती थी कि दिल में शुक्रिया अदा करना काफ़ी है। अब आपने ख़ुद ही इज़हार कर दिया। बेशक मैं आपकी अहसानमन्द हूँ।'

ख़लीफ़ा : 'अब आप यों आईं। अच्छा मज़ाक हो चुका। मेहरबानी करके किसी को बुरा भला न कहा कीजिए। उसके फ़रिश्ते सुनते हैं। इससे सरकार का नुक़सान है।'

सुरबीर : 'नुक़सान हो सरकार के दुश्मनों का। बुरा भला कहने से मुझे क्या फ़ायदा है? मैंने तो दुनिया की एक बात कही। अक्सर नजूमी रम्माल कीमियागर, फ़क़ीर, जोगी जोगी रंगे हुए सियार होते हैं। श्री नज़ीर को कीमिया का बड़ा शौक था। एक कामिल महीने भर तक मकान पर ठहरे रहे। पराठे, कोरमे, बालाइयाँ खाते रहे। शीशियों से शीशियों की तरह खिदमतें लीं। आख़िर एक कड़े की जोड़ी लेकर चलते हुए। अब शायद परियों के पहाड़ की सैर कर रहे होंगे। यहाँ अक्सीर की बूटी ढूँढकर लायेंगे और श्री नज़ीर का मकान सोने का बना देंगे।'

ख़लीफ़ा : 'श्री नज़ीर हमेशा की उल्लू हैं। उनका माल यों ही लोग खाते हैं। हराम के माल का मामला है। हम तो ख़ुद दुनिया भर के सयाने हैं। ऐसे फ़क़ीरों को ख़ूब पहचान लेते हैं। हम को क्या कोई धुल देगा।'

सुरबीर : 'नज़ीर को तुम बेवकूफ़ कहो। मेरी समझ में तो वह ऐसा नहीं। अपनी भलाई बुराई ख़ूब समझती हैं। मगर शाह साहब ने कुछ तो ऐसा करिश्मा दिखाया था कि धूल में आ गईं।'

ख़लीफ़ा : 'चकमा क्या खाया था? मैं बताऊँ। फ़क़ीर ने सोना उनके हाथ से बदला दिया था। चकमा खा गईं।'

नवाब (ज़रा चौंक कर) : 'हाथ से बदला दिया।'

ख़लीफ़ा : 'जी हाँ। यह तो इन मक्कारों के बायें हाथ का खेल है। पुड़िया में पैसा रख के हाथ में रखा। चक्कर देते वक़्त आँख बचाकर निकाल

लिया। तोला भर सोना बढ़िया में रख दिया। चक्कर देकर निकाल लिया। देखने वाला जानता है सोना बन गया।

नवाब : 'मगर किसी ने देखा नहीं।'

खलीफ़ा : 'ए हुज़ूर, यह तो एक तरह की नज़र-बंदी है। यह मदारी जो तमाशा करते फिरते हैं, पहले जेब में रख देते हैं। ख़बर नहीं होती।'

नवाब : 'हाँ यह तमाशा मैंने भी देखा। मामूजान के मकान पर ख़ुद मेरी जेब से अशर्फ़ी निकली।'

खलीफ़ा : 'बस यही समझ लीजिये। मगर यह तमाशे वह लोग करते हैं जिनको कुछ लेना होता है।'

नवाब : 'क्या बात कही है। सच्चे फ़क़ीर की पहचान यही है कि किसी से लालच न रखे।'

मुनीर : 'मगर ऐसे पहुँचे हुए किसी से मिलते कब हैं?'

खलीफ़ा : 'मिलते क्यों नहीं? जिसको कुछ उनसे मिलना होता है, उससे मिलते हैं।'

मुनीर : 'जी हाँ तो आपको कोई मुर्शिद मिल गये होंगे।'

नवाब : 'उनको तो नहीं हमें मिले हैं।'

मुनीर (गौर से नवाब सूरत देखकर, और ज़रा मुस्कुरा कर) 'तुम्हें।'

नवाब (नाराज़ होकर) 'अब मुझ से भी तुम मज़ाक़ करने लगे।'

मुनीर : 'मेरी क्या मजाल। मगर नवाब चाहे मार डालो मुझे यक़ीन नहीं। मैं फ़क़ीरों को मानता नहीं। देख लीजियेगा इनमें कुछ न कुछ फ़रेब ज़रूर है।'

खलीफ़ा : 'लाहौल वला कुव्वत! शाह साहब ऐसे नहीं हैं।'

नवाब : 'ख़ुदा माफ़ करे। करामत अली शाह साहब की तरफ़ से तो मैं ख़ुद क़सम खाता हूँ कि वह फ़रेबी नहीं हैं।'

मुनीर, करामत अली शाह का नाम सुन के ख़याल में आ गये। खलीफ़ा ने नवाब की तरफ़ एक ज़रा नाराज़ होकर देखा। मतलब यह था कि नाम क्यों बता दिया। नवाब कुछ शर्मिन्दा होकर इधर उधर देखने लगे।

का सिलसिला खतम हो गया ।

आज के दिन और कोई वाक़या ऐसा न हुआ जो लिखने के लायक हो । सिर्फ़ एक बात याद रखने लायक है कि वसीका को दिन भर नवाब साहब के घर पर रहे । एक दम के लिए भी जुदा न हुए ।

इक्कीस

आज शाम को वायदे के मुताबिक करामत अली शाह साहब से मुलाकात हुई । शाह साहब बहुत ही नाराज दिखलाई पड़े । नवाब साहब को देखते ही बोले "आखिर आपके मिजाज से बचपन अभी तक नहीं गया । यह आप की बातें हैं । इनको मज़ाक न समझियेगा । अभी सवेरा है कहिये तो किसी न किसी तरह रोक दूं । बेदर्द आमिलों की तरह मुझे पसंद नहीं । किसी को बेगुनाह जला देना या क़ैद करना मैं हरगिज गवारा नहीं करता । आखिर जिन भी तो खुदा के बनाये हुए हैं । अलबत्ते इस शौक से शुरू से आज तक मैंने जिन कौम में से किसी को तकलीफ़ नहीं दी क्योंकि आशिकी का मामला शुरू होता है । माशूक को आशिक से जुदा करना मेरी राय में बड़ा गुनाह है । लेकिन आपके बुजुर्गों से साहब सलामत थी । छम्म-छमा को किसी तरह रोक ही दूंगा या उसके माँ बाप से खबर कर दूंगा वह मना करेंगे । आपको बाजारी औरत का इश्क़ काफी है । वाह नवाब साहब मैं आपको ऐसा न समझता था । खैर अभी सवेरा है, मुझे इस बुढ़ापे में झंझट में न डालिये ।

नवाब साहब को नाराजगी की वजह थोड़े ही लफ्जों के बाद मालूम हो गई। भेद खोलना एक ऐसा जुर्म है जिसकी माफी मुश्किल से हो सकती है। सब्ज-कबा को रोक लेना शाह साहब ने तो मुँह से कह दिया मगर दिल पर खुदा जाने क्या गुजर गई। बाग-ए-इरम और पन्ने के महल का खयाली नक्शा और उसकी सुनहरी सजावट में सब्ज-कबा का बसना आँखों के सामने नाच रहा था। दिल ही में कह रहे थे, भला यह क्योंकर हो सकता है कि सब्ज-कबा रोक दी जाय या उसके माँ बाप को खबर की जाय। हाय! सब्ज-कबा पर नाराजगी पड़ेगी। मेरी चाहने वाली को सदमा पहुँचे यह मुझे क्योंकर गवारा हो सकता है।

मगर हाल यह है कि मुँह से बात नहीं निकल सकती। बड़े नाज-नखरों में परवरिश पाई। हमेशा आस पास खुशामदियों का जमाव रहा। जो बात की बुरी या भली सिवाय तारीफ के किसी ने भूले से मुँह तक नहीं कहा। मौलवी साहब जिनसे कभी पढ़ते थे मियाँ-मियाँ कहते उनका मुँह खुश्क होता था। कानों ने कभी इस तरह की बातें न सुनी थीं जो आज शाह साहब की जबान से सुनीं। दूसरे इस मामले में इश्क की चोट लगी हुई थी। सब्ज-कबा की झलक देख भी चुके थे। बखूबी चाहने के काबिल है। दिल पहले ही से नरम था। दूसरे भेद का खुल जाना बावजूद खलीफा जी के समझाने के खुमार की हालत में हो गया था। उसकी वजह से अपना दिल खुद ही धिक्कार रहा था। एक दम आँसू जारी हो गये शाह साहब का दिल पत्थर का न था जो एक कम-उम्र साहबजादे को रोते देख कर न पसीजता। खलीफा जी का हमदर्द मुसाहब पास था। उसके इशारे और निगाहें शाह साहब से भोले नवाब की सिफारिश कर रही थीं। खुलासा बात यह कि शाह साहब बोले 'हा बाबा आप रोते हो।

इस बात से आँसू और भी बहने लगे। गरम आँसुओं की बूँदें गालों से गालों पर बह कर दामन पर टपकने लगीं।

खलीफा (नवाब) 'हुजूर रोइये नहीं। शाह साहब ने सिर्फ नसीहत की राह से कहा था। शाह साहब खुदा के लिए हमारे नवाब को न रुलाइये।

दूसरे दिन कमरे में सफेदी हुई। हरा रंग फिरवाया गया। फिर कमरा शाह साहब के कहने के मुताबिक बन्द कर दिया गया।

बाईस

इश्क़ का मज़ीद बाज़ार है बात किसी की क्यों सुनें।
दस्त ब दस्त इश्क़ है राहज़नों से क्या ग़रज़॥
सुना है आज यह बेपर्दा रूबरू होंगे।
निगाहें शौक़ को हैरानियाँ मुबारक हों॥

आठ दिन पूरा पूरा करके कटे। ख़ुर्शीद से मिलना छोड़ दिया गया। और कोई बात इस हफ़्ते की लिखने लायक नहीं है।

आठवें दिन जुमे को शाम के वक़्त ख़लीफ़ा जी और नवाब साहब मामूली तौर से शाह साहब के मकान पर जाते थे। गोमती के उस पार काफ़ी बड़ी झाड़ी हुआ करती थी वहीं जानी की गई। दोनों रवाना हुए। उस वक़्त रात हो गई थी। चाँदनी छिटकी हुई थी। सड़क से शाह साहब के मकान को जाते हुए कोई आधे रास्ते पर दाहिनी तरफ़ दूर से कोई चीज़ चमकती चमकती नज़र आई। नवाब और ख़लीफ़ा दोनों का ध्यान उस तरफ़ गया।

ख़लीफ़ा : देखिये तो यह क्या पड़ा है ?

नवाब : कुछ होगा, चलिये भी।

इन्हीं दो बातों में दोनों पास पहुँच गये। अब साफ़ साफ़ नज़र आया। एक छोटी सी डिबिया पड़ी हुई थी।

ख़लीफ़ा : यह डिबिया उठाइये।

नवाब : 'आती साहब रास्ते की कोई चीज न उठाना चाहिये ।

खलीफ़ा : 'उठाइये तो, देखकर फिर फेंक दीजियेगा ।

नवाब ने कुछ समझ के डिबिया उठा ली । खोल के जो देखा तो एक पन्ने का लटकन उसमें रक्खा हुआ था ।

ख़लीफ़ा 'लीजिये मुबारिक हो । यह आप ही के वास्ते है । परी ने अपना गुलाम कर लिया ।

अब क्या है, नवाब की बाछें खिल गईं । लटकन को कई बार देखा । जी चाहता था चूमे आँखों से लगाएँ मगर ख़लीफ़ा के सामने जरा शर्म आई, डिबिया जल्दी से जेब में रख ली ।

ख़लीफ़ा : 'मगर अब काम बिगड़ना पड़ा । अच्छा तो इस मामले में शाह साहब से सलाह लेना ज़रूरी है ।

नवाब : 'काम तो मेरा बिगड़ा हुआ है ।'

ख़लीफ़ा : 'अब ही तो लटकन आया वरना कोई और अगर बाजूबन्द वग़ैरह आया होता । नवाब वल्लाह तुम्हारे मुह पर लटकन क्या ही मजा मालूम होगा ।

नवाब इसका क्या जवाब देते मगर दिल में बहुत खुश हुए । खुश खुश शाह साहब के पास पहुँचे । जाते ही डिबिया खोलकर लटकन दिखाया ।

शाह साहब 'जी हाँ अब नजर भेंट का सिलसिला जारी हुआ । आज रात को यहाँ से जाके नहाइये । हम्माम में बहुत एहतियात कीजियेगा । एक मर्तबा पानी से और एक मर्तबा केवड़े गुलाब से नहाइयेगा । तहबंद बाँधे हुए कोठे पर चले जाइये । हम्माम के वक्त से कोठे पर जाने तक किसी से बात न कीजियेगा । किसी औरत का परछावाँ न पड़ने पावे । आज रात को परी का दीदार आपको नसीब होगा मगर पूरे वक्त से एक क़दम आगे न बढ़ाइयेगा । वरना सब कारखाना उसी वक्त तितर बितर हो जायगा । न बात करने का इरादा कीजियेगा । अब सामना रहे उस वक्त छींक अँगड़ाई और जम्हाई लेने से एहतियात कीजियेगा क्योंकि यह काम परियों की तबीयत के ख़िलाफ़ है । परियों की शराब की शीशी तिलस्मी संदूक़चे में मिलेगी उसे पी लीजियेगा । इसका

किराये पर हो जायेगा ।'

अमजद : 'किराया कैसा ? मैं तो जानता हूँ गिरवी रख लीजिये ।'

महरी 'यह गिरवी काहे को रखने लगीं ।'

अमजद 'इससे तुम्हें क्या मतलब ? मैं तो गिरवी करा दूँगा ।

महरी : 'ए हटो, तुम क्या जानो ।

अमजद : 'लो हम जानते ही नहीं । हमारी खाला का तो मकान है ।

महरी 'हाँ ए लो सच तो है । उम्दा खानम तुम्हारी खाला हैं । अहा ! यह तो मुझे याद ही न था । अच्छा तो सब बात बन जायगी ।

नबीबख्श 'यह कौन उम्दा खानम ?

अमजद 'हमारी खाला । मिर्ज़ा क़ुर्बान अली साहब की जोरू ।

नबीबख्श : 'हाँ तो यह कहो । क़ुर्बान अली तुम्हारे खालू थे ।

हकीम साहब (नबीबख्श से) 'यह कौन क़ुर्बान अली ।

नबीबख्श 'ए हुज़ूर जिनका जरदोज़ी का कारखाना था ।

हकीम साहब 'तोप दरवाज़े में ।

नबीबख्श 'जी नहीं ।

हकीम साहब : 'उनका एक लड़का भी तो कलकत्ते में है ।

अमजद : 'वह मुद्दत हुई मर गया ।

हकीम साहब 'तो जायदाद साफ़ है । किसी तरह का कोई झगड़ा तो नहीं ।

अमजद 'जी कोई झगड़ा नहीं । भला ऐसी बात है । यह तो मेरे सामने का मामला है ।

हकीम साहब 'अच्छा उम्दा खानम राज़ी हो जायेंगी ।'

अमजद 'मैं राज़ी कर दूँगा ।

हकीम 'मगर वह बिचारी क्या स्वीकार करेगी ?

अमजद 'ज़ाहिर में तो कोई रक़म अदा करने की मालूम नहीं होती ।

हकीम साहब 'और मुनाफ़ा क्या देंगी ?

अमजद : 'हुज़ूर मुनाफ़ा वुनाफ़ा कुछ नहीं । न आपका सूद न उनका

किराया।

हकीम साहब : 'लाहौल वला कूव्वत। सूद कैसा ?

ममबर : 'जी हाँ भूल गया। यही मुनाफ़ा।

हकीम साहब : 'नहीं नहीं दो रुपया सैकड़ा पर राज़ी करो।

ममबर 'देखिये मैं कहूँगा मगर वह जितना मैंने कहा है उसी पर राज़ी होंगी।

नबीबख्श 'हुज़ूर मामला है। देख लीजिये मकान बुरा नहीं है।

हकीम 'कितने तक यह रहन हो जायगा।

ममबर 'तीन सौ रुपये पर।

हकीम : 'इतने की तो मालियत नहीं है।

ममबर : 'हुज़ूर के कहने की बात है ? तीन सौ से ज्यादा का तो पानी उसमें खर्च हुआ होगा। ईंट मसाले की गिनती नहीं।

नबीबख्श : 'कोई डेढ़ हज़ार का मकान है।

ममबर : 'दो सौ रुपये पर।'

हकीम : 'मकान की हैसियत तो इतने की नहीं मगर इस मामले की तरफ से कुछ बात भी नहीं।

नबीबख्श 'इस वक्त अपना काम निकालना है। मकान से आपको क्या गरज़। मगर यह मौका ऐसा है कि जो बात आप चाहते हैं वह हो जायगी।

हकीम (कुछ सोचके) : 'हूँ।

महरी 'हैं नहीं ऐसा मौका मुश्किल से मिलता है। यह आपकी किस्मत है।

नबीबख्श : 'वल्लाह सच कहती हो। फिर मियाँ तो हमारे हैं नसीबेवर।

ममबर मियाँ नबीबख्श इस मकान की वजह से इस वक्त सोलह आने का काम बनेगा।

जब तक इन लोगों में यह बेकार बातें होती रहीं हकीम साहब को पहली मामले के बारे में जिक्र करने का वक्त मिल गया। आख़िर सर उठाया।

हकीम साहब : 'मगर हाँ यह तो कहो मकान पर जिसका क़ब्ज़ा रहेगा

ममदार 'आपका कब्ज़ा रहेगा और किसका कब्ज़ा रहेगा।

नबीबख्श (पीनक से सर उठाके) 'हाँ यही मैं भी गौर कर रहा था।'

महरी 'तुम तो कुछ बाली हो कब्ज़ा किसका रहता ? जो रहन रक्खेगा उसी का कब्ज़ा रहेगा। यह तो सारी दुनियाँ का दस्तूर है।

हकीम साहब (बात के पहलू को बदल के) 'कब्ज़ा तो रहेगा और मुनाफ़ा ?

महरी 'न आपका मुनाफ़ा न उनका किराया।

हकीम साहब 'सुनो जी महरी बात यह है कि उस मकान की हैसियत इतने किराये की नहीं है। मुनाफ़ा कम से कम दो रुपया सैकड़ा तो हो। इस हिसाब से चार रुपये माहवार पड़ा।

महरी 'मैं कहती हूँ हकीम साहब तुम कैसी कैसी बातें कर रहे हो। हमने तो आपके फ़ायदे के लिये एक बात ठहराई। आप मुनाफ़े को देखते हैं।

हकीम साहब 'यह सब सच है मगर मामला मामले की तरह होगा। मेरी राय में उन्हें सौ रुपये पर राज़ी करो।

सौ रुपये का नाम सुनकर ही महरी का मुँह फूल गया। त्यौरी चढ़ गई। मियाँ ममदार की भवस्सों पर दोहरे-दोहरे बल पड़ गये। मियाँ नबीबख्श को अगरचे बाहिर से इन मामलों से कोई ताल्लुक न था मगर फिर भी नथुने फुलाकर गर्दन फेर ली और हाथ के पर्दे से जल्दी-जल्दी चिलम को फूँकने लगे।

वाकई हमारे हकीम साहब मामले के बारे में बड़े सख्त थे। तमाम उम्मीदें इस मकान के रहन रखने पर निर्भर थीं मगर जी यही चाहता था कि जिस तरह बन पड़े रुपया कम खर्च हो और मुनाफ़ा पूरा मिले। मगर जब कमेटी के सब लोगों का रंग देखा तो कुछ और ढले।

हकीम साहब : 'अच्छा यह तो देखो उस मकान का किराया क्या है ?

महरी 'तीन रुपये महीना।

हकीम साहब : 'अच्छा तो खैर। डेढ़ ही ले लें।

महरी 'यह मामला न होगा। जाने दीजिये।

अमजद : 'जाने क्यों दीजिये। देखो हम फ़ैसला किये देते हैं। दो दो आप दीजिये हम चार रुपये महीने का सरबत कराये देते हैं।

हकीम साहब : 'हाँ ठीक है।

नबीबख्श : 'भई क्या बात निकाली है। देखिये हमारे फ़रिश्तों के दिमाग में भी यह बात न आई थी। भई क्या बात को सुलझाया है।'

महरी : 'अच्छा फिर सरबत लिख देंगी तो रहूँगी भी उसी में ?

अमजद : 'और रहने कहाँ जायेंगी ?'

महरी : 'तो यह बात तो न हुई।

हकीम साहब 'एक मुश्किल से निकल कर दूसरी मुश्किल में पड़े। क्योंकि इस मकान के लिए असली मतलब तो यही था कि बेगम साहिबा को सोने की जगह कोई सुरंग लगाई जाय।

मगर मियाँ अमजद ने आज हकीम साहब की मददगारी का बीड़ा उठाया। फ़ौरन इस मुश्किल को हल कर दिया।

अमजद : 'अच्छा क्या खासी बात है। इसका बंदोबस्त भी हम कर देंगे। यह तो हमारे घर की बात है। जब आपका जी चाहे तशरीफ़ लाइयेगा। हम मकान पर पर्दा करा दिया करेंगे।

हकीम साहब (यह सुनकर चेहरे पर खुशी के आसार ज़ाहिर हुए) 'हाँ यह बुढ़िया तो है एक कोने में है पड़ी रहेगी।

नबीबख्श : 'यह भी खूब है इसलिए कि किरायेदार रखा जाता तो वह अपने घर में काहे को आने देता। खाली मकान पड़ा रहता तो रात को सोने के लिए आदमी नौकर रखना पड़ता। (दिल में सोचा हकीम साहब और आदमी तो क़यामत तक नौकर न रखते। मुझ ही को नाहक़ तकलीफ़ देते)

हकीम साहब : और यह तो कहो किराया कहाँ से अदा करेंगी।

अमजद 'उनका वसीका कलकत्ते से खर्च मिलता है उसमें से अदा करेंगी।

हकीम साहब : 'क्या महीना आता है।

अमजद : 'पाँच रुपया।

हकीम साहब : 'पाँच रुपये में से चार रुपया तो किराया दूँगा और बार्देगी नहीं।'

ममदव : 'खुदा सब को देने वाला है।'

हकीम साहब : 'यह सही है मगर देखने में'

ममदव (बात टेढ़ी बदल कर) : 'आप तो आम पूछते हैं, आम भी पेड़ पूछते हैं। आपको इन झगड़ों से क्या? किराया अपना छः महीने चार रुपये महीने के हिसाब से अब ले लीजियेगा।'

हकीम साहब : 'छः महीने?'

ममदव : 'छः महीने तो कलकत्ते के खर्च आता है। वह छः महीने आपको देंगी।'

हकीम : 'अच्छा यों भी सही।'

हकीम साहब को कुछ देर के लिए इस मामले में जरा अंदेशा हुआ था मगर इस ख्याल से कि मकान से कम से कम चार तो रुपये की लकड़ी है ईंट भी कम से कम सवा सौ रुपये की निकल ही आएगी। अगर किराया न वसूल होगा नालिश करके मकान को कुर्क कराके नीलाम पर चढ़ा दूँगा। फिर अपने ही नाम छुड़ा लूँगा। बुढ़िया का मकान अब कहीं नहीं मिलता।

इसके बाद थोड़ी देर तक मुद्दत के बारे में बातचीत हुई कि कितने दिन के लिए रहन हो। आखिर दो बरस पर तय हुआ। मामले का फैसला पूरा होगा मालिक की रजा ही पर रहा। चलते वक्त मिर्जा ममदव ने पाँच रुपये बतौर पेशगी वसूल किये।

हकीम साहब मकान में तशरीफ ले गये। बाहर बातचीत बंद हुआ। पाँच रुपये का उसी वक्त हिस्सा बाँट हो गया। तीन रुपये मिर्जा ममदव के हिस्से में आये। एक बी महरी ने अपने बटुए में डाला। एक मिर्जा नबीबख्श ने अपनी अंटी में लगाया।

चौबीस

रजिस्ट्रार के दफ्तर में एक डोली रखी हुई है। एक बांदी नौकरानी डोली के पास बैठी है। जुम्मनखाँ अर्जी-नवीस ने रहन-नामा लिखकर तैयार किया है। हकीम साहब गाड़ी में तशरीफ रखते हैं। मियाँ अमजद ने रहन नामे पर निशानी बनाई है। कागज रजिस्ट्रार साहब के हाथ में पहुँचा है। चंद ही मिनट के बाद पुकार हुई। उम्दा खानम की डोली रजिस्ट्रार साहब के सामने गई।

रजिस्ट्रार 'उम्दा खानम रुपया पाया।

उम्दा खानम (डोली में से) 'हुजूर अभी बीस रुपये पाये हैं। यह उसकी रसीद है। बाकी एक सौ अस्सी रुपया इस वक्त हुजूर के सामने दिया जायगा।

हकीम साहब 'एक सौ अस्सी रुपये गिनकर उम्दा खानम को देते हैं।

उम्दा खानम (डोली के अन्दर रुपयों को गिनकर): हुजूर पाया।'

रजिस्ट्रार 'कितना रुपया है।

उम्दा खानम 'ऐसा कि चार पच्चीस पच्चीस और चार बीसी।

अमजद वो नहीं एक सौ अस्सी हुए ना?

रजिस्ट्रार (अमजद से): वेल तुम कौन हो?'

अमजद 'हुजूर यह मेरी खाला है।

रजिस्ट्रार: 'तुम शनाख्त करता है?'

अमजद: हुजूर।

रजिस्ट्रार 'तुमको कौन पहचानता है?

जुम्मन (अर्जी-नवीस आगे बढ़के): 'हुजूर मेरी शनाख्त है।

रजिस्ट्रार : 'जन्नत खानम की कोई और पहचान भी है ?'

मुन्नूलाल : 'हुजूर बाँये हाथ की कलाई के पास एक स्याह तिल है।'

रजिस्ट्रार : 'दिखा सकता है ?'

मुन्नूलाल (डोली की तरफ मुँह करके) : 'जन्नत खानम हाथ दिखाओ।'

डोली से हाथ बाहर निकाला। रजिस्ट्रार साहब ने चश्मा लगाकर स्याह तिल को देखा।

रजिस्ट्रार (कागज की पुश्त पर इबारत लिखकर) : 'और यह दूसरा कागज कैसा है ?'

मुहर्रिर पेशी : 'यह सरखत है।'

रजिस्ट्रार : 'कातिब का नाम।'

मुहर्रिर पेशी : 'जन्नत खानम।'

रजिस्ट्रार साहब ने रहननामा और सरखत दोनों कागजों की तसदीक की। इबारत अंगरेजी में दस्तावेज की पुश्त पर लिखी। दोनों कागज दफ्तर में गये। फीस की रसीद हकीम साहब के नाम लिखाई गई। रहननामे की गवाही रहन करने वालों की पहचान यह सब बातें बाकायदा तय हो गईं। मकान में दूसरे ही दिन से मजदूर लगा दी गई। टूट फूट की मरम्मत होने लगी। मरम्मत के साथ ही साथ और कुछ जरूरी फेरफार मकान में किये गये।

जाते के थे। दूसरे दालानों पर दोनों तरफ़ कोठे पर एक-एक कमरा बना हुआ था। उसके आगे सायबान था। हर एक के सामने छोटा सा सहन था और मकान के सहन की तरफ़ कनाती दीवार पर्दे की थी। रास्ता दोनों कमरों का दो अलहदा-अलहदा जीनों से था। दोनों कोठों पर दो गिरस्ती अलग-अलग रह सकती थीं। नीचे का मकान बिलकुल खाली छोड़ दिया गया था। एक तरफ़ का कमरा उस सहन के कोठे से लगा हुआ था जिसमें बेगम साहिबा रहती थीं। और दूसरी तरफ़ का कोठा दीवानख़ाने से मिला हुआ था जिसमें [illegible] छोटे नवाब तशरीफ़ रखते थे। शाह साहब ने इसी दीवानख़ाने के ऊपर के कमरे की सजावट का हुक्म दिया था। यह एक छोटा-सा कमरा था। उसके सामने नवाब साहब के कहने से काठ का सायबान हरे रंग का लगा दिया गया। मगर कमरे में सब्ज़ रंग भरवा दिया गया। इसके बाद सुगन्ध की चीज़ें सुलगाकर कमरा बन्द कर दिया गया। तीन दिन परिस्तानी सजावट के लिये दिये गये। चौथे दिन जुमेरात को शाम के वक़्त कमरा खोला गया। अब जो देखा तो कमरा दुल्हिन की तरह सजा हुआ है। हरी [illegible] सब्ज़ चमकते हुए पर्दे सब्ज़ काम [illegible]—मख़मल की एक जाजम [illegible] था। ताकों और व किटों पर तरह-तरह के गुलदस्ते चुने हुए थे। सायबान में चीनी की नांदों में सुनहरी और रुपहली पत्तों के पेड़ लगाये हुए थे। एक तरफ़ पन्ने के पायों की पलँगड़ी लगी हुई थी। पलँगड़ी के सामने तिलस्मी दरवाज़ा बना गया था। इस तिलस्मी दरवाज़े की बनावट अजीबो ग़रीब थी। एक महराबदार दरवाज़े की बनावट थी। महराब के सिर पर निहायत ही ख़ूबसूरत गोल क्लाक लगी हुई थी। दरवाज़े के दोनों पट, पन्ना के शीशे के थे। सुनहरी बटके लगे हुए थे। महराबदार हिस्सा अलहदा पटों से खुलता बन्द होता था। उसकी बनावट एक संदूकचे के मानिंद थी। उसमें एक तिलस्मी ताला लगा जिसे मामूली बोलचाल में हरफ़ों का ताला कहते हैं। इस ताले के हर्फ़ शाह साहब ने नवाब साहब को बतलाये थे। घड़ी के एलार्म का भेद भी नवाब साहब को मालूम था। कभी-कभी यह एलार्म अपने आप बजाता था। उसके साथ ही बहुत ही सुहावनी गत बजती थी। यह परिस्तान से किसी के आने का संकेत था। नवाब साहब महराब वाले संदूकचे

को बालते थे। उसमें से या चिट्ठी मिलती थी या कोई और चीज। जैसे अंगूठी या इमदान या सिगरेटों या परियों की शराब की शीशी या और कुछ।

कमरे के बाहर के कोठे के सहन में एक बंगला डाला गया था। इस बंगले में एक संदली तख्त बिछा हुआ था। उसके बीच में एक हौज कोई सवा गज लम्बा और सवा गज चौड़ा था जिसमें केवड़ा गुलाब भरा रहता था। यहाँ नवाब साहब का दो बार नहाना होता था। बंगले में खड़ाऊँ, तौलिया तहबंद आइना कभी इत्र तेल साबुन वगैरह सब सामान नहाकर पोशाक पहनने का मौजूद था। खास पोशाक भी यहीं रहती थी।

नवाब साहब यहाँ नहाने के बाद कपड़े बदलकर ठीक बारह बजे कमरे में दाखिल होते थे। तिलस्मी दरवाजे की तरफ मुँह करके पलंगड़ी पर बैठते थे। कुछ मिनट बाद एलार्म बजता था। नवाब साहब तिलस्मी संदूकचे का ढकना खोलते थे। उस वक्त मामूली तौर से एक शीशा शराब का मिलता था। उसको एक पन्ने की प्याली में घूंट-घूंट करके पीते थे और फिर नशे की हालत में अपनी जगह पर बैठ कर झूमा करते थे।

तिलस्मी दरवाजे की तरफ से हारमोनियम और पियानो के बजने की आवाज आती थी। कभी ऐसा मालूम होता था जैसे कोई नाच रहा है। पर्दे और तोड़े साफ सुनाई देते हैं कभी-कभी परी का दीदार भी हो जाता है। परी का लिबास धानी या हरा सितारे टंके हुए। हरी रोशनी में सितारों का चम चमा अजब बहार देता था। कभी कुछ धुंधला सा होता था जैसे वही चन्द्रमुखी जिसको टूटे खंडहर में देखा था बहुत बढ़िया पोशाक से सजी हुई, पन्ने के किवाड़ों की आड़ में खड़ी मुस्कुरा रही है। दो तीन मिनट से ज्यादा दीदार न होता था। इसके बाद वह बला की सूरत फिर नजरों से गायब हो जाती थी। कभी दो मर्तबा कभी तीन मर्तबा कभी सिर्फ एक ही बार सामना होता था। ऐसा भी इत्तफाक हुआ है कि नवाब साहब रात भर टकटकी बाँधे बैठे रहे और एक झलक देखना नसीब न हुआ। जब कभी ऐसा होता था नवाब साहब शाहजी से शिकायत करते थे। शाह साहब गायब होने की वजह बतलाकर दिल की तसल्ली कर देते थे।

शाह साहब 'शाहब वह तो आप पर जान देती है। उसका जी तो यह चाहता है कि दिन रात आपकी सूरत देखा करे। मगर क्या करे, पराये बस में है। माँ बाप की सख्त कैद उस पर तुर्रा यह कि घनश्याम जोशी की शरारत से और भी नाक में दम है। कमबख्त नीलागिरि की चोटी पर रास्ते में उसके बैठने की जगह है। रास्ता रोके बैठा रहता है। उसी तरफ़ से आना जाना ठहरा।

नवाब : 'यह घनश्याम जोशी कौन है ?'

शाह साहब 'ज़ालिम बुरी बला है। जादूगरी में अपना सानी नहीं रखता। हिमालय पहाड़ की एक चोटी बहुत ही ऊँची है। वहाँ उसका स्थान है। जो परी उधर से निकलती है उसको रोकता टोकता रहता है।

नवाब : 'फिर आप इस मरदूद का कोई बन्दोबस्त नहीं करते ?

शाह साहब 'जी हाँ आपसे पहले मुझे उसका खयाल है मगर उसकी तदबीर आप ही के हाथ में है।

नवाब 'फिर जो हुक्म हो किया जाय।

शाह साहब 'कुछ दिनों देश विदेश की सैर है।

नवाब 'मैं हर तरह मौजूद हूँ जब आप कहें।

शाह साहब 'हाँ अभी इसका वक्त नहीं आया। मैं आपसे खुद ही कह दूँगा। मगर ऐसा न हो कि वक्त पर आप निकल जायें।

नवाब : 'वाहील वला कुव्वत आपके कहने की बात है।

खलीफ़ा (शाह साहब से) : 'इससे आप इत्मीनान रक्खें। जिस वक्त कहियेगा आपके साथ हो जायेंगे।

शाह साहब और, हाँ खूब याद आया। आपकी माँ मैंने सुना है, मुर्शिदाबाद जाने वाली हैं।

नवाब 'जी हाँ दस बारह दिन में जायेंगी।'

शाह साहब 'वहाँ कहीं आपकी शादी ठहरी है।'

नवाब 'मुझे मालूम नहीं।

खलीफ़ा जी हाँ ऐसा ही कुछ सुना गया है।'

शाह साहब 'और यह शादी कहाँ ठहरी है ?

खलीफ़ा 'नवाब साहब के मामा की लड़की है। आपके मामा बड़े भारी अमीर हैं। करोड़ों की जायदाद है। और उनकी एक इकलौती लड़की है। बचपन से आपके साथ मँगनी हुई है। बेगम साहिबा से कुछ बिगाड़ा था मगर आपके वालिद के इन्तक़ाल के बाद वह खुद यहाँ मातमपुर्सी के लिये आये थे। तब से सफ़ाई हो गई। अब उन्होंने खुद शादी का तक़ाज़ा किया है।

इस बात को सुनकर शाह साहब बहुत ही नाराज़ हुए।

शाह साहब : 'तो फिर मुझे माफ़ कीजिये। आपने सब्ज़-बाग़ से मुफ़्त मुझे परेशान्या किया।

नवाब 'वालिदा कहा करें। मैं तो शादी न करूँगा।

शाह साहब 'देखिये इस बात से न फिर जायेगा वरना ग़ज़ब हो जायगा।

नवाब 'मैंने तो आपसे कह दिया। दुनियाँ फिर जाय मैं न फिरूँगा।

खलीफ़ा 'नवाब की तरफ़ से ख़ातिर जमा रखिये। जो वायदा करेंगे वही होगा।

शाह साहब 'और अगर न हो तो किसका नुक़सान होगा ?

खलीफ़ा : 'यह भी सही है।

शाह साहब : 'सब्ज़-बाग़ के बिगाड़ने में सरासर नुक़सान है। पहले तो बेशुमार दौलत जो आपको मिलने वाली है न मिलेगी। दूसरी मुश्किल यह है कि दुश्मनों की जान पर, ख़ुदा जाने क्या बन जाए।

खलीफ़ा जी 'ठीक फ़रमाते हैं मगर हुज़ूर, अभी तक तो इंतज़ार है। सिर्फ़ उम्रभर की यहाँ भी आड़ से बेबाभाली हो जाती है। कोई सूरत ऐसी निकलती कि सदा के लिए मिलाप का ढंग बैठ जाता।

शाह साहब 'इस क़दर जल्दी ! इतनी जल्दी,— मौज मौज

चंद कलमे इस ढंग से शाह साहब ने कहे कि नवाब साहब और खलीफ़ा जी दोनों घबरा गये। खुद शाह साहब के चेहरे पर फ़िक्र के निशान पाए जाते थे। बड़ी देर तक ज़ोर-ज़ोर से कुछ पढ़ा किये। थोड़ी देर के बाद मुस्कुरा के बोले :

'हाँ मरदूद था।'

नवाब साहब : 'और तो है ?'

शाह साहब : 'जी खैरियत है। वही कमबख्त घनश्याम जादूगर। मगर कमबख्त कमीने की हकीकत क्या। आखिर भाग गया वह भी।'

खलीफ़ा 'मुनासिब हो तो कुछ ज्यादा हाल बतलाइये।'

शाह साहब 'इस वक्त सब्ज-नवा के बाग से बाजे अंगूर और सेब टूट कर आये थे। मुहब्बत बुरी बला है। हुक्म दिया—पहले खासी नवाब के लिए ले आओ। वह लिए आता था। रास्ते में घनश्याम ने रोक लिया। दोनों में देर से झगड़ा हो रहा था। वह कहता था मैं ले लूँगा। जिन कहता था—मैं न दूँगा। मैं आपसे बातों में लगा था। वह देर से चीख रहा था। इत्तफ़ाक से मेरे कानों में आवाज पड़ गई। मैंने उसे डाँटा। आखिर मर्दूद दब गया।'

खलीफ़ा 'मगर हुजूर यह रोज रोज का झगड़ा बुरा। इसका नतीजा क्या होगा ?'

शाह साहब 'नतीजा अच्छा होगा। कुछ दिन के लिये मुझे पहाड़ पर जाना होगा। मगर मुझे एक फ़िक्र है कि मौका पाके मर्दूद कहीं नवाब को नुकसान न पहुँचावे।'

खलीफ़ा जी : 'हुजूर यह क्या कम है ? लोग तो दस दो सब का परकोटा खींचते हैं।'

शाह साहब 'मुरशिद की मेहरबानी से जहाँ मैं हूँ, वहाँ से बारह सौ कोस के आस पास कोई जादू-टोना शैतान और कोई भूत पलीत मतलब यह कि किसी का कोई बस नहीं चल सकता। मगर डर इस बात का है कि अगर किसी दिन मैं दूर चला गया और नवाब इस परकोटे से बाहर हो गये तो वह कमबख्त अपनी कर गुजरेगा।'

खलीफ़ा जी 'हाँ मैं यह न समझता था।'

नवाब 'फिर मैं आपके साथ ही साथ रहूँगा।'

शाह साहब : 'इससे बेहतर और क्या हो सकता है। मगर अभी इसका मौका नहीं आया है। जब मुनासिब होगा मैं आप से कहूँगा। और एक मतलब

मशहूर है—'अपनी कमियों को पूरा करने के लिए बहुत सफ़र की ज़रूरत है।' नवाब साहब माफ़ कीजियेगा। फ़क़ीर के साथ एक सफ़र कीजिये। उम्मीद है कि फ़ायदे से खाली न होगा।

खलीफ़ा जी 'बेशक उम्र भर का तजुर्बा हो जायगा। मगर हुज़ूर से एक अर्ज़ मेरी भी है कि इस सफ़र में मैं भी साथ रहना चाहता हूँ।

शाह साहब 'क्या हर्ज है। मगर एक बात है बुरा न मानियेगा। खास खास मौक़ों पर आपको न ले जाऊँगा।

खलीफ़ा 'मैं हर सूरत से आपके हुक्म के ताबे हूँ। जो हुक्म होगा उससे बाल भर भी इधर उधर न होगा।

शाह साहब 'आपकी सआदतमंदी से यही उम्मीद है। अच्छा अब जाइये। परिस्तान का मेवा आपको कमरे में मिलेगा। खलीफ़ा जी को इजाज़त है। आपके और इनके सिवा और कोई न जाए।

नवाब : 'अगर हुक्म हो तो हुज़ूर के लिये थोड़ा सा भेज दिया जावे।

शाह साहब 'फ़क़ीर सिवाय जौ की रोटी और नमक के कुछ नहीं खाता। बाल बच्चे रखता नहीं फिर मुझे भेजके क्या कीजियेगा?

सत्ताईस

आज महल में खूब धमाधमी है। बेगम बहुत खुश हैं। मामूली नौकरों-चाकरों के अलावा कुछ लोग बाहर से आये हुए हैं। तीन औरतें महल में हैं और दो मर्द मियाँ करीम खाँ के पास। यह पाँच आदमी मेहमानों के तरीक़े पर हैं।

औरतों में से एक बहुत बूढ़ी है। दूसरी अधेड़ और तीसरी जवान है। बूढ़ी औरत से बेगम बहुत ही हिला-मिलाके साथ बातें कर रही हैं।

बेगम : 'खुदा की मेहरबानी से अब मेरे छुट्टन की उम्र कोई सत्रह बरस से कुछ ऊपर है।

बूढ़ी औरत : 'साहबजादी की भी चौदहवीं साल की गिरह अब की माह रजब में मनाई गई है।

बेगम : 'हाँ यही तीन बरस का छुटापा बड़ापा है। छुट्टन तीसरा बरस के चौथे में था जब यह पैदा हुई है।

मुगलानी : 'मेरी आँखों में खाक! कुछ जोड़ है।

चिट्ठी-नवीस : 'इसमें क्या शक है।

बेगम (बूढ़ी औरत से) : 'अच्छा तो माई की जो मर्जी हो। नवाब की बरसी तो हो जाय।

चिट्ठी-नवीस : 'जी हाँ। इधर तो कुछ हो भी नहीं सकता। यही तो मजबूरी है।

बी मुगलानी : 'दूसरी मुश्किल यह है कि छोटे नवाब का अठारहवाँ साल शुरू हो जायगा।

बेगम : 'हाँ इसे भी ठीक तो कहा इसका मुझे खयाल ही न था।

बड़ी अम्मा (यह बूढ़ी औरत बेगम की भाभी की अम्मा है) : 'बेगम इसमें बहुत देर होगी।

बेगम : 'तो फिर क्या करूँ?'

बड़ी अम्मा : 'निकाह कर दीजिये। ब्याह जब जी चाहे कीजियेगा। छोटे नवाब को पाबंद तो कर दीजिये। आपके भाई साहब को यहाँ का सब हाल मालूम है। नहीं मालूम कौन है जो सब हाल खत में लिख भेजता है? इसलिये तो उन्होंने जल्दी करके मुझे भेजा है।

बेगम : 'हाँ भैया जो समझे हुए हैं यह बात बिलकुल ठीक है मगर क्या करूँ? यह भी तो मुश्किल है कि बाप की बरसी नहीं हुई और बेटे की शादी रचाई जाय। दुनियाँ क्या कहेगी?'

बड़ी अम्मा : 'दुनियाँ कुछ भी न कहेगी और कहे भी तो नाहक नाहक दुनियाँ के कहे से कुछ न होगा। देर करने से बात बिगड़ जाती है। लड़का हाथ से निकल जायगा। लखनऊ की सोहबत खराब है। कोरट खुलने भी न पाएगा कि सब रुपया ऊपर से ऊपर उड़ जायगा। आपको खबर तक न होगी।

बेगम 'सच कहती हो। इसमें कोई शक नहीं। मैं ऐसे ही आसार देखती हूँ। मगर मुझसे कुछ नहीं बन पड़ता। अच्छा ठहरो कल तक बताऊँगी।'

यह बातें करके महलदार को हुक्म दिया गया कि दारोगा साहब और दीवान जी आज तीसरे पहर को ड्योढ़ी पर हाज़िर हों। मुझे कुछ बातें करना है।

थोड़ी देर के बाद यह जल्सा बरखास्त हुआ। यह तीनों मेहमान औरतें अपने अपने ठिकाने पर, जो उनके लिये तजवीज़ किया गया था चली गईं।

अब बेगम साहिबा का खास जल्सा है। खुद बेगम हैं। चिट्ठी-नवीस हैं और एक और पुरानी नौकरानी है, छोटे नवाब की अन्ना है।

बेगम : सुनती हो अन्ना जी अब देखो उधर से तकाज़े पर तकाज़े हो रहे हैं। यहाँ कोई सामान ही नहीं। खुदा की हरकतों की खबर बड़े भैया तक पहुँच गई।

जी मुगलानी 'खबर करने वाले भी खूब हैं कि मुर्शिदाबाद खत लिख भेजते हैं। आखिर इन मुओं को क्या फ़ायदा है ?'

अन्नाजी 'अब खुदा जाने क्या क्या लिख भेजा है अब तो उन्होंने घबरा कर इन लोगों को रवाना किया है। जो गड़बड़ यहाँ था है, अब यह सब आँखों से देख जायेंगे। देखिये क्या होता है, बड़ा ग़ज़ब हुआ।

चिट्ठी-नवीस 'आखिर हुआ ही क्या था जिसकी खबरें पहुँचाई जाती हैं। यहाँ तो बात का बतंगड़ बन जाता है। वह कौन रईसज़ादा ऐसा है जो अपने ज़माने में औबाशी नहीं करता ?

बेगम : 'और रईसज़ादे करते होंगे। हमारे घराने में अभी तक किसी ने कुछ नहीं किया था। रंडियाँ नौकर रहीं मगर यह औबाशपन कभी नहीं होने। नशे-पानी का ज़िक्र हमारे यहाँ कभी न था। बड़े भैया खुदा रक्खे मौलवी हैं।

मुल्लाजी 'ऊँह, न कभी हमने बड़े नवाब की जवानी इन बातों का जिक्र तक सुना। खुदा जाने इन साहबजादे को क्या हुआ है। यह मुए नये आदमी जो घुस पड़े हैं उन्हीं की सारी हरकतें हैं।

मिट्ठी-नवीस 'मैं तो सुनती हूँ, छोटे नवाब ने सब बातें छोड़ दीं। कोई बड़ साहब हैं। उनके शागिर्द हुए हैं। कोई नाम पढ़ते हैं। गुरदीन को भी तो अलग कर दिया।

बेगम 'मैं भी सुनती हूँ, गुरदीन को निकाल दिया।

मिट्ठी-नवीस 'हाँ इन दिनों में सोहबत का रंग बदला हुआ था। जब से छोटे मीर साहब आने लगे हैं उन्होंने ऐसे वैसे लोगों को निकाल दिया। गुरदीन को भी उन्होंने निकलवाया।

मुगलानी 'मुई रंडियों का भी कुछ ठीक नहीं। सुना है मीर काजम अली से लड़ा-झगड़ा कर लिया।

बेगम : 'यह गलत है। यह सब लोगों की बनाई हुई बात है। काजम अली को मैं खूब जानती हूँ। वह इस तरह का लड़का नहीं है।

मिट्ठी-नवीस हुजूर जो फर्माती हैं वह सही है। मगर मैं तो सुनती हूँ लोगों ने आँख से देख लिया।

मुगलानी : 'मैंने भी सुना है।

बेगम : सब गलत। मुझे हरगिज यकीन ही नहीं।

मुल्लाजी : 'बेशक गलत है।

मिट्ठी-नवीस 'हुजूर से तो मेरी मजाल नहीं जो कुछ कहूँ मगर मुल्लाजी साहब आपको क्योंकर यकीन हो गया।

मुल्लाजी 'हम उसको बचपन से जानते हैं। हमारे महल्ले का लड़का है। मेरे घर से दीवार बीच मकान है। सबकी मैं मर गई थी। जो बात सबसी थी सब अपने कानों से सुन आई हूँ।

मुगलानी 'तुमने तो कानों से सुना लोगों ने आँख से देखा।

बेगम : 'बी मुगलानी, इस बात में तकरार न करो। वह लोग हमारे बचे हुए हैं। उनसे ऐसी खता नहीं हो सकती। खुदा को देखा नहीं, अक्ल से यह

जाना। कायम अली की चाल चलन मैं खूब जानती हूँ। यह सब लोगों की बनाई हुई बातें हैं। मुझे सब मालूम है।'

चिट्ठी-नवीस (मुगलानी से) : 'ऊई खाला तुम्हें क्या हो गया है बस जो हुजूर कहती हैं वही दुरुस्त है। हम लोग तो कल के आए हुए, हमको क्या मालूम ? अच्छा हुआ इसी बहाने से मुई रंडी तो निकल गई। छोटे नवाब उसके बहुत ही आशिक थे। गजब क्या है मैंया ने इसी बहाने से उसको नवाब की नजरों से गिराकर निकलवा दिया।

बेगम 'एक रंडी छूट गई तो क्या हुआ ? छोटे नवाब के पीछे और सैकड़ों बलाएँ लगी हुई हैं। उनका क्या इलाज ?'

अजाजी 'बच्चे की जान व माल का खुदा ही हाफ़िज है। अब तो जालिमों के फंदे मे पड़े हैं।

बेगम 'आप खराब होंगे। हमें क्या ? मगर यह ममता कमबख्त नहीं मानती। दिल जलता है। अब तो उन्होंने घर का आना-जाना भी बन्द कर दिया।'

अजाजी 'आज आठवाँ दिन है। माँ के सलाम तक को नहीं आए।

बेगम 'वह न आवें जीते रहें। सलामत रहें। मुझे इसकी परवा नहीं। अब यह सलाह करो कि जो लोग मुर्शिदाबाद से आये हैं उनको क्या जवाब दिया जाय।

अजाजी : 'जवाब क्या दिया जाय मैं तो जानती हूँ निकाह कर देना चाहिये।

बेगम 'मेरी समझ में ठीक नहीं है।

चिट्ठी-नवीस हुजूर कहीं ऐसा हो सकता है कि बाप की बरसी नहीं हुई और बेटे का निकाह हो।'

मुगलानी : 'ना साहब बरसी के अन्दर यह कुछ नहीं हो सकता।

अजाजी ए बी बैठो। लड़का हाथ से निकल जायगा। कोई खुशी से निकाह किया जाता है। यही भी एक मजबूरी की बात है।

बेगम : 'हाँ हाँ यही मैं भी सोचती हूँ। अच्छा आज दारोगा साहब

और दीवान जी साहब को बुलाया है। देखिये उनकी क्या सलाह है।

मुमसानी : 'छोटे नवाब का इन्दिया तो लिया जाता। देखिये वह क्या कहते हैं।

चिट्ठी-नवीस 'वह क्या कहेंगे। हमारी हुजूर को अख्तियार है जो चाहें करें। वह मालिक हैं।

अन्नावी : मैंने एक दिन पूछा था। वह तो इन्कार करते हैं।

बेगम 'मुझे भी यही खटका है मगर लड़के ने कहीं इन्कार कर दिया तो सब बात बनी बनाई बिगड़ जायगी।

मुमसानी 'मैं तो जानती हूँ, इन्कार न करेंगे।

बेगम : मैं कहती हूँ जरूर इन्कार करेंगे।

अन्नावी 'मेरा भी यही ख्याल है।

बेगम अच्छा। तो फिर बारात के मुख्तार हैं। यह आखिरी तदबीर है।

अट्ठाईस

शाम को बारोग्रा साहब और दीवान जी पर्दे के पास तलब हुए। तजकिरा करा दिया गया मगर जिन लोगों को पराये भेद सुनने का शौक होता है या जिनको उन भेदों के मालूम होने से कुछ फायदा होता है वह किसी न किसी तरह सुन ही लेते हैं। जैसे इसी वाक्ये से चिट्ठी-नवीस और मुमसानी को ताल्लुक था। इस वजह से जब बेगम साहिबा अपने दो पुराने नौकरों से बात चीत कर रही थीं, एक पास के कमरे के दरवाजे से लगी हुई, वह दोनों औरतें

हुई व हुई सुल रही थी और उसकी तार बर्की बाहर लगी हुई थी।

बेगम 'कहिये इस मामले में आपकी राय क्या है ?'

दारोगा 'हम लोग आपके ताबे हैं जो हुक्म हो।

दीवान जी 'जो खुदा की मर्जी वह सब से अच्छी।

बेगम 'हाँ मेरी यह राय है कि छोटे नवाब को किसी तरह फँसा देना चाहिये।

दारोगा 'ठीक है।

दीवान जी : 'इससे बहतर क्या है।

बेगम : 'देखिए दारोगा साहब और दीवान जी साहब आप भी सुनिये छोटे नवाब के आसार अच्छे नहीं हैं। मैं कहती हूँ अगर शादी हो गई तो कुछ न कुछ गोल करकर पड़ेगा।'

दारोगा : 'जी हाँ, मगर देखिये।

दीवान जी : 'क्यों ?

बेगम 'दारोगा साहब यह आपने नाउम्मीदी का जिकरा क्यों कहा ?

दारोगा : 'हुजूर हमारी मालिक हैं और छोटे नवाब भी मालिक हैं। हम लोग पुराने नमक-ख्वार हैं। मगर अब हम देखते हैं कि इस सरकार के रंग-ढंग बिलकुल बदले हुए हैं। खुदा आपको सौ बरसों साल सलामत रक्खे। हम लोगों को आपही के दम का सहारा है वरना —

दीवान जी : 'बस-बस आगे कहने की बात नहीं।

बेगम 'मैं खूब समझती हूँ। जो आप लोगों की जबान पर नहीं आता वह मेरे दिल में है। बाकई यह सरकार मरहूम नवाब के दम तक थी। साहबजादे से यह उम्मीद नहीं कि वह बाप के नक़्श-क़दम होकर बैठेंगे लियाक़त पैदा करेंगे, चार अमीर रईसों से मिलेंगे। यह घर अब मुझे खुद मिटता नज़र आता है।'

दारोगा : 'खुदा न करे।

दीवान जी : 'खुदा न करे।

बेगम यह तो मैं खुद कहती हूँ जो आप लोग कहते हैं, मगर खुदा को

ऐसा नहीं भ्रम्ल से पहचाना आसार बुरे ही बुरे नजर आते हैं।'

दारोगा 'साफ-साफ यह है कि बाहिर में तो कोई सूरत बहतरी की नजर नहीं आती।

बेगम : 'अच्छा अब इस शादी के बारे में लोग यह कहते हैं कि छोटे नवाब की मर्जी लेना चाहिये।'

दीवान 'उनकी मर्जी क्या मानी ? इस में खासकर हुजूर को खुदा के फ़ज्ल से अख़्तियार पूरा-पूरा हासिल है। हुजूर उनके गोश्त व पोस्त की मालिक हैं।

दारोगा : 'हाँ मर्जी तो ले लेना चाहिये।

दीवान जी 'क्या कहते हैं! उनकी मर्जी क्या हमारी हुजूर को अख़्तियार है।

दारोगा : 'आप नहीं समझते दीवान जी हम लोगों की शादी ब्याह की रस्में आप लोगों से अलहदा हैं।

दीवान जी 'इतना मैं भी खूब जानता हूँ। क्या मानी कि मुसलमानों में कौन सी रस्में ऐसी हैं कि बंदा जिनसे पूरी तरह से वाकिफ नहीं है। मर्जी लेना तो मामूली बहाना है। शादी ब्याह या बेटी वाले या बेटे वाले माँ बाप की मर्जी पर निर्भर है।

दारोगा 'मगर यह मामूली बहाना भी तो मजब का है। अगर कहीं लड़के ने इन्कार कर दिया तो कुछ नहीं हो सकता।

दीवान जी : अव्वल तो इन्कार न होगा इसलिए कि शादी खाना-आबादी। इससे बच्चे से बूढ़े तक सब खुश होते हैं। और अगर वाकई ऐसा हुआ भी तो हम लोग उन्हें समझायेंगे।

बेगम 'मैंने माना कि इन्कार न करेंगे मगर एक दूसरी बात और भी है, वह भी तो सुनलो और मुझे सलाह बताओ कि क्या करना चाहिये।

दारोगा 'वह बतलाइये।

दीवान जी : 'हुजूर बतलायें मेरे कान सुनने के लिए लगे हैं।

बेगम 'बड़े भैया कहते हैं कि कुल जायदाद लड़की के दहेज में लिख

देना चाहिए।

दारोग़ा : 'हाँ यह मामला मुश्किल है। अव्वल तो छोटे नवाब राज़ी न होंगे और अगर हों भी तो हम लोग इसको जायज़ नहीं रखते कि जौहर को बिलकुल बीवी के अख़्तियार में दे दें।'

दीवान जी : 'बेशक सरासर ख़िलाफ़ दानिशमन्दी है मगर हुज़ूर की मर्ज़ी क्या है?'

दारोग़ा : 'जब मुझसे हुज़ूर ने ख़ुद ही राय पूछी है तो जो कुछ मेरी राय थी वह मैंने कह दी। आइन्दा अख़्तियार मालिक को है।'

बेगम : 'दारोग़ा साहब यह तो आपने ठीक कहा कि मर्द को बिलकुल औरत के अख़्तियार में दे देना ठीक नहीं मगर कुल जायदाद महाजनों के क़ब्ज़ों में चली जाय उससे तो अच्छा है कि बीवी के क़ब्ज़े में रहे।'

दीवान जी : 'इस नज़र से तो बिलकुल ठीक यही है कि कुल जायदाद बीवी के नाम कर दी जावे मगरचे वह इस जायदाद की मोहताज नहीं। इसलिए कि हुज़ूर के भाई साहब ख़ुद बड़े अमीर हैं। लाख दो लाख उनके लिए कोई बड़ी चीज़ नहीं।'

बेगम : 'ख़ुदा रक्खे मेरा भाई करोड़पती है।'

दीवान जी : 'ख़ुदा ज़्यादा करे, यही बात है।'

दारोग़ा : 'यह सब कुछ सही मगर मैं अपनी राय पर क़ायम हूँ। आइन्दा जो बेगम साहिबा की मर्ज़ी हो।'

बेगम : 'मैं कहती हूँ दारोग़ा साहब आप इस मामले पर ग़ौर तो कीजिये।'

दारोग़ा : 'अच्छा फिर मेरी राय क्या और मैं क्या। फ़ाल पर भरोसा कीजिये।'

दीवान जी : 'और अगर फ़ाल में मना आया तो यह सब जायदाद मुफ़्तख़ोरे महाजन लेंगे। लिहाज़ा मेरी यह राय है कि फ़ाल बिलकुल न हो। मामला यों ही लटकने दिया जाय।'

दारोग़ा : 'मैं दीवान जी की राय से इत्तफ़ाक़ करता हूँ। अव्वल तो मैं

क्या और मेरी राय क्या ?

बेगम 'नहीं आपकी राय क्यों नहीं। यह भी कोई बात है। छोटे नवाब का अब है कौन ? पुराने नौकर बड़े बूढ़ों की जगह होते हैं।

इस बात पर दारोगा साहब और दीवान जी दोनों की आँखों में आँसू आ गये और दोनों ने मिलकर कहा—

दीवान और दारोगा : 'हुजूर खूब ही होशियार हैं। हम लोगों को छोटे नवाब का किस कदर ख़याल है मगर शैतानों से बस नहीं चल सकता। खुदा छोटे नवाब के जान माल आबरू की हिफ़ाज़त करे। जाहिलों ने चारों तरफ़ से घेर लिया है।

दीवान जी 'सुना है कोई शाह साहब हैं, उनके चेले हुए हैं। उन्होंने कोई मंत्र बताया है, वह पढ़ते हैं।

दारोगा 'और मुरीद तो नहीं हुए हैं, मगर उनके जुल में फँस गये हैं। और यह शाह साहब कौन हैं, उनको भी जानते हो ?

दीवान : 'कौन हैं, मैं नहीं जानता मगर सुना है कि बड़े करामाती हैं।

दारोगा 'नाम है—करामत अली शाह। वह तुम्हारे महल्ले में फ़िदा हुसेन फ़िदा हुसेन नामी एक साहब रहते थे उनको जानते हो।

दीवान जी : 'हाँ हाँ कहिये मैं खूब जानता हूँ बल्कि उनकी सात पुश्त का हाल मालूम है। वही न जिनकी कनकौवे की दुकान थी चौपटिया पर ?

दारोगा 'हाँ हाँ और उनका लड़का है। वह जो कंपनी-महल की नौकरी से था।

दीवान जी 'करामत।

दारोगा 'जी हाँ। वही यह करामत अली शाह साहब हैं।

दीवान जी : 'अच्छा तो यह करामत अली शाह साहब वही हैं। जी फित सगम के लड़के मियाँ करामत।

दारोगा 'जी हाँ खुदा की कुदरत है। अभी चार दिन का ज़िक्र है मेरे पास चार आने महीना और खाने पर नौकर था।

बेगम : 'दारोगा साहब क्यों यह मुआ करामत नहीं है जो उन दिनों आपके घर से चाँदी के बर्तन ले के भाग गया था।

दारोगा : 'हुजूर वही। हुजूर को खूब याद रहा।

बेगम : 'अभी हाँ याद को क्या हुआ ? अभी तो दिन की बात है जब नवाब शिकार पर गये आप भी साथ गये थे।

दारोगा : हाँ 'हुजूर उसी जमाने का जिक्र है।

बेगम : 'फिर आपने मुए को क़ैद न करवा दिया।

दारोगा : 'हुजूर क्या कहूँ। मियाँ फ़िदा हुसेन हाथ जोड़ने लगे फिर अपनी उसकी माँ कदमों पर गिर पड़ी। मुहल्ले का वास्ता था मैंने दावा नहीं किया।

दीवान जी : 'मगर यह तो सजायाफ्ता है।

दारोगा : 'एक दफ़ा ? तीन मर्तबा सजा पाई। आखिर अबकी बारह बरस के बाद काले पानी से छूट के आया है। वहाँ से आते ही उसने यह फ़ितूर फैलाए। शाह साहब बन बैठा। शैतान नहीं था। हमेशा का बदमाश। फ़कीरी जामे में यह ऐसे ऐसे बेहूदा काम करता है। देखिये परलोक में मुँह काला होगा बल्कि दुनिया में भी अच्छा न होगा। मगर यह तो, वाहिद, बे-पढ़े कौम बहुत से क़ायल हो गये।

दारोगा : 'औरतों की कुछ न पूछिए। सुबह को दरबार लगता है। खलक़त भेड़िया धसान है।

बेगम : 'यह उन लोगों से कोई नहीं कह देता कि यह मुआ चोर उठाईगीरा है। उसको आता ही क्या होगा ? यह लोग क्यों मुरीद होते हैं ?

दारोगा : 'हुजूर ठीक फ़र्माती हैं। मगर यह अपने फ़न में एक ही है।

बेगम : 'किस फ़न में।

दारोगा : 'जालसाजी।

दीवान : 'मैं इल्म छत्तीस फ़न सुने थे। यह सैंतीसवाँ फ़न जालसाजी आज दारोगा साहब से मालूम हुआ।

दारोगा : 'दीवान जी साहब, आप अपने वक्तों के आदमी हैं। आपको

क्या मालूम ? आलसाजी बहुत बड़ा फन है। फन कैसा अब तो इल्म के रुतबे पर पहुँच गया है।

बेगम : 'अच्छा अब मेरी नमाज का वक्त हो गया मैं तो जाती हूँ। आप लोगों का इरादा मुझको मालूम हो गया। इन लोगों को जो मुर्शिदाबाद से आए हैं, अपने आप जवाब दूँगी। बल्कि मेरी राय तो यह है कि मैं खुद कुछ दिन के लिये मुर्शिदाबाद चली जाऊँ। वहाँ जाकर भैया से सलाह मशवरा करके जो कुछ बन पड़ेगा करूँगी।

दीवान और दारोगा : 'हुजूर यह बहुत ही मुनासिब है। हुजूर खुद ही तशरीफ ले जाएँ।

बेगम : 'हाँ फिर क्या किया जाय। बगैर इसके कुछ बन नहीं पड़ती। अच्छा तो कल मास्टर से एक तार लिखवाके दे दो। मैं परसों शाम की रेल में रवाना हो जाऊँगी।

दारोगा : 'बहुत खूब।

बेगम साहिबा के उठ जाने के बाद दारोगा और दीवान में देर तक बातें होती रहीं।

छत्तीस

दिले नाशाद बहुत शाद हुआ,
तो गुबार हो ... आबाद हुआ ॥
जुल्म की कालिमा मुबारक हो।
चौथे सालिया मुबारक हो ॥

यह सब बातों की दिल्लगी थी।
फाँसी भी गई हकीम की थी॥

महरी : 'हकीम साहब मुबारक हो। यह कागज लीजिये। स्टाम्प पर लिखवा कर रजिस्ट्री करा दीजिये। निकाह कर लीजिये।

हकीम साहब 'मगर निकाह की शर्तों को तो देखो। हर तरह से बेगम साहिबा ने मुझी को पाबंद किया है।

महरी 'कैसी बेवकूफी की बातें करते हो हमको हर तरह से पाबंद किया है। और यह तुम्हारी पाबंद होती है। देखा तो क्या खास बात है।

हकीम साहब 'मगर यह क्या लिखा है कि मेरे पहले शौहर की कोई औलाद और वारिस नहीं है। और यह छोटे नवाब कौन हैं।

महरी 'यही तो कहती हूँ। तुम्हें आम खाने से मतलब है या पेड़ गिनने से। कुछ तो उन्होंने इसकी राह रखी होगी। इतना तो मुझे मालूम है कि जब से छोटे नवाब शराब पीने लगे बेगम को उनसे नफ़रत हो गई। अब वह अपना मतलब कर गुजरती हैं। छोटे नवाब को एक कौड़ी तो देंगी नहीं। और क्यों दें ? जायदाद कुल उनकी है छोटे नवाब के बाप की नहीं है।

हकीम साहब 'हाँ तो अब समझ में आया

महरी 'अच्छा तो बस कागज पर दस्तखत करो जल्दी करो।

महरी हकीम साहब के साथ आज इस बेतकल्लुफी से बातें कर रही है कि बड़े की इज्जत का भी कुछ ध्यान नहीं है। मगर हकीम साहब खुश हैं। आज तमाम मनसूबे पूरे हो गये। अब क्या है, निकाह हुआ जाता है। दम भर के लिये इज्जत का लिहाज न सही। महरी इस वक्त अगर गालियाँ भी दे तो बेजा है। इतना बड़ा काम किया। सोने की चिड़िया फँसा दी। बेगम साहिबा को निकाह पर राजी कर लिया। अभी परसों तक की बातचीत में यह मामला तय न हुआ था। आज तय हो गया। बेगम साहिबा के मेहर का कागज हाथ में है। इससे बढ़कर और क्या सबूत होगा।

हकीम साहब 'यह तो सच है मगर शर्तें बहुत ही कड़ी हैं।

महरी 'कड़ी हैं तो जाने दो।

यह 'जाने दो' इस बेबसी से कहा कि ख्याल ही ख्याल की दुनिया में हकीम साहब के सब मनसूबे खाक में मिल गये ।

हकीम साहब : 'नहीं जाने क्यों दो ? बेगम साहिबा को समझाओ ।'

महरी 'अब मेरे समझाए नहीं समझाई जाती । किसी वक्त आप खुद समझाइयेगा ।'

हकीम साहब (मुस्कराकर) : 'अच्छा खैर । खातिर है ।'

ए को खुदा की कदरत । कहाँ हकीम साहब और कहाँ बेगम साहिबा और कहाँ यह लफ्ज 'खुस्सा' । बेगम साहिबा जिनकी सरकार में आज भी हकीम के ऐसे कई आदमी पड़े हैं, हकीम साहब की खुस्सा बनी जाती है । फिर हकीम साहब क्यों खुश न हों ।

हकीम साहब : 'और यह पचीस हजार का मेहर और जब तक जिया न हो मेरी कुल जायदाद रहन रहे । यह मसौदा किसने लिखा है ? बड़ा कानूनी मालूम होता है ।'

महरी : 'लिखा किसने है ? क्या लिखना नहीं पहचानते हो । उन्हीं के हाथ का लिखा हुआ है ।'

हकीम साहब 'और यह क्या शर्त लिखी है कि निकाह के वक्त दो हजार रुपया नकद बतौर मेहर मुअज्जल दिया जाय । यह तो मुश्किल है ।'

महरी 'मैं क्या जानूँ, लिखा होगा । और जो लिखा है करना पड़ेगा । मुश्किल हो चाहे सहल हो ।'

हकीम साहब : 'क्या जबरदस्तियाँ हैं? करना पड़ेगा ?'

महरी 'नहीं तो सोने की चिड़िया को फँसाना क्या सहल है ?'

हकीम साहब 'और यह निकाह होगा कब ? जब मुर्शिदाबाद से होकर आयेंगी ।'

महरी : 'मुर्शिदाबाद कौन जाता है ।'

हकीम साहब : 'बेगम ।'

महरी 'फिर तुम से निकाह कौन करेगा ? तुमे को तो निकाह होगा ।'

हकीम साहब महरी स तो यह घुल मिलके बातें हो रही थी और नसीबन

पीनक की हालत में बैठे थे । महरी के इस फ़िक़रे ने उन्हें चौंका दिया 'जुम्मे को तो आपके साथ निकाह होगा ।

नबीबख्श (हकीम साहब से) : कहीं जुम्मे को निकाह न कीजियेगा कहे देता हूँ।

हकीम साहब 'क्यों ?

नबीबख्श 'बस कह दिया । एक बात मेरी मान लिया कीजिये । बूढ़ा आदमी हूँ । यह बाल कुछ धूप में सफ़ेद नहीं किये हैं ।'

हकीम साहब 'आखिर कुछ वजह भी ?

नबीबख्श (महरी से) ले देखती हो । ज़रा सी बात कही । मियां नहीं मानते । जुमे को निकाह न कीजियेगा ।

महरी 'आखिर कोई सबब भी ?'

नबीबख्श 'और जो सबब न कहने का हो ?'

महरी 'कुछ तो कहो ।

नबीबख्श 'अच्छा जाने दो । मैंने तो एक बात कह दी । अब चाहे कोई माने या न माने ।

हकीम साहब 'यही तो पूछते हैं कि क्यों ?'

नबीबख्श 'मना तो किया कि जुमे को न कीजियेगा । और दिन नहीं हैं क्या ?'

हकीम साहब 'आखिर कोई वजह भी बताओगे ?

नबीबख्श 'और जो वजह बताने की न हो ?

महरी 'वजह तो बतानी पड़ेगी ।'

नबीबख्श : 'नहीं बताते । कोई ज़बरदस्ती है ?

हकीम साहब (किसी क़दर नाराज़ होकर) 'बताते क्यों नहीं ? क्या वजह ?

नबीबख्श : 'बस यही वजह है । न कीजियेगा ।

हकीम साहब 'लाहौल बला कुव्वत ।

महरी 'बुड्ढा कुछ सठिया गया है । बताता क्यों नहीं ?

कहां तो हकीम साहब और महरी में यह मजे-मजे की बातें हो रही थीं कहाँ मियाँ नबीबख्श ने एक हर्फे पर टोक दिया। यह बात दोनों को बुरी लगी। दोनों बिगड़-बिगड़ कर पूछते थे और मियाँ नबीबख्श अपनी कहे जाते थे और खुद भी बिगड़ते थे। आखिर बड़ी हुज्जत और तकरार के बाद यह भेद खुला कि मसल मशहूर है "जुमे को निकाह हफ्ते को तलाक" जब यह भेद खुला तो हकीम साहब और महरी दोनों खूब कहकहा मार कर हँसे।

नबीबख्श (जरा खिसियाने होके) : 'मैं सच कहता हूँ। हँसी की बात नहीं। अगले आदमी जो कह गये हैं उसको पत्थर की लकीर समझना चाहिये।'

हकीम साहब : 'बस बस अपनी नसीहतें रहने दीजिये।'

नबीबख्श : 'मेरी मजाल है कि आपको नसीहत करूँ। एक बात सुनी थी कही। अब आप उसे मानते नहीं। यहाँ

महरी। अपने वाले तो अच्छी बात कही।

हजारों रुपये की पायमाली हुई है।

हकीम साहब 'तो कोई हजार निकाह आपने जुमे को होते देखे होंगे और सब में तलाक हो गया।

नबीबख्श 'अब आपसे हुज्जत कौन करे?'

इसके बाद फिर मियाँ नबीबख्श अपनी पेशे की अफ़ीम के मजे लेने लगे।

हकीम साहब और महरी में बातचीत शुरू हुई।

हकीम साहब (महरी से) 'यह तो कहो बेगम मुर्शिदाबाद न जाएँगी।'

महरी 'कैसी नादानों की बातें करते हो।'

हकीम साहब : 'तो साफ साफ कहो?'

महरी 'रेल के स्टेशन तक सब के दिखाने को जाएँगी। रेल में सवार होंगी। बाराबंकी से उतर पड़ेंगी। तुम्हारे साथ सवार होकर चली आएँगी।'

हकीम साहब : 'आहा! यह तदबीरें हैं। तो पहले क्यों नहीं?'

महरी 'कहूँ किससे तुम तो इकरारनामे में ठीक हुज्जत निकालते हो।'

हकीम साहब : 'तो बाराबंकी तक मुझे भी जाना होगा।'

महरी 'आप ही जाओगे अपनी गरज को।'

हकीम साहब : 'और बाराबंकी से आने के बाद निकाह होजायगा।'

महरी 'हाँ हाँ क्यों कर कहूँ ?'

हकीम साहब : 'और यह कागज कब होगा ?'

महरी 'यह कागज आज होगा और कहा कि इस कागज को फारसी लाना। जब तुम रजिस्ट्री कराके भेजोगे तो इससे मिलान होगा। बच्चो कोई भेद न रह जाय न इधर का उधर होने पाए, नहीं तो मैं नहीं जानती वह बेगम हैं अपनी जिद की। जरा सी बात पर तो उन्होंने औलाद-सी चीज को छोड़ दिया।

हकीम साहब 'हाँ तो कहो यह बेटे से नाराज क्यों हो गईं ?'

महरी 'ये बस इसी बात पर तो मुझे गुस्सा आता है। यह सब तुम्हारे ही किए धरे हुए हैं।

हकीम साहब : 'मेरे क्या किए धरे हुए हैं ?

महरी 'तुमने जादू किया और ऐसा जादू किया कि बीबी तुम्हारा ही पाठ पढ़ने लगीं। अरे तुम गजब के आदमी हो।

हकीम साहब (हँस के जैसे उन्होंने सचमुच जादू किया और उसी का यह असर था) 'भला मैं क्या जानूँ जादू टोना ?'

महरी 'तो कुछ खिला दिया होगा।'

हकीम साहब 'उन्होंने खाया क्या मेरे हाथ से ?

महरी 'अभी उसी दिन जब तुमने मोती में से इलायचियाँ दी हैं बकने लगी गईं। बेगम ने एक इलायची मेरे सामने तोड़ के खाई। इस तुम्हारा दिया हुआ भला इसने क्या कहते हो ? इलायचियाँ, इत्र हार फूल सब चीजें पड़ी हुई थीं। अब तो दीवानी हो गईं।

हकीम साहब 'महरी भई खूब पहचाना। इलायचियाँ तो बेगम पगी हुई थीं।

महरी 'मैं तो खुद कहती हूँ। तुम एक किस्म की गाँठ हो। है है अरे इन मर्दों को भी क्या क्या फ़न-फ़रेब आते हैं। न भई, मैं तो आज से किसी के हाथ की कोई चीज न खाऊँगी।

गो महरी उम्र से छटी हुई थी, मगर अब तक यह गुमान था कि ऐसा न

थी। उन्होंने हाथ रोक लिया और चलते वक्त एक पैसा छोटे नवाब को नहीं दिया। मामूली खर्चों के लिए दीवान और दारोगा से कहती गई। खाने पीने की तरफ से तो इत्मीनान है मगर सिर्फ नवाब के लिए। एक बाल खाने का महल से आ जाया करेगा। यहाँ साठ सत्तर आदमी जान निछावर करने वाले नौकर हैं। यह क्या खाएँगे और कैसे खिलाएँगे? मगर खाने पीने के सिवा और जरूरतें जो तमाम अमीरजादों को पेश हुआ करती हैं जैसे मुजरा नाच रंग कमीशनें इनाम इकराम नजर भेंट बेजरूरत खरीद-फरोख्त—यह सब फ़िजूल मदें अक्सर वैसे ही हो जाया करती हैं। उनके लिए रुपया कहाँ से आये? कर्ज मिल नहीं सकता क्योंकि छोटे नवाब अभी नाबालिग हैं। उनकी क़ानूनी वसिया मानी बेगम साहिबा दस्तख़त नहीं करतीं। और अगर मौजूद भी होतीं तो क्यों देती? नवाब साहब इस फ़िक्र में थे कि इतने में खलीफ़ा जी आये। नवाब साहब को फ़िक्र में देख कर फ़िक्र की वजह का पता लगाया।

खलीफा: 'क्यों यह हुजूर आज फ़िक्र में क्यों हैं?'

नवाब 'जी कुछ नहीं?

खलीफा 'नहीं कुछ कैसा? मालूम होता है कि खर्च के लिए कुछ फ़िक्र है। क्या बेगम साहिबा कुछ न दे गईं।

नवाब 'एक हब्बा नहीं दे गईं।

खलीफ़ा: 'अल्लाह गजब किया। आपकी जरूरतों का कुछ खयाल न किया। दीखता है कि कुछ नाराज होकर गई हैं?

नवाब 'बहुत दिनों से नाखुश हैं। इस बीच में मैं कई बार सलाम को गया मुँह फेर लिया। जब मैंने देखा कि वह सलाम नहीं लेती मैंने भी महल में जाना छोड़ दिया। अब गईं तो मिलके भी न गईं।

खलीफ़ा 'फिर और क्या किया जाता? यह दीवान जी और दारोगा साहब की कारस्तानियाँ हैं। यह लोग तो ऐसा चाहते हैं कि माँ बेटों में दुश्मनी हो जाय तो कुछ अपना मतलब निकले। उन्हीं लोगों ने भड़काया होगा।

नवाब: 'किसी ने भड़काया हो मैं परवाह नहीं करता।

खलीफ़ा 'हुजूर हमेशा से बेफ़िक्र हैं। मगर बेगम साहिबा को यह न

चाहिये था। अच्छा अब फ़िक्र न कीजिए। आखिर मैं किस लिये हूँ। कोई न कोई बन्दोबस्त हो ही जायगा।

नवाब : 'बन्दोबस्त खुदा जाने कब होगा ? यहाँ तहवील में सिर्फ दो रुपये और बाकी हैं। इस वक्त का खर्च क्योंकर चलेगा।

ख़लीफ़ा : 'इस वक्त कहिये क्या चाहिये ?

नवाब : 'कम से कम तीस तैंतीस रुपये की ज़रूरत है। यह सब लोग खाएँगे क्या ? फिर जिन लोगों को रोज़ीना दिया जाता है उसकी क्या सबील हो ?

हमारे नवाब साहब की सरकार में नौकरों की तनख्वाह रोज़ाना तकसीम हुआ करती थी। वजह यह थी कि नौकरों में वह लोग शामिल थे जिनके साथ एक न एक इल्लत ज़रूर लगी हुई थी। कोई चंडू पीता था किसी को मदक से शौक़ था। शराब तो मामूली तौर से सब के सब पीते थे। मगर इसका खर्च नवाब साहब की फ़ैयाज़ी के ज़िम्मे था। बल्कि नौकरी की शर्तों में एक शर्त ही यह थी। कोई नौकर वक्त बेवक्त जितनी शराब माँगे उसको दी जावे। और नौकरी की शर्त यह थी कि नौकर हरवक्त बदहोश रहे ताकि किसी को नवाब के सामने जँभाई या अंगड़ाई लेने का इत्तफ़ाक़ न हो, जिससे नवाब का मज़ा किरकिरा हो जाए क्योंकि सरकार का उसमें खुद मज़ा आता था। रोज़ाना शराब का खर्च शराब देसी पच्चीस बोतलें फ़ी बोतल दो आना शराब अंग्रेज़ी विलायती ग्यारह बोतलें फ़ी बोतल साढ़े चार रुपए। ज़रूरत के मुताबिक़ दो तीन बोतलें शैम्पेन की भी आ जाती थीं।

ख़लीफ़ा : 'रोज़ीना बाँट दिया जायगा। ए लीजिए मेरे पास यह पचास रुपये का नोट है। इस वक्त खर्च किया जाय फिर देखा जायगा।

इधर ख़लीफ़ा ने जेब से नोट निकाला उधर मीरी महमूद ने नवाब के हाथ से नोट लिया और बाज़ार को चलता हुआ। नोट भुनाया और ज़रूरी चीज़ों को खरीदने में लग गया। छोटे नवाब की सरकार का फ़ाक़ा आज ख़लीफ़ा ने तुड़वाया। वरना यह दिन भूखा ही गया होता।

छत्तीस

आज शाम को करामत अली शाह साहब से लम्बी मुलाकात हुई। बेगम साहिबा के मुर्शिदाबाद जाने और कुल हालात और बातों की खबर मुझे भी मारफत पहले ही शाह साहब के पास पहुँच चुकी थी।

शाह साहब : 'यह सब घनश्याम जोशी की कारस्तानी है, माँ-सा दोस्त दुश्मन हो जाय । खैर दुश्मन अगर ताकतवर है तो निगहबान उससे ज्यादा ताकतवर है। आप घबराइये नहीं। खर्च का बंदोबस्त हो जायगा। सब्ज-कबा सच्ची मालिक है। उसको आपका कुल हाल मालूम है। आपको खबर नहीं और यहाँ तिलस्मी बक्स में रुपया पहुँच गया है। यहाँ से वाके में लीजियेगा। आप को किसी तरह की तकलीफ न होने पायगी। खातिर जमा रखिये। और आपके वास्ते शराब सीधी परिस्तान से आया करेगी। वही पिया कीजिये और जुमे की रात को सिवाय यहाँ की शराब के और कोई शराब न पिया कीजिए।

नवाब : बेहतर है। वाकई वालिदा साहिबा की बेरुखी इस वक्त मेरे खिलाफ हुई। मुझसे हुक्म होता है कि कुल जायदाद छोटे मामूँ साहब की लड़की का यानी जिससे मेरी सगाई होने को है मेहर में लिख दूं। अगरचे मैंने साफ इन्कार नहीं किया मगर फिर भी मेरा जी नहीं चाहता कि ऐसा किया जाय। पुरखों की जायदाद औरत के नाम लिख देना कोई अक्ल की बात है?

शाह साहब : वाकई आपकी राय ठीक है। अगरचे इस जायदाद की कोई हकीकत नहीं खुदा ने आप को अटूट दौलत दी है लेकिन यह बात न सिर्फ समझ के खिलाफ है बल्कि सब्ज-कबा के भी खिलाफ होगी। एक बात नवाब साहब मैं आपसे साफ-साफ कहे देता हूँ। सब्ज-कबा को यह हरगिज गवारा न

होगा कि आप किसी और से निकाह करें।'

नवाब : मुझे खूब मन भाता है। अच्छा-अच्छा इस वक्त मैं मेरे काम आई तो मैं भी उसके साथ किसी क़िस्म की बेमुरव्वती न करता।'

खलीफ़ा 'आपसे इसकी उम्मीद भी हरगिज नहीं है।

शाह साहब 'हाँ यह तो इत्मीनान है, मगर अफ़सोस है बेगम साहिबा पर दुश्मनों ने अपना पूरा क़ब्ज़ा कर लिया। अच्छा मुर्शिदाबाद से आने दीजिये इसकी भी कुछ फ़िक्र की जायगी।

नवाब : मैंने तो तमाम बातें आपके सुपुर्द कर दी हैं। जैसा मुनासिब हो वह कीजिये।'

शाह साहब 'जैसी खुदा की मर्जी।

खलीफ़ा 'बेगम साहिबा एक तरफ़। दारोगा साहब और दीवान जी यह पुराने नौकर सब आपके खिलाफ़ हो गये हैं। अंदर से बाहर तक आपका दोस्त नज़र नहीं आता।

शाह साहब 'भाई यह सब उसी मर्दूद जोगी का बिष बोया हुआ है। अच्छा ज़रा एक काम तो करना। बेगम साहिबा जहाँ सोती हैं, पलँग के सिरहाने पच्छिम की तरफ़ जो पाया है, उससे पौने दो बालिश्त नाप कर एक बालिश्त भर ज़मीन खोदियेगा। वहाँ से जो कुछ निकले मेरे पास ले आइये। फिर जैसा मैं कहूँगा वह कीजियेगा।

नवाब साहब 'बहुत अच्छा।

शाह साहब 'खूब याद आया। आपके महल में कोई औरत है, बेधड़क ज़रा लम्बी सी साँवले सी। कोई चालीस के क़रीब उम्र होगी। उसके दाहिने गाल पर एक बड़ा सा मस्सा है।

नवाब 'और तो कोई नहीं। यह हुलिया तो मेरी अम्मा का है।

शाह साहब 'आह! वह आपकी अम्मा हैं? अभी मैं देखता था कि आपके उसके बीच में एक खून का दरिया लहराता है। मगर वह तो बचपन से खास तौर से घनश्याम जोगी की नज़र में है। खुदा की क़ुदरत देखिये कि दुश्मन की गोद में दोस्त की परवरिश करता है।

नवाब 'वह तो मुझको बहुत चाहती थी ।'

शाह साहब : 'चाहती थी और चाहती है मगर जब वह बिचारी अपने बस मे भी हो । अब खुदा के वास्ते उससे होशियार रहियेगा । उसके हाथ की कोई चीज न खाइयेगा बल्कि मेरी राय तो यह है कि अब आप कोई चीज किसी के हाथ की न खाइयेगा । खाकर जो चीजें महल से आएँ ।

नवाब 'ऐसा अल्लाह एहतियात की जायगी ।

शाह साहब 'मुझे ऐसा मालूम होता है कि अब कुछ ही दिन तक आप लखनऊ में और हैं । आपको खास खो खास के लिये बाहर चलना होगा । आप फकीर के शागिर्द हुए हैं । कुछ दिनो फकीर के साथ भी फिर लें ताकि दुनिया की ऊँच नीच से आपको दस्तता हो जाय ।

नवाब 'बहुत मुनासिब । जब हुक्म हो ।

शाह साहब : 'इंशा अल्लाह जब उसका वक्त आएगा आपसे कहा जायगा ।

नवाब मगर इतना तो पहले से कह दीजिये कि सफर के लिये किस क़िस्म की तैयारियाँ की जाए ।

शाह साहब : सफर की तैयारियाँ दुनियादार लोग करते हैं । दरवेशों को उसकी जरूरत नहीं । आप खुदा की कुदरत का तमाशा देखिये । खुदा चाहे तो जंगल मे मंगल हो जाएगा । सिर्फ मेरे साथ हो लीजियेगा ।

खलीफा 'मगर इतनी अर्ज जरूरी है कि मुझको भी इस सफर मे साथ ले चलिए ।

शाह साहब 'वाह कहीं ऐसा हो सकता है ? आपको जरूर ले चलेंगे । बल्कि पंद्रह बीस आदमी और भी साथ होंगे । मगर वही जिनको मैं कह दूँगा ।

नवाब 'बे आपकी मर्जी के कोई नहीं जा सकता । मगर खलीफा के लिए तो मैं खुद आपसे अर्ज करता ।

शाह साहब 'कुछ आपके कहने की जरूरत नहीं । नहीं । यह तो जरूर ही जायेंगे । अच्छा यह मामला तय हो चुका । एक बात और ध्यान देने के

मुश्किल है। वह यह कि अगरचे खुदा-न-ख्वास्ता अब की जिम्मेदार हुई है, लेकिन यह हमें अच्छा नहीं मालूम होता। यों खुदा-न-ख्वास्ता आपको लाखों दे दें मगर रोज के खर्च के लिए उनसे माँगना या लेना शर्म की बात है।

खलीफ़ा : 'शर्म और आबरू का तकाजा तो यही है।

शाह साहब : 'अच्छा फिर क्या हो?'

खलीफ़ा : 'हुक्म हो तो कोई महाजन ठहराया जाए।

शाह साहब : कमबख्त सूदखोर महाजनों का मेरे सामने नाम न लीजिएगा। सूद लेना और देना मेरी राय मे दोनों बातें बराबर हैं। कोई न कोई बन्दोबस्त हो जायगा। खुदा रोजी देने वाला है। जो जिसका हक है खुदा उसको पहुँचाएगा।'

नवाब साहब : 'जाहिर में तो कोई सबील नहीं है।

शाह साहब 'अच्छा आपका रोज का खर्च क्या है? कुछ अन्दाजा बतलाइये।

नवाब साहब ने खलीफ़ा जी की तरफ़ इशारा किया।

खलीफ़ा 'ए हुजूर, यही कोई पच्चीस रुपये रोज का खर्च है।

शाह साहब : 'अच्छा पच्चीस यह और पच्चीस हमारी तरफ से खैरात वगैरह के लिए। इस तरह पचास रुपये रोज फ़कीर देगा। मगर इससे एक हब्बा भी ज्यादा न हो। इसलिए कि बाबा ज्यादा खर्च को पसंद नहीं करता और न इस रकम में से एक हब्बा दूसरे दिन के लिए रखिएगा क्योंकि यह खुदा पर भरोसा रखने के खिलाफ है। बाबा जान पचास रुपया रोजाना थोड़े नहीं हुए। खुदा का शुक्र कीजिये।

नवाब इस कदर बोझ आपके ऊपर डालना मेरी हिम्मत गवारा नहीं करती।

शाह साहब 'मरहबा (फिर कहकहा लगाके) बाबा जान फ़कीर क्या अपने पास से देगा। देनेवाला और ही कोई है परलोक के खजाने से आपके लिए पचास रुपये रोज मन्जूर हुए हैं। लीजिये जाइये मजे उड़ाइये। खुदा की राह पर लो मैं।'

नवाब : 'मैं इस काबिल कहाँ था कि मुझको पचास रुपये भी मिलें। वल्लाह जिंदगी भर मैं किसी का अहसान न उठाऊँगा। मैंने पुरखों की जायदाद को भी छोड़ा। मुझे ज्यादा की जरूरत नहीं है।

शाह साहब (हिम्मत की तारीफ करके) 'अच्छा तो अबकी जुमेरात—आज तीन दिन है—सोमवार, मंगल, बुध सिर्फ दो दिन बीच में है। मैं आपको पचास रुपये रोज का नुस्खा बताऊँगा। मगर आज ही रात से जो नाम बताऊँ उसे पचास बार सोते वक्त पढ़ लीजियेगा। इस तीन दिन के अरसे में जो कुछ आप देखें उसे जैसा का तैसा मुझसे कह दीजियेगा।

नवाब 'बहुत अच्छा।

शाह साहब : 'अच्छा। अब रात ज्यादा आ गई। जाइए आराम कीजिये।

बत्तीस

नवाब साहब और खलीफा की गाड़ी में बैठ गये। घर की तरफ रवाना होते हैं।

खलीफा : लीजिये नवाब साहब खुदा ने आपको तो अकसीर का मालिक बना दिया।

नवाब 'हाँ शाह साहब की बातों से ऐसा ही मालूम होता है।

खलीफा : 'हम न कहते थे कि आपकी किस्मत में होगा तो यह खुद ही आपको बतायेंगे।'

नवाब : 'मगर मुझे तो तस्वीर का शौक है खाली अकसीर से क्या होगा?'

खलीफ़ा 'नवाब साहब जरा ठहरिये। एक दम सब मैना चाहना ठीक नहीं। आप अपनी जबान से कुछ न कहियेगा। दूसरे खयाल कीजिये तो तस्वीर के मालिक तो आप इस वक्त हैं क्योंकि सब्ज-क़बा भी परी आपके कब्जे में है। आज तक उसका मामला आपके साथ बिलकुल पाक रहा है।'

नवाब 'सब्ज-क़बा के अहसान से सर नहीं उठा सकता। इस वक्त में मेरे काम आई जब कहीं से सहारा न था। माँ तो अपने जाने मुझको छोड़ ही चुकी। चलते वक्त यह भी न खयाल रक्खा कि आखिर यह गुजर किस तरह करेगा। हाँ यह बात क्या थी कि रोज के खर्च के लिये तिलस्मी सदूक को देखिये।

खलीफ़ा : 'मुझे यकीन है कि कुछ न कुछ नक़द खर्च के लिए सब्ज-क़बा ने तिलस्मी संदूक में रखवा दिया होगा।'

नवाब 'सदूक की कुंजी तो मेरे पास है।

खलीफ़ा : 'ताले का बन्द होना हम इन्सानों के लिए है। जिन्नों को बग़ैर कुंजी ताले के खोलने और बन्द करने में कोई दिक्कत नहीं होती।

नवाब : 'अजीब बात है।

खलीफ़ा : 'इसमें अचम्भे की क्या बात है? तिलस्मी कुंजी से हर ताला खुल सकता है।'

नवाब 'मगर यह जो मशहूर है कि लोग जिन्नों और परियों को शीशे में उतार के बन्द कर देते हैं, यह लोग उसे क्यों नहीं खोल सकते?

खलीफ़ा 'ऐसे शीशों पर जिनमें जिन्न व परी कैद किए जाते हैं सुलेमानी मोहर लगाई जाती है। उसे यह लोग नहीं खोल सकते।

नवाब 'सुलेमानी मोहर क्या चीज है?

खलीफ़ा : 'शीशा या मोहर कोई खास नाम जिसमें हजरत सुलेमान का नाम आता है, पढ़कर लगाई जाती है। उसे कोई नहीं खोल सकता। देव हो या जिन्न हो या परी।

नवाब 'मगर हजरते इन्सान खोल सकते हैं।'

खलीफ़ा : 'जी हाँ।

नवाब : 'आहा ! खूब याद आया । यह अलिफ़ लैला में जो मछली वाले का क़िस्सा है कि उसने दरिया में जाल डाला । उसके जाल में एक ताँबे का लोटा निकला । उस ताँबे के लोटे को जो खोलता है तो उसमें से एक धुआँ सा निकला और वह आस्मान तक ऊँचा हुआ । उससे एक देव उसके सामने खड़ा हुआ । मैं समझता हूँ कि उस लोटे पर भी सुलेमानी मुहर लगी होगी ।

खलीफ़ा जी और क्या । हाँ खूब याद आया । यह तो कहिये बेगम साहिबा जोड़ा-जामा वग़ैरह की कुंजियाँ भी अपने साथ लेती गई हैं ?

नवाब 'मालूम नहीं । मगर मेरा यह ख़याल है कि लेती गई होंगी । क्यों ?

खलीफ़ा : 'अगरचे खुदा ने आपको सब कुछ दिया है मगर फिर भी अपने बुज़ुर्गों की निशानियाँ सबको प्यारी होती हैं । जायदाद मौरूसी के काग़ज़-पत्र अपने वालिद की अँगूठियाँ कपड़े यह सब चीज़ें आपकी हैं । उनको अपने क़ब्ज़े में कीजिये । और सब से बढ़कर मुझको एक चीज़ का ख़याल है । मरहूम नवाब साहब के पास एक किताब जन्तर की थी । उसे ढूँढ़ लीजिये । नवाब साहब हमेशा कामिल उस्ताद की तलाश में रहे और उनको न मिला । आपको ख़ुदा के फ़ज़ल से ऐसा कामिल उस्ताद मिल गया है । उस किताब की सब मुश्किलें हल हो जायेंगी ।

नवाब : 'हाँ यह खूब बात है । अच्छा मैं पूछूँगा ।

खलीफ़ा : 'पूछना कैसा तमाम कोठरियों पर क़ब्ज़ा कीजिये । यह मौक़ा अच्छा मिल गया है । बेगम ऐसे में मुर्शिदाबाद गई हैं । जो जो चीज़ें आपकी ज़रूरत की हैं निकाल लीजिये । बेगम साहिबा आपकी माँ ज़रूर हैं मगर फिर भी औरत जात हैं अक़्ल की कम । और अब तो वह आपसे फ़िरंट हो ही गई और भी कई बातें हैं जिनसे उनका इरादा बिल्कुल अलहदा हो जाने का मालूम होता है ।'

नवाब अम्मी से मुझको यह उम्मीद नहीं ।'

खलीफ़ा : 'नवाब आपको किस तरह समझाऊँ । कुछ बातें कहने लायक़ नहीं हैं । अक़्लमन्द को इशारा काफ़ी है ।

नवाब 'यह पहेली मेरी समझ में नहीं आती। साफ़ कहिए तो समझूं।'

वसीक़ा साफ़ साफ़ न कहलवाइये। आपको रंज होगा। बस जितना अर्ज़ किया है उस पर अमल कीजिये। बेगम साहिबा अपना पूरा इन्तज़ाम कर चुकी हैं। आपके फ़रिश्तों को भी ख़बर नहीं।

नवाब 'पूरा इन्तज़ाम क्या? शादी में करने का नहीं। फिर इन्तज़ाम करेंगी तो क्या करेंगी।

वसीक़ा कैसी आपकी शादी। वहाँ कुछ और गुल खिला है। अफ़सोस बेगम साहिबा से यह उम्मीद न थी।

नवाब 'हैं! हैं! यह कहते क्या हो? आख़िर अम्मीजान से किस बात की उम्मीद न थी और उन्होंने क्या किया? लिल्लाह, साफ़ कहो।

वसीक़ा : अब क्या साफ़ कहलवाइयेगा। मैं तो हरगिज़ न कहता। मगर आप इसरार करते हैं तो कह देता हूँ। आपकी वालिदा साहिबा ने भी वही किया जो अक्सर रईसों की बीवियों ने अपने शौहरों के मरने के बाद किया था।

नवाब (किसी क़दर नाराज़ होके) यह क्या आपने कहा मैं नहीं समझा। और साफ़ कहिये।

वसीक़ा 'लीजिये और साफ़ सुनिये। आपकी वालिदा साहिबा निकाह की फ़िक्र में हैं। सब बात ठीक ठाक हो गई है। भाई साहब की मंज़ूरी के लिये मुर्शिदाबाद गई हैं। वहीं से आकर निकाह हो जायगा।

नवाब 'लाहौल वला कुव्वत। बस बस ख़ुदा जाने आपसे किसी ने क्या झूठ कह दिया है। तोबा तोबा।

वसीक़ा 'बस इसी से मैं न कहता था। आपको यह ख़याल नहीं आता कि इतनी बड़ी बात वाहियात जिसकी कोई असलियत नहीं मैं आपके सामने कहता।

नवाब 'कोई असलियत नहीं। बिल्कुल ग़लत।'

वसीक़ा बात सच्ची है। बिल्कुल सही।

नवाब : 'जिसने कहा झूठ कहा।

वसीक़ा 'मैंने कहा और मैं सच कहता हूँ।

नवाब : 'आपको ज़रूर साबित करना होगा और अगर आपने साबित न किया तो आपसे रंज होगा।

खलीफ़ा : 'इस वक़्त हुज़ूर बेकार नाराज़ होते हैं। यह सब बातें उस वक़्त कहने की हैं जब मैं साबित न कर सकूँ। और मुझसे रंज की क्या बात है। मैं नौकर हूँ? जब चाहिये निकाल दीजिये।

यह फ़िक़रा ज़रा चुभता हुआ था क्योंकि ज़ाहिरा खलीफ़ा नौकर नहीं थे। सिर्फ़ दोस्ताना आना जाना था। जो लोग बड़े आदमियों के साथ दोस्ताना ताल्लुक़ात रखते हैं वह नौकरों से बहुत अच्छे रहते हैं। इसलिये कि खाना खाना पीना रंडी नाच थियेटर अपना खर्च, घर भर का खर्च सब नवाब साहब के ज़िम्मे। फिर हर मौके पर नवाब साहब के बराबर बैठते हैं। बातचीत में बराबरी। किस्सा मज़ाक गाली गलौज सब में बराबरी। ग़रज़ कि ऐसे लोग सब तरह अच्छे रहते हैं। फिर यह कि जब कोई बात पड़ी तो यह कहने को मौजूद हैं—क्या हम किसी के नौकर हैं?

नवाब : निकाल देना कैसा? कुछ आप नौकर नहीं हैं और न मैंने कभी ख़याल किया।

खलीफ़ा : 'यह आपकी रईसी है। मैं अपने आपको एक अदना नौकर समझता हूँ।

नवाब : 'मैं आपको आला दर्जे का दोस्त ख़याल करता हूँ। मगर इस मामले में आपने ग़लती की। नहीं मालूम किसी ने झूठ सच गढ़ दिया है। इतनी बड़ी बात और ऐसी बे सिर पैर की। यह कहा किसने आपसे? ज़रा उसका नाम तो मुझको बताइये।

खलीफ़ा 'नाम भी बता दूँगा।

नवाब : 'तो बताइये ना।

खलीफ़ा : 'नाम बताना कैसा सामना करा दूँगा।

नवाब : 'वाह इससे बेहतर क्या है।

अब गाड़ी घर पर पहुँच गई थी। घर पर पहुँच कर रात की तरह इस्तराहत किया। जुमेरात का दिन था। शाह साहब के कहने के मुताबिक़

शराब नहीं पी। रास्ते में यह बात सुनी थी। तबीयत में गुस्सा भरा हुआ था। आज की सोहबत बेमज़ा रही। नाम के लिये खाना खाया। खलीफ़ा जी से देर तक बात नहीं की। आखिर खलीफ़ा जाने लगे।

नवाब 'अच्छा तो कल ज़रूर ज़रूर उस शख्स का सामना करा दीजिये वरना ज़रूर रंज होगा।

नवाब यह आखिरी बात कहना नहीं चाहते थे मगर अपने आप ज़बान से निकल गई।

खलीफ़ा (बात का रुख खूब समझे हुए थे और अपनी ताकत पर पूरा-पूरा भरोसा था) 'मेरे आपके हरगिज़ मलाल न होगा। इसलिये कि मैंने जो कहा है सच कहा है और उसे कल साबित कर दूंगा और उस शख्स का सामना भी करा दूंगा।

तेवीस

ग्यारह बजे रात को नवाब साहब ने गुसल किया कोठे पर गये। वहीं दुबारा नहाये। आबू के ताक़ में दाखिल हुए। संदूक खोला। पांच सौ रुपये कलदार, नये सन के उस मख़मल की थैली में बंद कलाबत्तू में बंधे हुए लिए। और एक रुक्का लिखा। रुक्के में यह लिखा था कि खर्च की तरफ़ से इत्मीनान रहे। ज़रूरत होने पर जितना चाहिये हाज़िर किया जायगा। बारह बजे फिर इन्तज़ाम किया गया। अब की बार परिस्तान की शराब का शीशा खिला। एक दौर पन्ने के प्याले में भर के पिया। आंखों में नशा आया। आज नवाब साहब ने मिर्ज़ा रुसवा साहब का यह शेर, जो किसी से सुन रक्खा

था एक पर्चे पर लिखकर चिट्ठी-रसी के खाने में डाल दिया।

यह तो माना हमने हाँ शीशे में है बाक़ी शराब
कुछ मज़ा देती नहीं है हमको बेसाक़ी शराब।

चंद मिनटों के बाद फिर अलारम हुआ। यह रुक्का मिला। 'आलम-आब औरतों की बात से जो सदमे तुमको पहुँचे उससे हमको सख़्त रंज हुआ। हमसे मुहब्बत का नाता जोड़ो बेमुरव्वतों से मुँह मोड़ो।' आज तिलस्मी कमरे में तिलस्मी दरवाज़े के सामने एक क़द-आदम आईना लगाया गया था और एक जवाहर-जड़ी-कुरसी उसके सामने बिछी थी। आईने के चौखटे पर तिलस्मी हुरूफ़ जो लिखे हुए थे हम उनका तर्जुमा यहाँ लिखे देते हैं।

तुम अपने हुस्न के जल्वे से क्यों रहो महरूम
तुम आईने की तरफ़ देखो हम तुम्हें देखें।

सब्ज़-क़बा की चोट।

आज बड़े मुल्क का नज़ारा है। आशिक़ व माशूक़ दोनों का जल्वा एक ही आइने में नज़र आता है। यह उसकी सूरत पर आशिक़ है। जब कोई किसी को चाहता है माशूक़ के दिल में एक ख़ास क़िस्म का दर्द पैदा हो जाता है। इस दर्द का इज़हार देखने और सामना होने के वक़्त आँख और भौंह से होता है।

कुछ नज़ाकत इधर है कुछ झिझक उधर। नाज़-भरी निगाह इधर है, लाज की शर्म उधर। आजकल माशूक़ों का किसी पर आशिक़ होना भी एक दिल्लगी का ढंग है बल्कि ज़ुल्म है। यह समझ लीजिये कि ऐसे लोग जिस पर आशिक़ हुए, उसे मार ही डाला। जैसे यही नवाब साहब का मामला आपको याद है कि पहला दीदार टूटे खंडहर में हुआ था। फिर वहाँ एक ही बार देखने से नवाब का क्या हाल हुआ। इसके बाद मालूम हुआ कि यह जिस परी की सूरत के दीवाने हैं वह इन पर ख़ुद ही आशिक़ है। इस दिल को ख़ुश करने वाले हाल को सुनके नवाब का जो हाल हुआ उसकी कैफ़ियत और लुत्फ़ को वही ख़ूब समझ सकते हैं जिस ख़ुश-क़िस्मत पर कभी कोई अच्छी सूरत वाला आशिक़ हुआ हो।

क्या ख़ूब वह मुझको चाहते हैं
यह भी एक पुर्र दिलबरी है।

एक हकीम का क़ौल है कि अगर कोई तमाम उम्र रात को यह ख़्वाब देखता रहे कि मैं बादशाह हूँ तो गोया उसने तमाम उम्र बादशाहत की। यही हाल हमारे नवाब साहब का था।

इसके बाद हारमोनियम के बजने की आवाज़ आई और यह मालूम हुआ जैसे पर्दे के पीछे कोई नाच रहा है। छम छम घुँघरू बोल रहे हैं। ग़ज़ब के तोड़े लिये जाते हैं कि दिल पामाल हुआ जाता है। हर सम के साथ नग़्मा-ख़्वां तिलस्मी दरवाज़े में आ खड़ी होती है और उसका अक्स सामने आईने में दिखाई देता है। फिर यह ग़ज़ल गाई गई। इसके एक एक मिसरे बल्कि एक एक लफ़्ज़ को नग़्मा-ख़्वां आँख के इशारे से बताती जाती थी। नवाब साहब हैरान बैठे हुए थे।

हिजाब आइने से ऐ फ़रिश्ता-रू क्या है
मगर उठा के ज़रा देख अक्स क्या है।
बताओ ऐ दिले आशिक़ ख़राब तू क्या है
जो तू करे अदावत तो फिर अदू क्या है।
तमाम शहर में रुसवा ख़राब आवारा
तुम्हारे चाहने वाले की आबरू क्या है।
सिलाए चाक को आगाह अगर तो दिखलाओ
जिगर को चाक करेंगे अभी रफ़ू क्या है।
गुल आईने से हो रश्के-निगार ख़िल्वत में,
कोई सुने तो कि आपस में गुफ़्तगू क्या है।
अभी तो रश्क ने बदला है कुछ भी ही सा रंग,
बहेंगे आँख से लख़्ते-जिगर लहू क्या है।
यही ख़ुशी है तो इज़हारे शौक़ से तौबा
मलाल जिससे हो तुमको वह गुफ़्तगू क्या है।

बसी हुई है जो खुशबू तेरे पसीने की
वह पैरहन को है मालिम कि मालूम क्या है।
नहीं मुराद अगर बज़्म-ओ-दिल से ऐ साकी,
फिर इत्तफ़ाक़ में पैमाना क्यों छलक गया है।

कमरे की सजावट को दीवार सब्ज़ पन्ने के रंग के कंवलों की रोशनी और गोलों पर उसका असर राग का गहरा हारमोनियम के ऊँचे सुर, तबले की गमक घुँघरुओं की आवाज़, छम-छमा की थिरकन सूरत दिल-फरेब इशारे, और सबके ऊपर परिस्तानी शराब का नशा जिसमें हर तरह के नशे का जौहर शामिल था इस हालत में बेखुदी को कहीं लेके जाना था ? आखिर नवाब साहब ने कुर्सी पर आराम फर्माया।

चौंतीस

शाह साहब के कहने के मुताबिक बेगम साहिबा के सिरहाने ज़मीन खोदी गई। हाथ भर गहरा खोदने के बाद एक पीतल की तख्ती और एक ताँबे का पुतला निकला। इस तख्ती पर एक नक्शा बना हुआ था और पुतले पर तिलस्मी हुरूफ़ खुदे थे। शाम को यह दोनों चीज़ें शाह साहब को दिखलाई गई। तख्ती हुब के अमल की थी और पुतले पर बुग्ज़ का अमल किया गया था। तख्ती पर चाहने वाले और जिसको चाहा है उसके नाम खुदे थे। तख्ती पर बेगम साहिबा और एक और शख्स का नाम था जिसको नवाब साहब नहीं जानते थे। पुतले पर बेगम साहिबा और छोटे नवाब के नाम थे।

शाह साहब 'आप समझ सकते हैं कि यह दोनों चीज़ें किसने गड़वाई हैं

और जिसने मारी है।

नवाब साहब और ख़लीफ़ा जी ने मिलकर इन्कार किया।

शाह साहब : 'यह सब बदस्याम जोशी की कारस्तानियाँ हैं और यह दोनों चीज़ें आपकी ममा के हाथ की मारी हुई हैं। आपको क्या मालूम दुनिया में कौन दुश्मन है और कौन दोस्त? तिलस्मी दुनिया में दोस्त दुश्मन उन रिश्तों से नहीं जिये जाते जो रिश्ते दुनिया में क़ायम हैं। वहाँ का हिसाब कुछ और ही है। मुमकिन है कि दीखने वाली दुनिया में कोई आपका दोस्त या प्यारा हो बल्कि क़रीबी रिश्तेदार हो। तिलस्मी दुनिया में उसका ताल्लुक़ किसी ऐसे ग्रह से है जो आपका क़ुदरती दुश्मन जैसे रक़ीब है। लिहाज़ा वही दोस्त या अज़ीज़ आपका उस दुनिया में दुश्मन हो जायेगा और उससे आपकी जान को ख़तरा होगा।

ख़लीफ़ा 'वाक़ई क्या उसूल बताया है।

नवाब 'दुरुस्त है। यह बातें मेरे दिमाग़ में भी नहीं थीं।

शाह साहब आपके ज़हन में क्यों होतीं? यह वह बात मैंने आपको बतलाई है कि बड़े-बड़े आमिल इसको नहीं जानते और इसी वजह से धोखा खाते हैं। यही हाल ज्योतिष की दुनिया में है। जैसे वह शख़्स ऐसे वक़्त में पैदा हुए हैं कि ज्योतिष के अनुसार उन्हें दुश्मनी करनी चाहिए। अगरचे उनमें ज़ाहिरी दोस्ती या रिश्तेदारी हो मगर असल में वह दुश्मन होंगे। यह दुश्मनी किसी न किसी पैराये में ज़ाहिर होगी। जैसे आपने देखा होगा कि अक्सर माँ बाप या उस्ताद अपने शागिर्दों को बहुत फटकारते मारते पीटते रहते हैं। असलियत उसकी यही है कि ज्योतिष या तिलस्म के संसार में इनकी उनकी दुश्मनी है। ख़ुद मेरे उस्ताद ने एक दिन मुझको तख़्ती खींचकर मारी। ए देखिये (सर की तरफ़ इशारा करके) यहाँ से सर खिल गया। मेरा ख़ून बह गया।

'उस्ताद मुझ पर बहुत ही मेहरबान थे। बाद को उन्हें ख़ुद अफ़सोस हुआ। आख़िर उन्होंने अपना और मेरा जनम-पत्र देखा। मालूम हुआ कि सितारों के हिसाब से उनके मेरे दुश्मनी है। और उस दिन मंगल उनके दाहिने पर था।

उसने गोया मार डिमवाई। हिसाब से उस दिन उसके हाथ से मुझे क़त्ल होना था। फिर मालूम हुआ कि मेरा सितारा भी ज़बरदस्त था उसी ने रोक दिया वरना ऐसे मेहरबान के हाथ से मेरी जान नहीं होती।

समीफ़ा 'आज आपने ऐसा अजीब-ओ-गरीब भेद इस अममी का बतलाया। मेरी माँ भी और सब लड़कों को बहुत चाहती हैं मगर मुझसे हमेशा नाखुश रहती हैं। बचपने में बहुत मारपीट किया करती थी। और किसी लड़के लड़की को उन्होंने फूल की छड़ी तक नहीं छुआई। मैं खुद हैरान रहता था कि यह माजरा क्या है। आज मालूम हुआ कि उसकी क्या वजह थी।

शाह साहब : 'अगर आप अपना और अपनी माँ का जन्म-पत्र मेरे पास ले आइये तो मैं साफ़-साफ़ बता दूं कि दुश्मनी की वजह क्या है। ज़ाहिर में तो ऐसा मालूम होता है कि यह दुश्मनी तिलस्मी संसार की है। अच्छा आप अपनी माँ का नाम (अच्छा नाम न सही राश ही) बता दीजिये तो शायद मैं कुछ ज़्यादा कह सकूँ।

उसीफा की ने अपनी माँ के नाम का पहला अक्षर बता दिया।

शाह साहब : 'अहा ! मुझे ताज्जुब है कि उन्होंने बचपने में आपका गला क्यों न घोंट दिया।

समीफ़ा 'वाकई आप सही कहते हैं। वह मुझसे बचपने से ही ख़िलाफ़ रहती थीं। सुना है कि एक दिन ऐसा मारा था कि अधमरा कर दिया था। वह तो मार ही डालती मगर दादी अम्माँ ने जान बचा ली।

शाह साहब : 'बात यह है कि उन पर जिस ग्रह का असर है वह आपका असली दुश्मन है।

उसीफा : 'जी हाँ ठीक फ़रमाते हैं। सिवाय इसके और वजह कोई समझ ही में नहीं आ सकती।

शाह साहब : 'वजह क्या समझ में आये उनका दोस्त जान का दुश्मन हो। और जो तिलस्मी दुनियाँ और ज्योतिष-संसार दोनों की दुश्मनी जमा हो जाती है उस सूरत में जान बचना कठिन है।

समीफ़ा : 'क्या ऐसा भी होता है ?

शाह साहब : 'खुद नवाब साहब की एक मिसाल मौजूद है।'
खलीफ़ा : 'क्या यहाँ दोनों मसावतें जमा हो गई हैं।'
शाह साहब : 'बेशक।'

पैंतीस

हाय कमबख़्त में अब आके गले से मिल जाएँ।
और फिर पूछते आपोगा तमन्ना क्या है ॥

चाहे सोते में हो चाहे जगने में किसी का बेपर्दा सामने आ बैठना, मेंहदी रचे हाथ से शराब पिलाना, मेहरबान होकर गले लगा लेना यह ऐसी बातें हैं जो दिल पर नक्श हो जाती हैं। यह ऐसा ख़याल है कि कभी दिल से नहीं निकलता और यह वह ख़्वाब है, जिसकी अगरचे कोई ताबीर न हो, लेकिन तमाम उम्र नहीं भूलता।

खलीफ़ा ने आज नवाब के लिए जिस पर वह तीर मारा था और ऐसा तीखा ज़ख़्म लगाया था, जिसका पुर होना बगैर इस इलाज के मुमकिन ही न था। मगर यह मेहरबानी ऐसे वक़्त और ऐसी हालत में हुई कि उसकी असलियत जान लेने के बाद भी सिवाय ख़्वाब के और कुछ समझ ही न सकते थे। सुबह के वक़्त नवाब साहब अपनी पलँगड़ी पर से निहायत चुप चाप उठे। तिलस्मी मकान में ताला लगाकर ज़ीने से नीचे उतरे। ज़ीने के दरवाज़े में हमेशा की तरह अपने हाथ से दोहरा ताला चढ़ाया। खलीफ़ा जी पहले ही से इन्तज़ार कर रहे थे और एक तरफ़ फ़र्श के कोने पर वही इमामन महरी खड़ी

हुई थी। नवाब साहब को देखकर खलीफ़ा जी और वो महरी दोनों उठ खड़े हुए। मुजरा तसलीम के बाद नवाब साहब और खलीफ़ा जी बैठ गए। वो महरी हाथ जोड़े हुए सामने खड़ी रहीं।

मदार बख्श ने हुक्का लगाया। खलीफ़ा जी के इशारे से वह सब किनारे किनारे हो गये। सिर्फ तीन आदमी बाकी रह गये। नवाब साहब समझ गये कि रात को जो खलीफ़ा जी ने बात कही थी उससे महरी को भी कुछ ताल्लुक है। खलीफ़ा जी ने बातचीत छेड़ी।

खलीफ़ा : इमामन देखो तुम असल में बड़े नवाब साहब की नमक-ख्वार हो। तुमको अब (छोटे नवाब की तरफ इशारा करके) इनकी खैर-ख्वाही चाहिये। हां वह कागज तो दिखाओ।

महरी 'हाँ यह बात सच है, मगर मुझे अपनी जान और आबरू का खयाल है। ऐसा न हो किसी के मुँह से कुछ निकल जाय तो मैं तो कहीं की न रहूँगी।

खलीफ़ा 'इससे खातिर जमा रखो। नवाब साहब की सलामती में तुम्हारा कोई कुछ बना बिगाड़ नहीं सकता। जो तनख्वाह तुम्हें बेगम साहिबा देती हैं वह नवाब साहब देंगे और जान और आबरू पर तुम्हारा क्या नुकसान हो सकता है?

महरी बस यही मेरा मतलब है। और आप जानते हैं कि मैं ऐसी बातों से दूर भागती हूँ। मगर यह तो कहिये इत्तफ़ाक़ से मुझे यह कागज मिल गया इस पर बेगम साहिबा की मुहर लगी थी। मैं मुहर उनकी पहचानती हूँ। यह कागज मैंने उठा लिया। आपको दिखाया। आपने कुछ और ही कहा। यह सारी कारस्तानी मुए करीम खां की है। मैं उसे सीधा आदमी जानती थी। यह क्या मालूम था कि मुआ बूढ़ा बगलोल नमक-हराम बदमाश करता है।

यह कहकर महरी ने बटुए से कागज निकाल कर आगे फेंक दिया। यह एक इकरारनामे का मसौदा था जो हकीम साहब की तरफ से बेगम साहिबा के नाम पर था। इसकी पुश्त पर चिट्ठी-नवीस के हाथ की मंजूरी लिखी थी और बेगम साहिबा की मुहर लगी थी। मज़मून इकरारनामे का यह था—

मैं कि हकीम————वल्द————साकिन————का हूँ।

चूँकि बेगम साहिबा ने मेरे साथ निकाह कानूनी और दायमी करने का मुआहदा किया है लिहाजा यह इकरारनामा मय नीचे दी हुई शर्तों के लिखकर रजिस्ट्री कराये देता हूँ।

(१) यह कि निकाह के वक्त एक हजार रुपया नकद बतौर मेहर पेशगी बेगम साहिबा को दूँगा।

(२) बाद निकाह तमाम उम्र बेगम साहिबा के साथ निहायत मुहब्बत और इज्जत से पेश आऊँगा।

(३) बेगम साहिबा को अपने नकद रुपये और जायदाद का पूरा-पूरा अख्तियार रहेगा। मुझको उनकी जाती जायदाद में किसी तरह की दस्तन्दाजी का अख्तियार न होगा।

(४) मैं बतौर रोटी कपड़ा व खर्च पानदान मुबलिग पचास रुपया माहवार बेगम साहिबा को दिया करूँगा और अगर इस माहवार के देने से इन्कार करूँ तो बेगम साहिबा को अख्तियार होगा कि नालिश करके मेरी जायदाद मनकूला व ग़ैर-मनकूला से व मेरी जात-खास से वसूल कर लें।

(५) सिवाय एक मकान के जिसमें मेरी ब्याहता ओक मुसम्मात रहती है और कुल जायदाद अपनी मैं इस इकरारनामे की तहरीर के मुताबिक बेगम साहिबा के पास रहन करता हूँ। जब तक मेहर का रुपया पच्चीस हजार अदा न होगा उसको किसी और के पास रहन व बै न कराऊँगा। अगर ऐसा करूँ तो कसूरवार हूँगा।

(६) बेगम साहिबा को कभी मजबूर न करूँगा कि मेरी ब्याहता ओक के साथ रहें और न बेगम साहिबा को किसी रिश्तेदार के मकान पर जाने से रोकूँगा चाहे वह रिश्तेदार लखनऊ में हो या लखनऊ से बाहर रहता हो।

(७) बेगम साहिबा का इरादा सफ़र के लिये जाने का है। जब बेगम साहिबा जायेंगी तो उनको जाने दूँगा और अगर मुझको अपनी खुशी से साथ ले चलेंगी तो जाऊँगा वरना साथ चलने पर भी मजबूर न करूँगा।

(८) बेगम साहिबा का कहना है कि मेरे पहले शौहर की कोई औलाद

न मेरे पेट से है और न किसी और ब्याही या बेब्याही औरत से है। न कोई और वारिस मेरे पहले शौहर का मौजूद है। जिस कदर जायदाद पहले शौहर की है मेरे कब्जे में है। यह सब बिना किसी दूसरे की शिरकत मेरी बाती है। अगर कोई शख्स पहले शौहर की औलाद या वारिस होने का दावा करे तो उसकी पैरवी और सबूत मेरे (बेगम साहिबा के) जिम्मे है।

(६) बाद निकाह बेगम साहिबा मौजूदा ताल्लुकात और रहने का मकान छोड़ करके कोई दूसरा मकान किराये पर या मोल लेकर वहां रहेंगी।

(१) इस मकान की रखवाली और हिफाजत मेरे जिम्मे रहेगी और रात को मैं भी उसी बेगम साहिबा के रहने के मकान में रहा करूँगा।

(११) इस इकरारनामे की पाबंदी न सिर्फ मुझको बल्कि जहाँ तक मुमकिन होगा मेरे वारिसों को भी करनी होगी।

यह चंद कलमे मय शर्तें होश की हालत में खूब समझकर लिख दिये और रजिस्ट्री करा दिये ताकि सनद रहें और वक्त जरूरत पर काम आयें।

इबारत मुख्त इकरारनामा
मुझे इकरारनामे की शर्तें पसंद और कबूल हैं

मुहर

इस बात का अन्दाजा नहीं हो सकता कि इस इकरारनामे की इबारत को पढ़कर कम उम्र अमीरजादे के दिल पर क्या सदमा गुजर गया होगा। किसी तरह दिल को यकीन ही न आता था कि ऐसी चाहने वाली माँ प्यारे इकलौते बेटे के साथ यह सलूक करेगी। कई बार इकरारनामे को पढ़ा। मुहर को गौर से देखा। दिल में कहते थे कुलसुम बेगम हाय यही तो मेरी माँ का नाम है। माँ कैसी? उसको तो मेरे बेटे होने से इन्कार है। यह क्या बात है? मैं अपने बाप का बेटा नहीं। कुलसुम बेगम के पेट से न किसी और औरत के पेट से। यह क्या सितम है? हाय इस माँ ने (फिर और मैं क्या कहूँ) कहीं का न रक्खा शहर में मुँह दिखाने के काबिल न रहा। अच्छा होगा अब मैं शहर में क्यों रहने लगा? इन ख्यालों के साथ ही परित्याग का ख्याल आया दिल को

नवाब — 'फ़ौरन गाड़ी तैयार कराओ।'

खलीफ़ा — 'गाड़ी की ज़रूरत नहीं। इस वक्त यों ही चलना चाहिये। ज़रूर है कि शाह साहब रास्ते में मिल जावें।

नवाब और खलीफ़ा पैदल ही घर से रवाना हुए। इन दोनों को जाते हुए सिवाय चोबदार के और किसी ने नहीं देखा। कश्मीरी मुहल्ले के चौराहे पर शाह साहब से मुलाकात हो गई। तीनों आदमी चारबाग स्टेशन पर पहुँचे। यहाँ अम्बाला का टिकट लिया। देहली को रवाना हुए। दूसरे दिन शामों शाम देहली पहुँचे। यहाँ से तार दिया गया। नवाब साहब के नौकर आठ आदमी तीसरे दिन लखनऊ से रवाना हुए। चौथे दिन मोर की सराय में सब नवाब साहब से मिल गये। यहाँ से लाहौर का टिकट लिया गया। मुलतान सक्खर होते हुए कराची में जहाज़ का टिकट लिया। बम्बई में दाखिल हुए।

घर से बे-सरो-सामान चल खड़े हुए थे मगर रास्ते में किसी बात की ज़रूरत न हुई। हर मुकाम पर जब खर्च की कमी होती थी नवाबके सिरहाने से रुपयों की थैलियाँ निकलती थीं। अब शाह साहब ने मुल्क राजपूताना की सैर का इरादा ज़ाहिर किया बम्बई में नवाब साहब ने अब सब साथियों के फ़कीरी का बाना किया।

सिवरनी तहमदें बँधी हुई थीं। चिमटे हाथ में। नवाब साहब के हाथ में चाँदी का चिमटा था। उसमें सोने का कड़ा पड़ा हुआ था। कान में मुन्दे का लटकन। इस फ़कीरी हैसियत से विन्ध्याचल पहाड़ पर अकसीर की बूटियाँ तलाश होने लगीं। नवाब साहब और शाह की जिस्म और परछाईं की तरह साथ थे।

एक एक बूटी और एक एक पत्ती का तलाश नवाब साहब को बताया जाता था और नवाब साहब सीखते जाते थे। इसी बीच में चालचूर का अमल भी शुरू करा दिया था। जब किसी जगह ठहरे खास खास मंत्र पढ़ना शुरू किये। सिर्फ़ एक बात में कमी रहती थी। शाह साहब ने कह दिया था कि जिस दिन यह कमी न रहेगी सातों देशों पर राज ही जायगा। दारा और सिकन्दर से बढ़ा हुआ मुल्क हाथ आयगा। उधर अकसीर की बूटी रोज़ मिलती थी। मगर वह पूरी न होती थी। पुरानी तरकीबों से सोना बनाने के कई नुस्खे

बना दिये गये। सफ़र में अक्सीर का सामान नहीं मिल सकता था वरना सैरों सोना चाँदी तैयार हो जाता। यूनानी नुस्ख़े में एक चीज़ ख़ास क़िस्म का तांबा था। उस्ताद कामिल का क़ौल था कि सिवाय नख़ास-अकबरी के और किसी क़िस्म के तांबे से सोना बनाना मर्दों के लिये मुश्किल है। एक दिन जब पुर में एक पंसारी की दुकान पर वो तांबा नख़ास-अकबरी हाथ आ गया। शाह साहब ने अक्सीर सोना बना के दिखा दिया। तरकीब नवाब साहब को बता दी। वो तांबे की टिकिया बनी वह बाज़ार में बेची गई। चौबीस रुपये बारह आने का भाव था। उनचास रुपये आठ आने को बिक गई। इस तमाम रक़म का पक्का और मठाई खाना तैयार हुआ। दादा पीर की नज़र दिलवाकर फ़क़ीरों और मोहताजों को तक़सीम किया गया। तमाम सराय में धूम हो गई। बकरत वालों ने कीमियागर समझकर घेरा। वहाँ से रात को रवाना हुए। इन्दौर में आए। यहाँ नवाब साहब के साथी एक पहलवान को, जो अब फ़क़ीर भेस में था राजा इन्दौर के एक पहलवान ने पहचान लिया। बड़ी ख़ातिरदारी की। उसके बाद बाबाजी और नवाब साहब की मुलाक़ात बड़ी धूमधाम से हुई। बाबा साहब रियासत में जगह देते थे। नवाब साहब दुनिया छोड़ चुके थे। यहाँ से घूमकर रात का चल दिये। ग्वालियर में बहुत दिनों तक रहे। पुराना क़िला देखा। तानसेन की क़ब्र पर गए। लश्कर में एक रंडी बहुत मशहूर रहती थी। उसका मुजरा सुना। बाई को ज़्यादा इनाम दिया। दूसरे दिन रंडी फिर आई। आज ही मुजरा किया। नवाब साहब से मेल करने लगी। मुरीद होना चाहा। शाह साहब ने मना किया। जब उस रंडी ने ज़्यादा घेरा शाह साहब ने कूच बोल दिया।

नवाब साहब के सफ़र का पूरा हाल अपने क़लम से दिलचस्प है मगर बहुत लम्बा होने की वजह से हम उसे मजबूर होकर नहीं लिख रहे हैं। मगर एक दिन का वाक़या जो निहायत दिलचस्प है नीचे चलकर लिख देते हैं। ख़ुलासा यह है कि दो डेढ़ बरस तक तमाम हिन्दोस्तान की ख़ाक छानते फिरे। इस सफ़र में पचास साठ हज़ार रुपया ख़र्च हुआ यह सब नुस्ख़ा-कीमिया के ज़माने में पैदा किया। इस बीच में नवाब कई इल्म सीख गए—कीमिया रीमिया और

सीमिया। (जिसकी बाबत यह कहा गया है कि सिवाय पहुँचे हुए फ़कीरों के कोई नहीं जानता) सफ़र की उम्र कोता होती है। एक दिन शाम को तिलस्मी लश्कर पहुँचा।

१२१२१११६२१२१२६ । १८१२२१२२११४२२१२१

अब कुछ खौफ़ नहीं। वतन को रवाना हो।

छब्बीस

ख़ुदा जाने किधर लेजायगा आज
मेरा दिल मुझको दीवाना बना के।

छोटे नवाब को जंगल-जंगल फिरते हुए पूरे ग्यारह महीने हो गए। वह बीमन बूटी कहीं नहीं मिलती, जिस पर बादल तोले और पाव रत्ती अकसीर बनना मौकूफ़ है। आज जबलपुर के पास एक छोटा सा गाँव है। पहाड़ के नीचे थोड़ा सामान बाकी है। जब यहाँ पहुँचे हैं, यही मुकाम हुआ है। बनिए की दुकान के सामने एक बहुत पुराना इमली का पेड़ है। उसके चारों तरफ़ एक बड़े चबूतरे पर सब के बिस्तर लगे हुए हैं। बाकी लोग खाना पकाने में लगे हैं। साईस घोड़ों को मल रहे हैं। शाह साहब दिन भर के थके मांदे ध्यान में मग्न बैठे हैं। नवाब साहब पहले इधर उधर टहला किए। फिर जी में आया एक ज़रा आगे और चलें। सामने एक छोटी सी पहाड़ी है। इरादा किया उसके ऊपर चढ़ के देखें उस तरफ़ क्या है। क्या है इन की सपुर्दी पे हमारे और पाठकों के दिल पर मामूली असर से ज़्यादा नहीं हो सकता मगर छोटे

नवाब के दिल का हाल और ही कुछ था। सब्ज-परी की सूरत जिस पर मस्त थी यह भी यकीन था कि वह मुझ पर जान देती है मगर कुछ ऐसी लाचा रियाँ हैं कि सामने नहीं आ सकती। खर्च का भार उसी के जिम्मे है। घर में बे-सरोसामान निकल खड़े हुए थे। सफर के खर्च के लिए कुछ भी नहीं था। सफर में किसी तरह की तकलीफ़ नहीं हुई। जो चाहा खाया जो चाहते पहनते। सैकड़ों रुपये की खैरात बाँट दी। किसी बात की कमी न थी। जब जिस चीज की जरूरत हुई, मौजूद हो गई। दूसरे तीसरे रुपयों की थैली सिरहाने से निकलती थी। इस तरह के वाक़यात के साथ उस शख्स के दिल व दिमाग की कैफ़ियत पर गौर कीजिये जिस पर यह हालतें गुज़रती होंगी। वाजई छोटे नवाब को बहुत खर्च करके यह थियेटर दिखाया गया था जिसकी लज्जत उम्र भर भूलने की नहीं लेकिन उस सूरत में जब कि उसका मुकाबला ऐसे रुख से किया जाय तो बिलकुल उससे बस्ता हो—यानी मुसीबत फ़ाकाकशी गरीबी वगैरह। इस पहाड़ के उस तरफ क्या है ? नवाब साहब को जुगराफ़िये का इल्म मामूली पता था। सिवाय एक पहाड़ कोहकाफ़ (परियों के रहने की जगह) और दुनियाँ के किसी पहाड़ का नाम आपको मालूम ही न था। जैसे बच्चा पैदा होने के बाद से एक प्राणी को चाहे मर्द हो या औरत माँ समझता है और जब कुछ समझ आने लगती है तो हर मर्द को बाप और हर औरत को माँ कहता है। उसे खास-खास बातों का ज्ञान बहुत दिनों में होता है।

इस पहाड़ के उस तरफ मुमकिन है कि कोहकाफ़ के द्वार पर देवों का पहरा होगा। लाल देव और काले देव की शक्ल उन्होंने इंदर सभा में देखी थी। ऊँची चीजों में ताड़ का पेड़ मशहूर है और नवाब साहब ने अक्सर ताड़ के पेड़ भी देखे थे। बस यही दो शक्लें देव की सूरत के खयाल के लिए काफ़ी थीं। देव अक्सर आदम-जाद को खा जाते हैं। मगर नवाब साहब का अपने कुव्वते-बाजू और जादू-मन्त्रों पर जो शाह साहब ने सिखाये थे इतना भरोसा जरूर था कि अगर कहीं मुकाबला हो गया तो हमीं जबर रहेंगे। मगर इसकी हिम्मत किन हारे थी। रात को नवाब साहब बिस्तर पर से भी न उठ सकते

और सनोवरे, रंग रंग के पत्थर इस खूबसूरती से जगह-जगह फैले हुए हैं कि कहीं ऐसा मालूम होता है जैसे किसी ने एक-एक करके चुने हैं। इसी तरह के पत्थरों की तह पानी की सतह के नीचे दरिया के तले में भी नज़र आती है। नदी का पानी साफ़ शफ़्फ़ाफ़ देखके एक खास तरह की उमंग दिल में उठती है जिसको एक नामुमकिन ख्याल समझना चाहिये। जी चाहता है कुल पानी पीलें या भर में उठा ले जायें। यहीं कोई दो कदम के फ़ासले पर पहाड़ी की ऊँचाई शुरू होती है। पहाड़ की बनावट इस तरह की है कि सबसे नीचे परत में बड़े बड़े पत्थरों की सिलें तह पर तह चुनी हुई हैं इसके ऊपर वाला पर्त गोल पत्थर के लगभग एक ही अंदाज़ के एक से एक चुना हुआ फिर एक तह सिलों की। इस तरतीब से पहाड़ी के ऊपर तक की पर्तें चली गई हैं। इन परतों को देख कर नवाब साहब को यक़ीन हो गया कि यह सब जिनों की कारस्तानी है क्योंकि इस तरह बराबर-बराबर पर्तें कौन चुन सकता है। ऐसा मालूम होता है जैसे किसी पुराने पक्के किले के खंडहर पड़े हुए हैं। यह किला ज़रूर जिनों ने बनाया होगा या उनके पुराने मकानों के खंडहर हैं।

पहाड़ी का रास्ता घूमता हुआ नीचे से ऊपर तक चला गया है। इस रास्ते के दायें बायें बड़े-बड़े गहरे गड्ढे मिलते हैं। सब में हरे भरे दरख्त पौधा लबा-लब भरे हुए हैं। कहीं-कहीं गड्ढे में उतरने का रास्ता भी है और कहीं बिलकुल नहीं है। नवाब ने सोचा कि ऐसे ही किसी कुएँ में शाहज़ादा बेनज़ीर कैद किया गया होगा और इन्हीं जिनों में से एक जिन उस कुए के मुँह पर रोक दी गई होगी। पहाड़ी की चोटी पर पहुँच के उनको एक छोटा समतल ज़मीन का मिला। इसके बीच में एक चौकोर पत्थर पड़ा हुआ था। अब तो यक़ीन हो गया कि यह किसी जिन की चौकी है। इसी के पास एक पत्थर की सिल पड़ी थी। इसके पास एक पहाड़ी दरख्त था। उसकी जड़ पर नवाब साहब बैठ गए और चारों तरफ़ नज़र दौड़ा-दौड़ाकर देखने लगे। कोसों तक सिवाय पहाड़ों और जंगलों के कुछ दिखाई न देता था। सूरज डूब रहा था। दूसरी तरफ़ चाँद निकल आया था। दोनों एक दूसरे के मुक़ाबले में थे। यह मालूम होता था जैसे नीली गुम्बद के दोनों तरफ़ दो गोल बराबर के थाल लगा दिये

गये हैं। कुछ देर बाद सूरज डूब गया मगर उसके डूबने से पहले ही बृहस्पति का तारा अजीब हुस्न से चमक रहा था। और सितारे भी आसमान में चमकते मगर थोड़े व मगर चाँद की रोशनी उन पर गालिब थी। बृहस्पति की चमक उस समय चन्द्रमा को शर्मिन्दा किए देती थी।

सब कुछ था मगर नवाब का वहाँ ठहरना और ऐसे वक्त—हमें यकीन नहीं आता। नवाब वह आदमी हैं जो गरीबी की हालत में भी रात को अपने बिस्तर से नहीं उठ सकते। बचपन में जो अन्नाओं व दायाओं ने हू-हक्का की आदी बना दिया था दौलत के नशा वगैरह-वगैरह से वक्त-वक्त पर डराया था वह खौफ दिल में समाया हुआ था और अब भी है। फिर इस वक्त ऐसी जगह ठहरना कैसे हो सकता है। अगर यह कहा जाय कि शाह साहब की ताकत थी क्योंकि ऐसे-ऐसे जादू-मन्त्र के काट सिखा दिये थे कि नवाब के दिल से खौफ बिल्कुल निकल गया था तो उसको हम नहीं मानते। हाँ एक बात दिल में आती है कि जहाँ नवाब बैठे हुए थे वहीं व थोड़ी दूर पर आबिद यह गजल ख्याम कल्याण की धुन में गा रहा था और मैंदी मसरूफ मुँह से तबला बजा रहा था। आबिद का गला है अच्छा गया था और कुछ गाना जानता भी था। आवाज का यह हाल था जैसे अरगन बज रहा है। पिसी हुई तानें निकलती थीं। उधर मैंदी मसरूफ मुँह से तबला बजाने में एक ही था। कोई ताल ऐसी न थी जो उसके मुँह से न निकलती हो। ऐसे-ऐसे टुकड़े बजाता था कि अच्छे अच्छे तबलिये और पखावजी हैरान हो जाते थे।

बेचैन न हो दर्द से आराम नहीं है,
मरने का मजा ए दिले नाकाम नहीं है।
सच कहता हूँ मरने को मेरे सहल समझिये,
मैं आपका आशिक हूँ मेरा काम नहीं है।
मैंने जो कहा उनको हँसी से सितम आरा,
कहते हैं कि हाँ सच है मेरा नाम नहीं है।
इन हाथों से मर जहर अगर हमको पिलाती,
हम समझें कि यह बादए गुलफाम नहीं है।

देखो कभी आईना कभी जुल्फ़ सँवारो
आलम में तुम्हारी सहर ओ-शाम यही है ।
देखा है मुझे अपनी कुमामत में जो मसरूफ़
उस बुत को यह धोखा है कि इस्लाम यही है ।
अग़यार मेरे मुझसे कहा कौन है मिर्ज़ा,
क्या हो जो बता दूँ कि मेरा नाम यही है ।
उसकी चमकती हुई चितवन पे न जा ए नादान ।
पसे पर्दा भी ज़रा देख कि होता क्या है ॥

सैंतीस

लखनऊ में पहुँचने के बाद फिर छोटे नवाब अपने दीवानख़ाने में उतरे । आज ही रात को सब्ज़-क़बा ने अपना जलवा दिखाया । तिलस्मी दरवाज़ा उसी तरह बन्द रहा । चंद मिनट से ज़्यादा दीदार न आज तक नसीब हुआ था न आज हुआ ।

'गुल सैर न दीदेम बहार आख़िर शुद ।'

हमने फूलों की सैर तबीयत भरके नहीं देखी थी कि बहार ख़त्म हो गई ।

परिस्तान की शराब में बेहोशी की दवा भी घुल मिली हुई थी । वहाँ छोटे नवाब ने दो एक घूँट लिये और अंटा-ग़फ़ील हो गये । शाह साहब अब तक यही कहे जाते थे कि आप ग्यारह बजकर सत्रह मिनट पर परिस्तान में दाख़िल हो जाते हैं । दो डेढ़ बरस तक गोकि छोटे नवाब सफ़र में रहे मगर रोज़ परि

ख्वाब में सोते थे। बाज़िरी बीमार से बेशक महरूम रहे। मगर ख़्याल से पास रहने का मज़ा रोज़ मिलता रहा मगर वे उसका इल्म छोटे नवाब को एक पल के लिये भी नहीं हुआ। मगर शाह साहब की जादू भरी बातों में वह असर था कि कभी नवाब साहब को इसके न होने का शुबह तक न हुआ।

मगर यह ज़माना छोटे नवाब के बढ़ने और जवानी का था। इसलिये कि बदकिस्मत रईसज़ादों का बढ़ना और जवानी दौलत की कमी हो जाने पर मौकूफ है। छोटे नवाब का यह ज़माना करीब आ पहुँचा था। बल्कि असल में तो दौलत में कमी हो चुकी थी। मगर अभी तक छोटे नवाब को इसकी ख़बर न थी। जैसे किसी बेशकीमती जवाहरात के देखने के बाद कुछ देर तक उसकी चमक दिमाग में रह जाती है, वही हाल आदमी की हर दिमागी हालत का है। छोटे नवाब को अभी पूरी तौर से अपनी तबाही का यकीन न था। इसलिए कि अभी तक वही ठाठो-बाट था जो कि सामान-असबाब का बिकना शुरू हो गया था। मगर दस्तरख्वान की रौनक यानी मुफ़्त-ख़ोरे अभी तक मौजूद थे। गाड़ी घोड़े बिक चुके थे मगर किराये की गाड़ी पर अब तक सैर हुआ करती थी। और यह हिम्मत इस बिना पर थी कि बीस हज़ार का एक नोट अभी तक नम्बरों के गुम हो जाने की वजह से नहीं भुनाया गया था।

ग़रज़ यह कि आज मिलने भेंटने के बाद नवाब तिलस्मी कमरे में पड़े जागा किये। शमा कँवल रोशन थे। कमरा जगर-मगर कर रहा था। कोठे पर चाँदनी छिटकी हुई थी। नवाब इस तख़लिए में अपनी पिछली और अगली हालत पर ग़ौर कर रहे थे। तिलस्मी दरवाज़ा सामने था। तिलस्मी सन्दूकचा खोला। उसमें शराब का शीशा ख़ाली था। फौरन जम्हाइयाँ आने लगीं। शरीर के अंग सिकुड़ने लगे क्योंकि परिस्तान की शराब न बनाने वाली चीज़ों का ख़ास हिस्सा है। आज शहर वाले सम्म-नगर के कारकुनों से क्या ग़लती हुई कि शराब ग़ायब कर दी गई। कई बार तलाश किया। कोई जवाब न मिला क्योंकि परिस्तान का मैख़ाना ख़ाली हो चुका था। अब उसमें एक बूँद बाकी नहीं थी। और जम्हाइयाँ आईं, बदन टूटने लगा। अब यह हाल है कि न बैठे चैन पड़ता न खड़े। अमलस्त की हालत है, मगर क्या किया जाय मुरशद के हुक्म के पाबंद

है। सब्ज़-क़बा का शौक़ ऐसा न था कि कोठे पर से उतर आते। इतने में तिलस्मी दरवाज़े पर निगाह जा पड़ी। देखा कि बीच के हिस्से का शीशा टूटा हुआ है। ज़रा आगे नवाब के कान में परिस्तानी कमरे के पीछे से किस क़िस्म की आवाज़ें आईं कि कान उसी तरफ़ लग गये। नवाब की वह हालत थी जिसे सोने और जागने के बीच की समझना चाहिये। मगर इन आवाज़ों में एक आवाज़ ऐसी भी थी जिसे कान पहचानते थे। आज हारमोनियम और पियानो की सुरीली आवाज़ों के बदले एक मर्द के चीख़ने और बेहूदा गाली गलौज का शोरग़ुल था। और उसके साथ ही एक औरत की आवाज़ की झंकार दिल में उतरी जाती थी। इस आवाज़ को नवाब ने आज तक न सुना था। नवाब दिल ही दिल में कह रहे हैं। घनश्याम जोशी जिसके डर के मारे शाह साहब मुझको दस बरस तक मुल्कों मुल्कों लिये फिरे, मुमकिन है कि उसी की आवाज़ हो। मगर बोलने का ढंग और आवाज़ का अन्दाज़ उस आवाज़ से जिसे मैं अच्छी तरह पहचानता हूँ किसी क़दर मिलती है। सुना करते हैं कि जादूगर लोग अपनी सूरत दूसरों की सी बना सकते हैं। क्या अजब है कि आवाज़ भी बना लेते हों। फिर अगर यह आवाज़ घनश्याम जोशी की है तो ज़रूर है कि दूसरी आवाज़ सब्ज़-क़बा की हो। ज़रूर यह सब्ज़-क़बा की आवाज़ है। हाय! मेरी सच्ची आशिक़ परी पर ज़ुल्म हो रहा है। घनश्याम जोशी कैसी गंदी गालियाँ दे रहा है। शाहजी ने जितने ही जादू के मंत्र सिखलाये थे। उन्हें पढ़ने लगे। मगर कुछ भी असर दिखाई न दिया।

इससे तो घनश्याम जोशी और भी नाराज़ हो गया। हाय, अब तो ऐसा मालूम होता है कि सब्ज़-क़बा पर मार पड़ेगी। लो वह तमाँचा पड़ा। हाय सब्ज़-क़बा किस दर्द से रो रही है। अफ़सोस! तिलस्म का पर्दा बीच में पड़ा है वरना घनश्याम जोशी से जाकर अभी समझ लेता। इसके बाद रोने की आवाज़ देर तक आया की। फिर मालूम हुआ कि जैसे कोई हिचकियाँ ले रहा है। फिर ख़र्राटों की आवाज़ आई। ख़ैर, घनश्याम जोशी सो रहा। अब सब्ज़-क़बा का पीछा छुटा। नवाब ने दुबारा आराम किया। सब्ज़-क़बा सामने आ खड़ी हुई। सब्ज़-जोड़ा पहना किया बाल

परेशान चेहरे पर उदासी छाई हुई। इस कदर आसार उस लड़ाई के जिसे नवाब ने अपने कानों से सुना अब तक बाकी थे। टूटे हुए शीशे में से एक तरफ का हाथ साफ नज़र आता था।

गोरा हाथ उसमें फँसी फँसी चूड़ियाँ मगर हाथ के पीछे चूड़ी के टूटने से जो खराश का सामान था वह भी दिखलाई पड़ता था।

अब तो यकीन हो गया कि वह चोट के तमाचे इसी नाज़ुक जिस्म पर पड़े हैं, जो इस वक्त रंज की तस्वीर बना खड़ा है।

अड़तीस

पहाड़ सी रात आँखों में कट गई। रात भर नींद आना तो क्या ज़िक्र पलक तक झपकाने की कसम है। दिल बेताब बार बार अलारम की कुंजी मरोड़ने पर मजबूर करता था। सब्ज़-कबा सामने आ खड़ी हुई थी। ग्यारह बजे रात से सुबह तक दस बार सामना हुआ।

आज नवाब का पलंग उठाने न कोई देव आया न जिन्न। इसलिये कि सब्ज़-कबा खुद ही परिस्तान मे न थी। घनश्याम जोगी के खुर्राटों की भयानक आवाज़ कानों मे आ रही थी। ऐसा मालूम होता था जैसे उस तरफ घनश्याम जोगी सो रहा और बेचारी सब्ज़-कबा जाग रही है। जब अलारम दिया जाता है तिलस्मी दरवाज़े मे आ खड़ी होती है। नवाब ने कई बार इरादा किया कि आज तिलस्मी दरवाज़े के तिलस्म को तोड़ डालें मगर हिम्मत ना पड़ी। घनश्याम जोगी का डर दिल मे समाया हुआ था। तीन बजे रात को ऐसा मालूम हुआ कि जैसे घनश्याम जोगी ग़फ़लत की नींद से जागा। पानी

सोया। सब्ज़-क़बा ने पानी पिलाया। इसके बाद जो बातें नवाब साहब के रक़ीब घनश्याम जोशी और सब्ज़-क़बा में हुईं, वह सब नवाब साहब ने अपने कानों से सुनीं क्योंकि नवाब साहब ने अपनी कुर्सी तिलस्मी दरवाज़े के पास ही रख दी थी। शीशे के टूट जाने से उधर की आवाज़ चाहे कैसी ही आहिस्ता से क्यों न हो साफ़ इधर सुनाई देती थी। अब नवाब साहब ने आराम नहीं किया न सब्ज़-क़बा आई। अपने और सब्ज़-क़बा की मुहब्बत के मामले का फ़ैसला नवाब ने अपने दिल में कर लिया था। मुद्दतों पुराना भेद पर्दा टूटने से नवाब साहब पर खुल गया था। नवाब को कुछ ऐसा सदमा भी नहीं हुआ क्योंकि वह अपने आपको चालबाज़ों का शिकार पहले ही से समझ चुके थे और यह कोई नई बात न थी। ढाई लाख के नोटों के जाने के बाद जब आँखें खुलीं तो मालूम हुआ कि दुनियाँ एक चालबाज़ी का तिलस्म है। कोई शख़्स किसी से बेग़रज़ नहीं मिलता। किसी की कोई बात चाल से ख़ाली नहीं। अब इनके दिल में भी यह समा गया था कि फिर यही किया जाय। इन्हीं लोगों से तो काम है। मसलन वक़्त और बख़्त के अनुसार काम करो। बहुत दूर-अन्देशी से काम लेना ऐसी हालत में फ़िज़ूल है। जिस तरह बन पड़े अपना मतलब निकालो।

मौरूसी जायदाद तो ख़तम हो गई। माँ नाराज़ होकर कलकत्ता चली गई। मामूँ की बेटी जिसके साथ ब्याह ठहरा था उसका निकाह मुर्शिदाबाद के एक मामूली रईसज़ादे के साथ हो गया। ग़रज़ कि कुल ख़ुश-नसीबी की बातें जिन पर इनकी लोक और परलोक की तरक़्क़ी होनी थी इनके ख़िलाफ़ तय हो गईं। अब अगर बासी रोटी मिल सकती है तो इन्हीं पाजियों की भीख से मिल सकती है। वह फ़ायदे का उम्मीदवार ख़्वाहाँ था किसी और तरीक़े से जिसमें चाहे ज़िल्लत भले ही हो पर जान तो चैन से रहेगी। इसके साथ ही इनको यह भी ख़्याल आता कि अच्छा अब उन लोगों को लेना चाहिए जिनसे हमने बेवक़ूफ़ी और ग़फ़लत के ज़माने में पहलू-तिही का थी। इस तरफ़ कुछ खोने की सूरत नज़र आती थी। मगर अफ़सोस कितनी ज़िल्लत होगी। यह बात—'क्यों हम न कहते थे'—किससे सुनी जायगी। मगर जो कुछ हुआ ठीक है और हम उसके सुनने के

सवाबकार हूँ। फिर इसमें बुराई क्या है ? कहने दो। यह तो देखो कि कुछ अपना मतलब भी किसी से निकल सकता है। अच्छा वह लोग कौन हैं जिनसे कुछ उम्मीद हो सकती है। सबसे पहले मिर्ज़ा काज़म अली का ख़याल आया। अफ़सोस मैंने उनके साथ बुराई की। उसके मोहब्बती हाथों से हाथ फेरकर, ठीक उस वक्त जब कि मुझे सबसे ज़्यादा उसी पर भरोसा चाहिये था मुलाज़िमी से उसे निकाल दिया।

काज़म अली के साथ ही ख़ुरशीद का ख़याल आया। आज मालूम हुआ कि बाज़ारू रंडी होने पर भी वह बला के क़ाबिल औरत थी। अफ़सोस अगर किसी ने दुनिया में मुझसे मुहब्बत की है तो वह ख़ुरशीद थी। मब बात कहने के जुर्म पर उसे मैंने निकाल दिया और ऐसा नाराज़ हुआ कि उसने कई बार देखने की दरख़ास्त की और मैंने बुरी तरह से साफ़ जवाब दिया। अब उसके दिल में मेरी तरफ़ से क्या जगह बाकी रही होगी। अफ़सोस ! मिर्ज़ा काज़म अली पर कितनी बड़ी तुहमत लगाई गई। इस वक्त भी और अब भी ईमान से कह सकता हूँ कि मिर्ज़ा काज़म अली का दामन हर ऐब से पाक था। ख़ुरशीद को सिर्फ़ उनकी नेक-ख़्वाही की वजह से उनकी तरफ़ तवज्जह थी। वह जिनको मैं अपना सच्चा दोस्त और जाँ-निसार समझता था उनकी निगाहें ख़ुरशीद पर भी पड़ती थीं वह मैं आँखों से देखता था। मगर मेरी आँखों पर कैसे मख़मल के पर्दे पड़ गए कि ऐसे लोगों के ऐब भी मुझे हुनर मालूम होते थे। वह ऐब जिनको ख़ुरशीद हमेशा मुरशद के नाम से याद करती थी और मैं बड़ा मानता था वाकई इसी लायक़ था। मेरी तबाही का बानी-मुबानी वही मरदूद था। शाह साहब अगरचे मक्र और फ़रेब में बेमिसाल हैं, मगर मुरशद के सामने कुछ नहीं उसी का बनाया हुआ है। और उनके हिस्से में भी बीस-पच्चीस हज़ार रुपया आ गया होगा। तीस-तीस हज़ार मुंशी और दारोगा के पल्ले पड़े। वकील साहब एक मकान बना ले गये। मुरशद का बेटा जैसा मेरा दोस्त बना हुआ था। आजकल वह ताल्लुक़ेदारी के फ़न में अपने बाप का बाप है। फिर अगर उसको ख़ुरशीद बलोंदा कहती थी और मिर्ज़ा काज़म अली ताईद करते थे तो क्या बेजा था। अच्छा मगर अब यह बातें दिल में रखने

की है। हाय इन जालिमों ने कैसी जबान-बन्दी की है कि मुँह से भी कुछ नहीं कह सकता। सच तो सच यह मैंने क्या ग़ज़ब किया कि बुज़ुर्गों के वक़्त का तमाम असासा जिसमें कम से कम लाख डेढ़ लाख का जवाहरात था अम्मीजान के जाने के बाद ख़लीफ़ा के हवाले कर दिया। भला अब वह मुझे देंगे। तोबा!

महाजनों के तमस्सुक फ़िज़ूल निकल आए। मेरे फ़रिश्तों को भी इन कर्ज़ों की ख़बर नहीं। यह नशे की हालत में जो चिट्ठियाँ शराब के लिये लिखवाई जाती थीं वह असल में तमस्सुक थे। स्टाम्प की मुहर छुपा के कैसे दस्तख़त लिये हैं। जालिमों ने अपना पूरा काम कर लिया और उसके साथ ही मेरा काम तमाम कर दिया। ख़ैर, ख़ुदा समझे।

अम्मीजान पर कैसी सख़्त तोहमत लगाई और मुझे यक़ीन आ गया। आख़िर वह भेद भी खुल गया न! इमामन की चालाकियाँ थीं। इमामन की चालाकियाँ क्या यह भी मुख़्तार का फ़िक़रा था। आख़िर कुलसुम बेगम चिट्ठी नवीस का निकाह हकीम साहब से करवा दिया। और क्या फ़िक़रा लिखवाया है कि मेरे कोई औलाद नहीं। भला अम्मीजान मुझे क्यों ख़ारिज करतीं।

अफ़सोस मैं कहीं का नहीं रहा। सुनता हूँ अम्मीजान सख़्त बीमार हैं। अगर ख़ुदा न करे, कोई बात गड़बड़ हुई तो उनका आख़िरी दीदार है और उनके साथ जो कुछ बचा बचाया है उससे भी महरूम रहा।

रात भर नवाब साहब इसी उधेड़ बुन में रहे। इतने में सुबह की तोप चली। मस्जिदों में अल्लाहो-अकबर के नारे की सदा गूँजने लगी। ठंडी हवा के झोंके आने लगे। नवाब रात भर के जागे हुये थे। नींद ने असर जमाया। सो रहे। सुबह को कोई आठ नौ बजे आँख खुली।

तिलस्मी कमरा अब उनको एक मामूली कमरा मालूम होता था। उस में जो चीज़ें मौजूद थीं जैसे कुर्सी पलंग और शीशे अलारम जिन पर इस वक़्त सूरज की तेज़ किरणें पड़ रही थीं अब उनकी निगाह में मामूली चीज़ें मालूम होती थीं। तिलस्मी दरवाज़ा क्या एक शीशे का अलमारीनुमा दरवाज़ा था। पल्ले के पट में जैसे सब्ज़ शीशे लगे हुए थे। अब उन्होंने बेतकल्लुफ़ उस दरवाज़े

को खोला। उस दरवाज़े के पीछे एक लम्बा कपड़े का पर्दा पड़ा था। उसको उठाके देखा। एक काठ का दिलहेदार दरवाज़ा नज़र आया। नवाब ने हिम्मत करके उसे भी खोला। सारे तिलस्मों का भेद एक आन में खुल गया। देखा कि एक कमरा है मामूली तौर से सजा हुआ। उसमें एक पलंग लगा है। वही शख्स जिसको वह घनश्याम जोगी समझे हुए थे (या असली बात से जानकर अनजान बने हुए थे) पड़ा सो रहा है। उस के पांयते सब्ज़-अब्बा वही परी का लिबास पहने गाफिल सो रही है। शराब की बोतल औंधी पड़ी है। गिलास टूटा हुआ अलग अलग रक्खा है। सामने चौकी पर शीशा पानी का घड़ोंची पर दो बड़े कोरे-कोरे रक्खे हैं। उन पर कुल्हड़ ढंके हुए हैं।

इस वक्त नवाब साहब को मालूम हुआ कि परिस्तान के पर्दे के पीछे वैसी ही दुनियां आबाद है जैसी इस तरफ है जहाँ हम आप रहते हैं।

छन्तालीस

देखो इस तरह भी मिल लेते हैं मिलने वाले
शमा का बस न चला बज़्म में परवाने से।

नवाब साहब रोज़ की तरह तिलस्मी कमरे का ताला बन्द करके नीचे उतरे। मदार बख्श ने हुक्का लगाया। नवाब साहब हुक्का पीते जाते हैं और पिछली रात से इस वक्त तक जो कुछ देखा और सुना था उसमें से हर बात के एक-एक पहलू पर नज़र है।

आइन्दा ज़िन्दगी के मनसूबे बाँध रहे हैं। दौलत की कमी में तो कोई शक ही नहीं। मगर उसका कुछ रंज नहीं क्योंकि दौलत जमा करने में आपको कुछ

बहुत पिये हुए थे। और इत्तफ़ाक से उस ज़माने में इन्सपेक्टर साहब से मुलाकात थी। उनका आदमी बुलाने आया। उन्होंने कुछ उसको सख्त सुस्त कहा। भला पुलिस का आदमी ऐसी बात सुनता है। वह उस वक्त तो चुपका चला गया। थानेदार साहब से सब हाल कहा। उन्होंने हुक्म दिया जिस वक्त कमरे से नीचे उतरे, फौरन मरम्मत कर दो। फिर देख लिया जायगा। चुनांचा ऐसा ही हुआ। मैं भी साथ था। मगर मुझसे क्या वास्ता। थानेदार साहब का हुक्म कतई था। भला क्योंकर टल सकता? पुलिसवालों ने खूब ही मार लगाई और फिर पकड़कर थाने पर ले गये। मैं भी साथ-साथ चला गया और दारोगा साहब से कह सुनकर मामला रफ़ा दिया।

नवाब (दिल में) हाँ मैं सुन चुका हूँ पाँच सौ रुपये आप भी खा गये। खलीफ़ा जी से) 'वाक़ई आपने बड़ा काम किया। मैं सुन चुका हूँ।

खलीफ़ा : 'उस दिन से यह हो गया है कि जहाँ मुलाकात हो जाती है पीछा छुड़ाना मुश्किल पड़ जाता है।

नवाब 'जी हाँ फिर दोस्ती में तो ऐसा होता ही है। तो के बोतलें उड़ीं?'

खलीफ़ा 'पाँच बोतलें एकदम नंबर वन की मेरे सामने खुलीं। और पहले जितनी खुल गई हों उसकी मुझे खबर नहीं।

नवाब 'भई आज तो मेरा भी जी चाहता है।

खलीफ़ा : नवाब ऐसा न करना मुसीबत है। तुमको शाह साहब ने मना किया है।

नवाब : 'जो वह जिसके लिये एहतियात की गई थी उसके बारे में मैं दरयाफ़्त कर चुका हूँ। अब कोई ज़रूरत परहेज़ की नहीं।

खलीफ़ा 'यह आप जानिये, मैं नहीं कह सकता।

बात यह थी कि खलीफ़ा ने वाक़ई बहुत पी थी। इस वक्त उनका खुमार था। जो उनका भी चाहता था कि किसी तरह खुमार दूर किया जाय। इधर नवाब ने अपना पूरा इरादा ज़ाहिर किया। मौलवी को ठगने का बहाना।

नवाब 'देखो तहवील में कुछ है?

खलीफ़ा : 'मुंशी से बुलाकर पूछिये।

अक्लमन्दी टपकती थी। महीन सरबती का अंगरखा विलायती चिकन का कुर्ता औरेब का चुस्त घुटन्ना कंधों पर जाली पर की चिकन का रूमाल बसन्ती रँगा हुआ हाथ में एक छड़ी उस पर सब्ज़ पत्थर की मूठ लगी हुई थी। कान में पन्ने का लटकन शायद न था।

नवाब (मुंशी जी से) 'अच्छा तो यह काम आप जल्द कर दीजिये। मुझे बड़ी ज़रूरत है।

मुंशी जी (जैसे बड़े ताम्मुल में हों) : जी आपकी ज़रूरतें यों ही रहा करती हैं।

नवाब (लज्जा के स्वर में) : 'अच्छा तो आपको क्या ? यह काम कर दीजिये फिर तकलीफ़ न दूँगा।

मुंशी जी और वह जो पाँच रुपये परसों गये थे।

नवाब वह खर्च हो गये।

मुंशी जी 'तो वह भी इसी में शामिल कर लिये जाएँगे। और सब सूद कट जायेंगे।'

नवाब : 'नहीं पूरे पाँच दीजियेगा। सूद न काटियेगा।

मुंशी जी 'आप तो इस तरह कहते हैं जैसे मैं अपने पास से रुपये निकाल के दूँगा। भला महाजन बगैर सूद काटे रुपया देगा ?

नवाब 'नहीं जिस तरह बने पाँच रुपये दीजियेगा। सूद न काटियेगा।

मुंशी जी 'अच्छा जाइये। जहाँ तक बन पड़ा कोशिश करूँगा।

नवाब 'तो कब तक ?'

मुंशी जी 'कोई दो बजे तक।

नवाब 'आपके भरोसे रहूँ ?

मुंशी जी : 'हाँ हाँ कहता तो हूँ।

इसके बाद नवाब साहब मुंशी जी से रुखसत हुए। मुंशी जी फौरन अंदर चले गये। फिर बैठक से दो तीन बातें हुईं। इसके बाद बड़े तपाक से हाथ मिला के चले गये।

घर पर पहुँच के देखा कि खलीफ़ा जी ने देसी शराब की एक बोतल अपने

पास से मँगाती है। नवाब साहब का इन्तजार किये बिना वो दौर पी चुके हैं। नवाब साहब के पहुँचने के बाद उनकी भी खातिर की गई। नवाब ने भाज देसी शराब पी। तजुर्बे से मालूम हुआ कि नशा हर शराब का यक्सा होता है। बल्कि देसी मे कुचला मिला होता है इसलिये नशा विलायती से ज्यादा होता है। मगर विलायती का नशा साफ होता है और देर तक रहता है। देसी मे यह बात नही। बदमजा हद से ज्यादा होती है व बहुत मारती है। हर सूरत से नवाब ने अपनी हालत को देखते देसी शराब को पसंद किया। एक बजे का वायदा था। तीन बजते-बजते तीन रुपये मुंशी जी ने नवाब बख्श के हाथों भेज दिये। फौरन एक रुपये की दो बोतलें आईं। इस वक्त तक और दोस्त भी जमा हो गये थे। इस वक्त से शाम तक और शाम से नौ बजे रात तक खूब जल्सा रहा। इसके बाद जल्सा खतम हुआ। वालीफ़ा की रोज की तरह भर गये मामी परिस्तान के पर्दे के पीछे पहुँचे। नवाब साहब तिलस्मी कमरे मे दाखिल हुए। चलते वक्त चुपके से एक बोतल नवाब बख्श से और मँगाई। उसे अपने साथ लेते गये।

नवाब साहब वक्त का इन्तजार करते रहे। अलारम नही दिया ताकि पर्दे के पीछे के लोग गाफिल होके सो जायें। यहाँ तक कि बलबयान जोमी के खुर्राटों की आवाज आने लगी। इसके बाद नवाब ने अलारम दिया। सब्ज-परी तिलस्मी दरवाजे मे आके खड़ी हुई। नवाब ने फौरन उठके तिलस्मी दरवाजे को खोल दिया और सब्ज-परी का हाथ पकड़कर कमरे के अन्दर खींच लिया और खूब पर्दा उठाके दूसरी तरफ के दरवाजे को बंद करके ताला लगा दिया।

सब्ज-परी 'हाय आज यह क्या रोज के खिलाफ ?

नवाब 'बरसों से इन्तजार है, आज तो जरा हसरतें दिल की निकाल लें।

सब्ज-परी 'देखिये अच्छा न होगा।

नवाब 'अच्छा न होगा तो बुरा भी न होगा।

सब्ज-परी : 'देख पछतायेगा मेरा जो बुरा दिल होगा,
वस्ल परियों का न तुमको कभी हासिल होगा।

नवाब : 'बस दिल्लगी जाने दो। साफ़साफ़ बताओ कि तुम हो कौन और

नवाब : 'जब और लोगों की दोस्ती का ख्याल न हो तो हमें क्यों ?'

अम्मा-जान : 'अच्छा तो क्या कुछ आज ही पर मौकूफ है। मैं तो रोज आती हूँ।'

नवाब : 'जी बस तुम कहाँ और मैं कहाँ! खेल खुल गया। कुछ ही दिन में यह सब कारखाना मिटा चाहता है। न यह तिलस्मी कमरा होगा न यह साज-सामान। यह सब दौलत के ढकोसले थे। जब दौलत नहीं तो यह सामान कहाँ? हर हालत में आज रात को तुम्हें यहीं रहना होगा।'

अम्मा-जान : 'मुझे उज्र ही क्या मगर यह सब समझ लीजिये कि अगर यह जाग उठे तो आपका तो कुछ नहीं बना सकते मुझे मार डालेंगे।'

नवाब : 'मैं अब तुम्हें यहाँ से जाने न दूँगा। खुदा की मेहरबानी से तुम्हारे खाने भर को अब भी बहुत है।'

अम्मा-जान : 'देखो नवाब दगा न देना। यह न हो कि मैं उधर से भी जाऊँ और इधर से भी।'

नवाब : 'नहीं ऐसा न होगा। खातिर जमा रक्खो।'

अम्मा-जान : 'मगर मैं तो यह समझती हूँ कि खुल्लम खुल्ला तुम उनसे क्यों बिगाड़ो। अभी चोरी-छुपे बहुत रोज तक निभ सकेगी।'

नवाब : 'अच्छा तुम्हारी मर्जी मगर यह डर है कि ऐसा न हो यह तुम्हें यहाँ से उठा ले जाएँ।'

अम्मा-जान : 'इसका यकीन रक्खो। पहले तो यहाँ से उठाएँगे नहीं और अगर ऐसा हो भी तो मैं खुल्लम-खुल्ला निकल आऊँगी।'

नवाब : 'सच कहती हो? कसम खाओ।'

अम्मा-जान : 'खुदा रसूल की कसम, हजरत अब्बास की कसम अपनी जान की कसम अगर तुम मुझे सहारा दो तो मैं तुम्हारा साथ न छोड़ूँ। उस मुए से मुझे खुद नफरत है। एक तो मुए के मुँह से बू ऐसी आती है जिससे मेरा दिमाग परेशान हो जाता है।'

नवाब : 'पलीद तो है ही। अच्छा तुम मेरे पास बैठो। मैं तुम्हें जिन्दगी भर रोटी दूँगा।'

सम्मा-कला : 'मगर एक बात है कि दरगाह में चल कर क़सम खाओ कि ज़िन्दगी भर न छोड़ोगे और न दूसरी औरत करोगे।

नवाब : 'हाँ मैं क़सम खाऊँगा मगर तुम को भी क़सम खानी होगी।'

सम्मा-कला : 'हाँ, मैं पहले क़सम खाऊँगी। वैसे मुझे हर तरह तुम्हारा साथ मंज़ूर है। इस मुए खाविंद का मकान ही क्या? अम्माँ से मुझसे बनती नहीं दर दर की ठोकरें खाना मुझे मंज़ूर नहीं।

नवाब : बहुत बेहतर है। मगर एक दौर तो हमारे साथ पियो।

सम्मा-कला : 'ए है, नवाब थोड़ी ही देना।

नवाब : मैं सुन चुका हूँ तुम खूब पीती हो।

सम्मा-कला : 'पीती तो मैं ज़रूर हूँ पर बहुत नहीं पीती हूँ। आज बहुत सी पी चुकी हूँ।

नवाब ने उठके एक दौर सम्मा-कला को दिया एक आप पी लिया।

हमसे पूछे कोई माशूक़ से सरमस्ती के मज़े,
नशे के चढ़ते ही लेने बे-हिजाबी के मज़े।

चालीस

एक शायर ऐय्याश का क़ौल है कि औरतें तीन तरह की होती हैं। पहली हूरें। दूसरी—परियाँ। तीसरी—चुड़ैलें। हूरें वह जिनके बारे में किसी शायर का यह शेर मशहूर है।

दु चीज़ तस्कीने-दिल मसल्ल को हम बशरम हलाल
सरोशे शायदे हम-साया व हुक्के रह गुज़रे।

(दो चीज़ें रूह को तसल्ली देने के लिए अच्छी हैं और धरम से भी हलाल हैं एक पड़ोसी के यहाँ का खाना और दूसरी राह चलता हुक्का।)

परियाँ वह जो तारों की छाया में आती हैं और तारों की छाया में चली जाती हैं। चुड़ैलें यानी माँ-बाप की बेटियों को ब्याह कर आती हैं। यह वह नेक-बख्तें हैं जो ज़िन्दगी भर चौखट नहीं छोड़तीं और मरने के बाद भी चालीस दिन छत पर बैठा करती हैं। एक ईरानी शायर कहते हैं कि यहाँ औरत के तीन-तीन बच्चे हुए वह बुज़ुर्गों में दाखिल हो जाती हैं। इसका अदब करना चाहिए। बेचारे हकीम साहब की ब्याहता बीबी उस श्रेणी में दाखिल थीं, जिसका ज़िक्र ऊपर किया गया है। जब से हकीम साहब ने दूसरा ब्याह किया था, अपने बीमारों से दुखी रहती थीं। हर वक्त मुँह फूला हुआ नाक चढ़ी हुई, जो काम करती हैं झटक-पटक के। चूड़ियों की झंकार बार बार सुनाई देती थी। बार बार आप अपने हज़रत बीबी की ब्याह फिरे, ठिम ठुट्ठे रो देना हर वक्त बड़-बड़ाना गरज़ कि नाक में दम था।

दुश्मनी जाड़े के दिन थ। खुदा के फ़ज़ल से लखनऊ की आब-हवा एक सी थी। बड़े-बड़े नामी गरामी हकीम ऐसी फ़सल में खाली रहते थे। (खुदा करे हमेशा खाली रहें!) हकीम साहब कुछ ऐसे नामवर हकीमों में भी न थे। सिर्फ़ मुहल्ले के लोग ज़रूरत पड़ने पर या एहतियात के लिये नुस्खा लिखवा लिया करते थे। हकीम साहब के पास मरीज़ इस वजह से भी कम आते थे कि आपने कुछ दिन से मियाँ नबीबख्श के भतीजे हसनअली को दरगाह के पास पंसारी की दुकान करा दी थी। हर एक मरीज़ से यही कहते थे कि वहीं नुस्खा बँधवाना। एक तो खुद ही भारी दामों का नुस्खा लिखते थे, उस पर मियाँ हसनअली पैसे के दो पैसे लेते थे क्योंकि हकीम साहब से आधा साझा था। उसकी खबर फ़ौरन फैलती। एक और सबब हकीम साहब के व्यापार में मंदी का यह भी था कि इस मुहल्ले में एक डॉक्टर अस्पताल खुल गया था। उसमें मुफ्त दवा मिलती थी। इन वजूहात से हकीम साहब बिलकुल बेकार रहते थे

हकीम साहब को कुछ इसकी परवाह न थी क्योंकि आपने अपने मुहल्ले के गरीबों को रुपया क़र्ज़ दे देकर अक्सर मकान रहन कर लिये थे जो धीरे धीरे हकीम साहब के कब्ज़े में आ गये थे। सात आठ दुकानें बाज़ार में अलग थी थीं। इन सब में किरायेदार रहते थे। मतलब यह कि खाने पीने की तरफ़ से बिलकुल बेफ़िक्री थी। ख़ैर।

नौ बजे हकीम साहब घर में गये।

हकीम साहब : 'दस बजा चाहते हैं अभी तक खाना नहीं तैयार हुआ।

बीबी : 'नहीं तैयार हुआ क्या करूँ ? जब सौदा आएगा तभी तो पकेगा। अभी तो नबीबख्श ने तरकारियाँ लाकर दी हैं। गोश्त मिगोशा बना नहीं। लकड़ियाँ गीली सुलगती नहीं। फिर कोई चूल्हे में अपना सर जलाये।

हकीम साहब मैंने तो सबेरे सौदे के पैसे नबीबख्श को दिये थे वह अब तरकारियाँ लाए हैं! रास्ते में बैठकर हुक्का पीने लगे होंगे।

मियाँ नबीबख्श बहुत ही मज़ाक़ करने वाले वाले आदमी थे। जब हकीम साहब घर में जाते थे वह अन्दर से दरवाज़े के पास कान लगाये खड़े रहते थे। इसका मतलब यह था कि घर में जो बातें होती हों उन्हें सुनें। वक़्त वक़्त पर हाँ में हाँ मिलाते रहें। शायद कोई ऐसी बात कान में पड़ जाय जो काम की हो या अगर हकीम साहब या उनकी बीबी कोई बात आपकी शान के ख़िलाफ़ कहें तो फ़ौरन उसकी काट कर दी जाय। इसलिए इस मौक़े पर जब मियाँ देर में आने का इल्ज़ाम लगाया गया था उसकी काट करना ज़रूरी था।

नबीबख्श " " मैं झूठ बदनाम। नाम किसने डुबाई ज़्यादा दिखर ने। अकेला आदमी और दो जगह का सौदा सुल्फ़।

दो जगह का ज़िक्र करना कुछ इस वक़्त ज़रूरी न था। सिर्फ़ हकीम साहब की बीबी को भड़काना मंज़ूर था।

बीबी क्यों दो घरों का सौदा सुल्फ़ कैसा ? बेगम साहिबा के नौकर चाकर क्या हो गए ?

यह एक ऐसी चोट की बात थी कि हकीम साहब बेचारे तो गोया जीते जी ज़मीन में समा गये।

हकीम साहब (नाराज़ होकर) 'चलो तुम्हें इस क़िस्से से क्या मतलब? तुम अपना काम करो।

बीबी 'तो हमें कुछ मतलब ही नहीं?'

हकीम साहब 'तुम से हज़ार बार कह दिया कि इन मामलों से तुम्हें क्या? जो बात होनी थी वह हो गई।

बीबी : 'खूब हुआ चलो खुदा मुबारक करे। है कोई सौ दो सौ रुपये का वसीक़ा बेगम साहिबा का?

हकीम साहब 'न सही वसीक़ा। कोई रुपये के लालच से मैंने शादी की है।'

बीबी 'खुदा झूठ करे और क्यों निकाह किया था? हुस्न देख के किया होगा? कम उम्र की होंगी?

इस मौक़े पर मियाँ नबीबख्श ने ग़ज़ब का टुकड़ा लगाया कि बीबी की बाछें खिल गईं और हकीम साहब बेचारे कुसरए-चुप हो गए।

नबीबख्श 'मियाँ बेचारे फँस गये। उम्र में तो हकीम साहब हमारे उनके बाप के बराबर मालूम होते हैं। सूरत शक्ल भी कुछ ऐसी अच्छी नहीं है।

बीबी तो क्या तुम्हारे सामने होती हैं?

नबीबख्श 'अब तो सामने नहीं हुईं। जब नवाब अली बहादुर के पास नौकर हुई हैं उन दिनों में कम उम्र थीं। मैं भी नवाब साहब के मकान पर जाया करता था। वहीं मैंने उन्हें देखा था। नवाब के साथ चंडू का भी कुछ दिनों शौक़ किया था।

बीबी 'और यह तो वहाँ नौकर काहे में थीं?

नबीबख्श 'अब यह मैं आपसे क्या बताऊँ। रईस आदमी थे। उनके दिल बहलाने को नौकर थीं।

बीबी 'तो यह क्या तुम बहुत दिनों से जानते हो?

नबीबख्श ए हुज़ूर, मैं तो उनकी सात पीढ़ी से वाक़िफ़ हूँ। उनकी

अम्माँ क्या थीं। खुदा बचाये ऐसी औरतों से! और यह खासा साहब की वस है उनको क्या आप कम समझती हैं? एक ही छटी हुई हैं।

बीबी 'इनकी (हकीम साहब की) खालिया सास का हाल मुझसे पूछो। नवाब मालूदौला की सरकार में हमारे अब्बा जान दारोगा थे वहीं यह नौकर हुई थीं। वहाँ नवाब की लड़की का कड़ा चुराया निकाली गईं। अब तो सुना है बड़ी पाक साफ़ बनी हैं।

हकीम साहब 'यह न होंगी। बेचारी सफ़र कर आई हैं। पाँचों वक्त की नमाज पढ़ती हैं। यह कोई और होगी।

बीबी मैं सच कहती हूँ आपकी खालिया सास ने कड़ा चुराया था नवाब ने मुश्कें बाँधी थीं। यह तो कहो हमारे अब्बा जान ने बचा लिया।

हकीम साहब जी हाँ। आपके अब्बाजान ऐसे ही थे।

बीबी 'हमारे अब्बाजान को तो खुदा ने वह लियाकत दी थी कि जिधर से निकल जाते थे लोग उनको झुक झुक कर सलाम करते थे।

हकीम साहब 'क्यों नहीं। नवाब के यहाँ कबूतर बाजों में नौकर थे। अब तुमने दरोगा साहब कर दिया।

बीबी 'खैर, नवाब ने कबूतरबाज तो बना दिया।

हकीम साहब सारा जमाना जानता है।

बीबी 'सारा जमाना जानता है। रजलों में नौकर थे। फिर आपने क्यों झक मारा?

हकीम साहब हमने क्यों झक मारा?

बीबी अच्छा जिसने तुम्हारी शादी की उसने झक मारा।

हकीम साहब मामूँ ने फँसा दिया। हमारे अब्बाजान तो राजी न थे।'

बीबी 'चलो अब तो बातबंदी मानें हाँ माँ की बेटी राम छोड़ बाली जायदाद, मोटे तनखवाह वसीका लाख।

हकीम साहब निहायत मुश्किल में थे। कोई बात बन न पड़ती थी। बीबी की हरकतें इस क़दर माकूल थीं कि सिवाय बगलें झाँकने के और कुछ बन न पड़ता था।

पचास रुपया माहवार का लिए चुके थे। वह अदालत के ज़रिये से वसूल हो सकता था। रोटी कपड़े की फ़ौजदारी से डिग्री हो सकती थी। मेहर की नालिश दीवानी में दायर हो सकती थी। मतलब यह कि कुलसुम बेगम चिट्ठी-नवीस ने—बल्कि असल में मुरव्वत और शराफ़त ने—अच्छी तरह मुश्कें कस दी थीं। चिट्ठी-नवीस को भी हकीम साहब का कुछ ख़याल न था।

सिर्फ़ धोखा देकर शादी हुई थी। इमामन महरी और मियाँ अमजद ने अपना अपना हिस्सा पहले ही वसूल कर लिया था। अलबत्ते हकीम बेचारे के साथ पूरा जाल किया गया मगर कोई मौक़ा गिरफ़्त का न था। इक़रारनामा इस पेच से लिखवाया गया था कि उससे किसी क़िस्म का जुर्म किसी पर साबित नहीं हो सकता था। कुलसुम बेगम के साथ शादी हुई थी। कुलसुम चिट्ठी-नवीस का नाम था। छोटे नवाब की माँ का नाम कोई जानता भी न था क्योंकि वह ख़ुद और उनके बुज़ुर्ग मुर्शिदाबाद के रहने वाले थे। आख़िर वह जायदाद वाली थी। कई लाख के नोट थे। उसका सूद मुर्शिदाबाद से आया करता था। लखनऊ के वसीक़ा-आफ़िस से उनको कोई ताल्लुक़ न था। उनके वारिसों को भी मालूम न था कि उनके नाम से क्या क्या जाल फैलाये गये हैं। शादी होने के दस ही पाँच बरस के बाद यह जालसाज़ी खुल गई मगर हकीम साहब कर ही क्या सकते थे। अब यहीं पर हम एक भेद खोले देते हैं।

वह मकान जो हकीम साहब के नाम रहन हुआ था उसका रहन-नामा भी जाली था। बात यह थी कि एक औरत को डोली में बिठाकर रजिस्ट्री आफ़िस में गये। उसके नाम से मकान की रजिस्ट्री और दस्तख़त हो गया। असल मालिक को इत्तला भी न थी। सिर्फ़ किराये का मकान ले लिया गया था। हकीम साहब इस मुक़दमे को फ़ौजदारी में चला सकते थे। मगर उससे होना ही क्या था। अगर जाल का सबूत पूरा पूरा पहुँचता तो मियाँ अमजद बरस दो बरस के लिए क़ैद हो जाते। यह ऐसे लोगों में थे जो जेलख़ाने को ससुराल कहा करते हैं। दो बार इससे पहले क़ैद हो चुके थे। हकीम साहब समझे कि अमजद के क़ैद कराने से नफ़ा क्या होगा। सिर्फ़ बदला लेने की चाह ऐसी चीज़ नहीं जिसके पूरे होने से रुपये के नुक़सान की तलाफ़ी हो सकती हो।

इस वक्त हकीम साहब का पेट खाली था। कचहरी जाने की देर हो रही थी। बीवी मचली बैठी थी।

बीवी 'अगर मैं आज से खाना पकाऊँ तो मेरी मुई जवानी पर लानत है। मेरे जीने पर लानत है।'

आज बीवी ने बुरे वक्त नखरा किया। एक वजह इसकी और भी थी। वह यह कि बीवी के मैके में एक लड़के की दूध बढ़ाई हुई थी। वहाँ से हिस्से का हिस्सा आया था। उसमें पूरियाँ और थोड़ा सा कीमा-गोश्त पाँच गुलगुले थोड़ा सा था। वह यह सात बजे से खाकर बैठ रही थीं। गुलगुले बच्चों को खिला दिये। हकीम साहब के लिए बिलकुल सफाई थी।

हकीम साहब 'तो खाना फिर तो आज से न पकाना।'

बीवी 'हम तो कसम खा चुके। कभी न पकाएँगे।'

हकीम साहब ने देखा कि अब शौहर होने का रौब दिखाने का मौका है। बिना उसके बात ही न बनेगी। गुस्से में भरे हुए उठे और गोश्त की पतीली को चूल्हे पर चढ़ी हुई थी उसे उठाके अँगनाई में उछाल दिया। इत्तफ़ाक से कहीं एक बोटी उछल के बीवी के पाँव पर पड़ गई। अब क्या था थोड़ा बम का गोला टूटा। बीवी ने चीख चीख के रोना शुरू किया। छाती पर दुहत्थड़ पड़ रहे हैं। हाय मार डाला हाय जला दिया है। है है मुझे लावारिस समझा है। है है अब्बा जान है है अम्माँ जान। अब इस तरह से रोना शुरू कर दिया जैसे इसी वक्त अब्बाजान ने इन्तकाल किया है। इसके बाद शादी करने वाले (यानी हकीम साहब के माँ बाप) इलाही शादी करने वालों की कब्र में कीड़े पड़ें। हाय मुझे किस आफ़त में फँसाया।

हकीम साहब (बुजुर्गों की खिदमत पर गुस्सा आ ही गया) 'किसने की शादी? तुम्हारे बाप ने शादी की थी।'

बीवी (रोती जाती है और जवाब देती जाती है) 'हमारे अब्बा पढ़ आदमी थे। उनसे मुए जालिमों ने फ़रेब किया। हाय हमारे अब्बाजान क्या जानते थे इस मुए जालिम से पाला पड़ेगा। हाय मुए जालिए! खुदा की मार, मुर्दों को हैजा आए।'

हकीम साहब 'बस अब चुप रहो बहुत हो चुकी।'

बीबी (और चीख के) : 'चुप रहूँ। कोस कोस के जान खाऊँगी जैसे मुए तूने मेरा पैर जलाया है।

हकीम साहब 'तो क्या मैंने जान के पाँव जला दिया।

बीबी मैं कसम खाती हूँ। जान बूझ के पतीली मेरे सर पर खींच मारी वह तो हट न जाती तो सर फट गया होता। तू तो मेरे लहू का प्यासा है।

हकीम साहब (जब देखा कि किसी तरह चरखा थमता ही नहीं फिर पारा गरम हो गये) : 'नेकबख्त चुप रह।

बीबी 'नेकबख्त नेकबख्त ? नेकबख्त तेरी चहेती। नेकबख्त तेरी अम्माँ, नेकबख्त तेरी भैना। लो अब हम नेकबख्त हो गए।

हकीम साहब 'अच्छा फिर क्या कहूँ। नेकबख्त कोई बुरी बात कही ?

नबीबख्श (ड्योढ़ी में खड़े जंग के मजे ले रहे हैं) 'खानम साहब यह तो कोई बुरी बात नहीं।

बीबी 'आज तक नेकबख्त न कहा। बुरी बात हम नहीं सुनते। नेकबख्त उन्हीं को मुबारक रहे जो नेकबख्त हों। हम तो बद हैं।

हकीम साहब 'तुम अपनी जबान से बद बनती हो। मैं तो नहीं कहता।

बीबी : 'हाँ हाँ। हम तो बद हैं।

अब हकीम साहब बहुत ही घबरा गए। इधर झगड़े में दस बज गये। हकीम साहब बेचारे चुपके उठे बाहर चले गये।

नबीबख्श 'हुजूर तरकारी रोटी लाऊँ। खा लीजिये।

हकीम साहब (समझे कि इस वक्त यही ठीक है) : अच्छा लाओ।'

नबीबख्श 'पैसे दीजिए।

हकीम साहब ने पाँच पैसे निकाल के दिए। दो पैसे की तरकारी तीन पैसे की रोटियाँ।

नबीबख्श 'अच्छा तो लाऊँ काहे में ? अन्दर से दस्तरख्वान और प्याला ला दीजिये।

हकीम साहब अन्दर गए। बावर्चीखाने से दस्तरख्वान उठाया। आलमारी

पर से चीनी का प्याला उठाया। बीबी आँसू पोंछ के बैठी हैं। किन आँखों से देख रही हैं कि यह कहाँ गया है। ज्योंही हकीम साहब प्याला और तश्तर थाम बाहर लेके चले बीबी ने प्याला हाथ से छीन लिया।

बीबी 'हाँ हम भूखे बैठे रहें तुम बाहर तरकारी रोटी मँगा के निगलो। हम तो प्याला न देंगे।'

हकीम साहब ने चाहा हाथ से प्याला छुड़ाकर बाहर ले जायें। इस छीना झपटी में हाथ से प्याला गिर पड़ा। छन से टूट गया।

एक तो दोस्त की पतीली उड़ाली गई, यह नुकसान हुआ। दूसरे चीनी का प्याला बुजुर्गों के वक्त का टूटा। तीसरे मुफ्त की मौत बीबी की टेढ़ी इज्जत का गुस्सा नसीबन के टुकड़ों का खिसियानपन मुकदमे के दाखिल हो जाने का अन्देशा इन सबके ने जमा होकर हकीम साहब के गुस्से को सुलगा दिया। सीधे हाथ से एक तमाचा उन्होंने बीबी के झुर्रियाँ पड़े हुए गालों पर जमा दिया।

चलिए अब क्या था मौका बेसी-बारह की सुरंग में आग लगा दी गई। बीबी वहीं पाँव फैला के जमीन पर बैठ गई। दोहत्थड़ चलने लगे। एक चोट जमीन और एक आसमान।

बीबी : 'इलाही हाथ टूटें। इलाही हाथ सड़ें। इलाही हाथ सड़ें। इलाही हाथों में कीड़े पड़ें। तमाचा मारने वाला मरे। तमाचा मारने वाला गारत हो। ए मौला तेरी लाठी में आवाज नहीं। अठवारा न कटे।

हकीम साहब 'अब सजा को पहुँची।

और लो यह कहके हकीम साहब बढ़े। एक तमाचा और मारा। बीबी ने पड़ से सर जमीन पर दे मारा।

बीबी 'मैं मुए, मैं खुद सर फोड़े लेती हूँ।

वाकई बीबी का सर फट गया। बस खून बहने लगा। इसके बाद बीबी ने चिल्लाना शुरू किया।

बीबी (मातम करने के सुर में) 'हाय अब तो मेरा सिर फूटा। खून बह रहा है। हाय बेचारसा समझ के मुझे मार डाला। हाय सिर फूटा। हाय

दिमाग फट गया।'

और जो गुल की आवाज सुनके मुहल्ले के लोग दरवाजे पर जमा हो गए। इसी बीच में खुदा जाने किसने हकीम साहब के साले को खबर कर दी। यह एक सुर्मा-बेतकान लखनऊ के कुश्ते-बाजों में शुमार किए जाते थे। बहन के घर फटने की खबर सुनके लठ हाथ में उठाया और अपने दस बारह गुर्गों को जमा करके फौरन मौके-वारदात पर पहुँच गये। लाठ वालों को ड्योढ़ी में खड़ा किया। खुद घर में घुस आये।

अब तो हकीम साहब घबड़ाये।

मजहर (हकीम साहब के साले का नाम था। हकीम साहब की तरफ बुरे तेवरों से घूरकर) 'यह क्या हरकत की?'

हकीम साहब 'हरकत क्या की अपना सर फोड़ लिया।'

मजहर: 'कुल्लत। अबे मुझसे चालबाजियाँ करते। यह नहीं कहते कि औरत का सर फोड़ डाला।'

हकीम साहब 'नहीं खुद सर फोड़ लिया।'

मजहर 'यह अदालत में बयान कीजियेगा। औरतजात की इतनी हिम्मत ही नहीं हो सकती कि अपना सर आप ही फोड़े। क्यों भाई छुट्टन?' (मजहर के दूध-भाई और कुछ दूर का रिश्ता भी था। ड्योढ़ी में लठ बाँधे खड़े थे। दरवाजे के पास पहुँच गये। अन्दर नहीं आते हैं।)

छुट्टन (दरवाजे के अन्दर मुँह डालकर) 'क्या सचमुच सर फूट गया?'

मजहर 'जी हाँ सर खिल गया। खून का दरिया भरा हुआ है। और जनाब हकीम साहब फर्माते हैं कि आप ही सर फोड़ लिया।'

छुट्टन (हँसके) 'अच्छा तो पुलिस को खबर कर दूँ।'

मजहर (पुलिस को एक गाली देकर) 'हम वकील हैं? अभी यहीं इनकी मरम्मत किये देते हैं।'

यह कहकर हकीम साहब का हाथ पकड़ के एक दो घूँसे रसीद किये। हकीम साहब भी लिपट पड़े। मियाँ मजहर ने अड़ंगी देकर उनको जमीन पर दे मारा और एक दो तीन घिस्से लगा दिये कसके। हकीम साहब बेचारे मक्खी

की तरह फड़कने लगे। बीबी दौड़ के कोठरी में जा घुसीं। छुट्टन और उनके साथ के चार पाँच आदमी अन्दर घुस आए। हकीम साहब की अच्छी मरम्मत की। मियाँ नबीबख्श बेचारे मुनमुना से आदमी कर ही क्या सकते थे? मारे डौरखाही के दौड़कर चौकी पर खबर दी। वहाँ से एक हवलदार और दो बरकंदाज चले आए। इज़हार लिये जाने लगे।

हवलदार 'यह क्या वारदात हुई?

मज़हर (हकीम साहब की तरफ़ इशारा करके) 'इन्होंने हमारी बहन का सिर फोड़ डाला।

हवलदार 'कहाँ है तुम्हारी बहन?

मज़हर 'यहीं है और कहाँ है।

हवलदार 'बुलाओ।

मज़हर : 'बुलाएँ क्यों कर? पर्दानशीन औरत है।

हवलदार 'तो फिर हम इज़हार क्या लिखें?

मज़हर 'इज़हार लिखवा देंगी।

हवलदार (हकीम साहब की तरफ़ इशारा करके) 'तुम्हारे कौन है?'

मज़हर 'बहनोई।

हवलदार (हकीम साहब की तरफ़ देखकर) 'आप बतलाइये क्या मामला है?

हकीम साहब : 'यह तो वैसे आदमी हैं, इनकी बातों से ज़ाहिर है। बात यह है कि मैंने दूसरी शादी की है। इस वजह से इनकी बहन बेबात की मुझसे लड़ा करती है। आज भी इसी तरह लड़ाई हुई। उन्होंने एक टक्कर ज़मीन पर मारी। सर में चोट लगकर आई। इतने में किसी ने इनको ख़बर कर दी। यह यहाँ से दस बारह गुण्डों को लिए हुए मेरे मकान में घुस आए। कई आदमियों ने मिलकर मुझे मारा।'

मज़हर : 'यह झूठ कहते हैं। जिस वक्त मैं आया हूँ, यह अपनी बीबी को मार रहे थे। मैंने आकर छुड़ा दिया।

हकीम साहब 'ख़ुदा से डरो। कौन मार रहा था?

मजहर : 'तुम खुदा से डरते हो। खुद तो औरत का सर फोड़ा और हमसे कहते हो खुदा से डरो।'

हवलदार : 'हकीम साहब बेशक गुस्सा बुरी चीज है। मैं समझता हूँ कि आपने कोई जुर्म नहीं किया। मगर मुकदमा संगीन है। थाने पर चलकर बतलाना पड़ेगा। और मुहम्मद को भी डोली पर सवार होकर जाना पड़ेगा।

हकीम साहब : 'मगर आप समझिये कि इसमें एक बड़ी हमारी तौहीन है।

यह कहकर हवलदार की तरफ उन निगाहों से देखा जिसका यह मतलब था कि बस बारह रुपये ले लीजिए और मुकदमे को यहीं रफे दफे कर दीजिये। मियाँ मजहर भी पुलिस की दस्तअन्दाजी पसन्द नहीं करते थे। मुँह फेर कर खड़े हो गए क्योंकि वह भी शरीफ कहलाते थे। इतने गुस्सावर होते हुए भी कुछ शराफत की बू बाकी थी। बहन का बदला अपनी मर्जी के माफिक ले चुके थे और उनको अपने कुव्वते-बाज़ू पर इतना भरोसा था कि जब चाहेंगे हकीम साहब को बधिया लेंगे। दूसरे यह भी उनको अच्छी तरह मालूम था कि हकीम साहब ने सर नहीं फोड़ा। यह बहन ही का काम है।

हवलदार (हकीम साहब के इशारे को समझे और मौके के इशारे से जवाब भी दे दिया कि इतने में मामला न होगा) : 'नहीं तो हकीम साहब इसमें मेरा कुछ अख्तियार नहीं है। थानेदार साहब के पास चले चलिये। जैसा वे कहेंगे वैसा किया जायगा।

हकीम साहब खूब जानते थे कि अगर खुदा न करे, थानेदार साहब तक जाने की नौबत आई तो बिना एक पचासा दिये हुए छुटकारा न होगा। वह डर यही है कि यहीं कुछ और बढ़ा दो। यह इस फ़िक्र में थे कि एक बरकंदाज करमअली नाम का आ गया और हवलदार का हाथ पकड़ के अलहदा ले गया। दो बातें चुपके चुपके कीं। और चिल्लाकर 'हवलदार साहब जाने दो। बीबी मियाँ का मामला है। हकीम साहब शरीफ़ आदमी हैं। इधर शिकायत करने वाले की तरफ से भी रजामन्दी जाहिर है। जाने दो।

हवलदार (हँस के) : 'मगर ऐसा न हो कि थानेदार साहब को खबर हो।

कसम लो नहीं कौन खबर करेगा ?'

वीरसिंह (दूसरा बरक़न्दाज़) 'जाने दो ससुर कौन बड़ा मामला है ? बीवी मियाँ में लड़ाई हुई। कमबख़्त की औरतें तुम जानते हो कैसी होती हैं।

मज़हर 'नहीं तो पुलिस की दस्तंदाज़ी इस मामले में हम भी नहीं पसंद करते।

हवलदार : 'तुम क्यों पुलिस की दस्तंदाज़ी पसंद करोगे। थानेदार साहब के सामने जाते हुए तो तुम्हारी नानी मरती है।

मज़हर बड़े बाँके तिरछे थे मगर हवलदार के सामने मुँह से बात न निकली। इसलिये कि आपका रंग ढंग इस क़िस्म का था कि पुलिस जब चाहे बदमाशी में चालान कर दे। और आप साल दो साल के लिए हवालात की सैर कर आएँ। ख़ुलासा यह कि सर प आई हुई बला ख़ैर से गुज़र गई।

इस मुक़दमे के तय होने के बाद हकीम साहब ने फिर कचहरी जाने का इरादा किया मगर एक दोस्त ने आकर ख़बर दी कि मुक़दमा अदमपैरवी में ख़ारिज हो गया। चलिये कचहरी जाने की तकलीफ़ बच गई।

इक्तालीस

यहाँ तो हकीम साहब पर यह वारदात गुज़री। वहाँ सुनिये कि नहीं मालूम किसने (किसने क्या ? मिर्ज़ा नबीबख़्श ने) तमाम वाक़यात ज़रा ज़रा बयान कर दिये। शाम को हकीम साहब जो गये तो बेगम साहिबा ने इस तरह मिज़ाज पुर्सी की।

कुलसुम बेगम : 'सुनती हूँ आज तो आपके मकान पर बड़ा मार्का हुआ।

हकीम साहब (सँभलकर) 'जी हाँ घर में लड़ाई हुई। उन्होंने गुस्से में अपना सर फोड़ लिया। थाने साहब पीछे आये। मुझसे हुस्न-मुस्त हुई।'

कुलसुम बेगम 'यह तो मुआ एक ही गुर्गा है। मैंने सुना है उसने तुम्हें उठा के पटक दिया और खूब मारा।'

नबीबख्श वहाँ भी हाज़िर थे। यह कैसे मुमकिन हो सकता था कि हकीम साहब कोई बात झूठ कह सकते। क्योंकि मियाँ नबीबख्श की मर्ज़ी किसी जगह रुकती ही न थी। वहाँ तो ड्योढ़ी में से खड़े खड़े लगा रहे थे यहाँ आमने सामने बातचीत हो रही थी क्योंकि कुलसुम बेगम ऐसे लोगों (जैसे मियाँ नबीबख्श) से पर्दा करना शान के खिलाफ समझती थीं।

नबीबख्श 'एक घूँसा मियाँ ने भी करारा मारा था। वह तो उसने दोनों हाथ ऐसे पकड़ लिए कि मियाँ हमारे फड़फड़ाने लगे।'

हकीम साहब 'एक घूँसा? तीन घूँसे मैंने ऐसे जड़े हैं कि मियाँ मज़हर याद करते होंगे।'

नबीबख्श 'नहीं हुजूर मैं तो खड़ा देख रहा था जब उसने दोनों हाथ आपके बाँध के नीचे दबाये हैं। उस वक्त मेरे जी में आया कि अन्दर घुस जाऊँ मगर हुज़ूर ने हाथ पकड़ के मुझे दरवाजे से बाहर कर दिया। उस वक्त मुझ से कुछ न बन पड़ा। चौकी पर बैठा रहा।'

हकीम साहब 'यह तुमने ऐन बेवकूफी की। मजा आने पर थाना क्या ज़रूर था। सारे मुहल्ले में ज़िल्लत हुई और पचास रुपये मुफ्त देने पड़े।'

नबीबख्श 'जी हाँ अब तो कहिये ही गा। बेवकूफी की। जब हवलदार आये हैं तभी तो मज़हर ने आपको छोड़ा है, नहीं तो दबाये हुये बैठा था और ऊपर से घूँसे मार रहा था।'

कुलसुम बेगम: 'और बीबी साहिबा कहाँ थीं?'

नबीबख्श: वहीं थीं और कहाँ थीं जब चौकी पर से आदमी आये हैं उस वक्त कोठरी में घुसीं।

कुलसुम बेगम 'यह सामने बैठी देखा कीं और मियाँ पिटा किए। खुदा हो औरतों से ऐसी बचाए। नाम तो ब्याहता का है। ऐसियों ही से मर्द राखी

रहते हैं।

नबीबख्श (हुक्के का एक कश लेकर) 'वल्लाह सच है।

कुल्सुम बेगम 'मैं तो ऐसे मार्ई को खाक में मिला देती जो मियाँ को मारे। सब बातें यह मार्ई। जमीन का पेवन्द हो ऐसा मार्ई। देखो इधर का साउ मसा सूजा हुआ है।'

नबीबख्श 'मसा सूजा हुआ है, मैं कहता हूँ सारा बदन चूर चूर है। मैंने तो उसी वक्त कहा था दूध में फिटकरी डाल के पी लीजिये।

कुलसुम बेगम 'तो क्या नहीं पिया?

नबीबख्श 'कहाँ पिया।'

हकीम साहब 'नहीं कुछ ऐसी चोट नहीं आई थी।

नबीबख्श 'यह तो मियाँ के कहने की बात है। चोट क्यों नहीं आई? पुरवाई हवा चलेगी तो मालूम होगा।

यहाँ यह बातें हो ही रही थीं कि इतने में ख़लिया सास थाली की मुख साली माला करती हुई चली आई। हकीम साहब ने झुककर बंदगी की।

ख़लिया सास 'जीते रहो। सलामत रहो। हाँ मैंने सुना है बड़ी लड़ाई हुई।

अब सारा हाल उनके आगे दोहराया गया। इस तरह कि कुलसुम बेगम अपनी लस्सानी जबान में हर बात को बयान कर रही थीं और मियाँ नबी बख्श नमक मिर्च लगाते जाते थे। और ख़लिया सास मौके मौके पर हाँ है है कहती जाती थीं। आख़िर में उन्होंने यह नतीजा निकाला।

ख़लिया सास 'मैं ननौरा (हकीम साहब की बीबी के पुकारने का नाम था जिसको बुज़ुर्ग प्यार से और ग़ैर औरतें बेतकल्लुफ़ी से लेती हैं) को बचपने से जानती हूँ बड़ी फ़ैलसार्ई है।

नबीबख्श 'आप सच कहती हैं। मैं तो खरी-खरी कहूँगा। आज मियाँ का कुछ भी क़सूर न था सिर्फ़ खाने के लिए कहा था। उस पर उन्होंने यह आफ़त कर दी। अच्छा यह तो जो कुछ हुआ वह हुआ। आप कुछ फिटकरी मँगाती थीं। लाइये लाऊँ। उधर से तम्बाकू भी अपने लिये लेता आऊँगा।

कुलसुम बेगम ने जीनत (कुलसुम बेगम की आया का नाम था) को आवाज़ देकर संदूकचा मँगाया।'

हकीम साहब 'नहीं कोई ज़रूरत नहीं।

कुलसुम बेगम 'तुम बस करो। मैं ज़रूर पिलाऊँगी। देखती हो खाला जान कहीं दर्द हड्डी में रह जायगा तो क़यामत हो जायगी।

सलिमा खास 'नहीं मैं करबला से मोमियाई लाई थी। वह वहीं रखी हुई है। देखूँ संदूकचे में यकीन है वहीं हो।

नबीबख्श 'बस तो फ़ौरन दूध बाज़ार से मँगवा लीजिये। मोमियाई की क्या बात है! सुना है भारी चोट अन्दर से खींच लेती है।

इतने में जीनत संदूकचा ले ही आई। कुलसुम बेगम ने चार पैसे निकाल कर निकाल कर नबीबख्श को दिये। वह दूध लेने बाज़ार गये। सलिमा खास मोमियाई ढूँढ़ने के लिये अन्दर के दालान में गई। कुलसुम बेगम और हकीम साहब में फिर उस मामले पर शुरू से बहस छिड़ गई। अब इस बहस का यह सब बताना कि इस लड़ाई को जीत की जान से किस क़दर ताल्लुक़ है।

कुलसुम बेगम: अच्छा यह तो सब कुछ हुआ। अब यह बताओ कि इस लड़ाई की असल वजह क्या है?

हकीम साहब यह तुम आप ही समझ सकती हो।

कुलसुम बेगम 'यह तो मैं पहले ही समझी हुई थी कि मेरे बारे में लड़ाई हुई। फिर मैं अब नहीं छूट सकती तो यह लड़ाइयाँ रोज़ यों ही रहें।

हकीम साहब: 'जी हाँ सब अच्छे रहे। मेरी जान ग़ज़ब में पड़ गई।'

कुलसुम बेगम अब मैं तो मैं भी आ गई। मेरे सबब से क्यों तुम्हारी जान ग़ज़ब में पड़ी? और अगर यह सच है तो फिर तुमने क्यों ऐसा काम किया?

हकीम साहब (एक ठंडी आह भरके) 'हाँ अब तो बेवकूफ़ी हो गई। फिर इसका इलाज?

कुलसुम बेगम 'तुम हकीम हो तुम्हीं इलाज बताओ। अच्छा मुझे छोड़ दो। तुम्हारी जान आफ़त से छूट जाए।

हकीम साहब (जरा ठहर के) 'छोड़ देने का तो मैंने नाम नहीं लिया। तुम खुद भाव समेत पाँच छः बार कह चुकी हो। आखिर तुम्हारा क्या मंशा है ?

कुलसुम बेगम 'देखो हकीम साहब तुम्हारी बीबी हूँ बाहिल और मैं खुदा के फ़ज़्ल से बेपढ़ी लिखी नहीं हूँ। मुई इमामन ने मुझे तुम्हें दोनों को फँसाया। मुई ने मुझे तो बयान किया कि मिहंग है और तुमको यह फ़रेब दिया कि छोटे नवाब की माँ के साथ निकाह करवाए देती हूँ। मैं भी धोखे में आ गई और तुम भी। मैं अगर जानती तुम चीटियों-भरे कबाब हो तो काहे को यह बात होती ?

हकीम साहब : 'हाँ मैं समझता हूँ कि तुम इस मामले में बेकसूर हो। तुम्हें भी धोखा दिया गया।

कुलसुम बेगम : अच्छा तो अब भी कुछ नहीं गया है। तुम मुझे छोड़ दो। ख़ाला करबला जाने को कह रही हैं। उन्हीं के साथ मैं भी चली जाऊँगी तीन हिस्से मेहर मैं तुम्हें माफ कर दूँगी। एक हिस्सा दे दो।

हकीम साहब 'अगर मैं अपनी तमाम जायदाद बेच डालूं बल्कि मैं भी बिक जाऊँ तो भी मुझ से एक चौथाई हिस्सा मेहर न अदा हो सकेगा। और मैं छोड़ने क्यों लगा ? वजह क्या ? क्या वो वो औरतें दुनियाँ में होती नहीं ?'

कुलसुम बेगम अगर नहीं छोड़ते तो फिर उसी तरह मेरे साथ भी पेश आओ जिस तरह बीवियों के साथ पेश आना चाहिये।

हकीम साहब 'इसमें तो मुझ से अभी तक कोई क़ुसूर नहीं हुआ। रोज तुम्हारे पास आता हूँ। खाने पीने को जो कुछ हो सकता है हाजिर करता हूँ। इसके सिवा और जो कुछ तुम्हें कहना हो कहो।

कुलसमु बेगम कहना यह है कि एक रात यहाँ रहा करो एक रात वहाँ। दूसरी बात यह कि मेरे तुम्हारे जो इक़रार है, उसे पूरा करो।

हकीम साहब : 'अच्छा यह भी सही। मैं आज से ऐसा ही करूँगा। मगर वह इक़रार कौन है, जिसे पूरा करूँ ?'

कुलसुम बेगम बस इसी बात पर तो मेरे आग लगती है। आखिर

पचास रुपये महीने का इकरार था कि न था ?'

सलिमा सास : 'हाँ यह तो मैं भी सुनती हूँ कि पचास रुपये महीने का इकरार था।'

कुसुम बेगम 'इकरार क्या कुछ मुँह जबानी था ? स्टाम्प के कागज पर रजिस्ट्री हो गई है।

हकीम साहब 'देखिये सारासार बात यह थी कि निकाह तो ...र ही धोखे में हुआ। हम कुछ और समझे थे और यहाँ कुछ और ही बात निकली।

सलिमा सास 'हाँ यह सच है, मगर अब तो एक शख्स ने अपनी आबरू दी। वह तो निगोड़ी कहीं की न रही। और यह तो मैं खूब जानती हूँ कि निकाह किसी तरह न होगा क्योंकि उसकी तबीयत इस तरह भी ठहरी कि ब्याहता खसम ने रंडी कर ली उसने सारे जाते छोड़ दिया। तुम ठहरे बीबी के फ़र्माबरदार।

हकीम साहब 'अब तो निकाह किसी तरह करना चाहिये क्योंकि अब तो जो होना था सो हो गया। मैं हर तरह राजी हूँ। आज तक ताल्लुक रहने को नहीं कहा। अब आज क्या है ? और यों भी सही।'

कुसुम बेगम : 'हमारे नाम पर और यों सही। जो टेढ़ी बात करें, मारे छः बार जूते घुसाकर चूड़ियाँ खिलवाएँ' उन्हीं का अभी तक दम भरे जाते हो।

हकीम साहब (यह आखिर के चन्द फ़िकरे कुसुम बेगम के हकीम साहब के दिल पर नश्तर का काम कर गये। गुस्से में आकर जवाब दिया) 'दम कौन भरता है ? मन से बहुत बहतर निकाली जायगी और मियाँ मजहर को तो बगैर जेलखाना भेजे हुए खाना पीना हराम है। जाते कहाँ हैं मेरे हाथ से ?

कुसुम बेगम 'वाह कुछ असगर और इमामन को तुमने जेलखाना भिजवा दिया कुछ मजहर को भिजवाओगे।

हकीम साहब 'अच्छा देख लेना। और मियाँ असगर क्या छूट जाएँगे ? उन्होंने तो मेरे साथ दोहरा काम किया। मगर इसमें 'मुरदार' भी शामिल था। मियाँ असगर और बी इमामन का यह दिलजुर्म नहीं ? यह उन्हीं के फ़िकरे हैं।

कुलसुम बेगम 'यह 'मुरदार' कौन है ? कुछ नाम ?

हकीम साहब 'जी हाँ वह उन्हीं का छुटकुसा था। अभी तो शहर में बदनाम है। तमाम अमीर रईस उसके नाम से कानों पर हाथ धरते हैं।

कुलसुम बेगम यह तो तुम गलत कहते हो। शहर के अमीर रईस तो उन्हें आँखों पर बिठाते हैं। जिस सरकार में चाहे उसे बना दिया।

हकीम साहब 'कैसा कुछ, एक तो छोटे नवाब ही को बना दिया। असली सरकार की डिग्री करा दी। और फिर वारंट में फँसवा दिया। यह तो कहिये अच्छी कुर्की से ग्यारह सौ रुपये देके छुड़ा दिया। मगर बकरे की माँ कब तक खैर मनायगी। हजारों खिलाड़ियाँ हैं।

कुलसुम बेगम छोटे नवाब ने खुद अपना रुपया खराब किया। रातें भी साथ रंग देखे परियों के तख्त उतारे। फिर इन हरकतों में रुपया न खर्च होता तो क्या होता ?

हकीम साहब 'यह सब बासीफ़ की उनकी कारस्तानियाँ थीं जिन को तुम बड़े भैया कहती हो।

कुलसुम बेगम तुम्हारी उनकी तो खुल्लम-खुल्ला दुश्मनी है। तुम तो ऐसा ही कहोगे।

हकीम साहब अच्छा एक मैं दुश्मनी की वजह से कहता हूँ। सारा शहर यही कहीं कर रहा है।

कुलसुम बेगम 'कोई भी नहीं कहता। हमने तो तुम्हारे मुँह से अभी सुना है। खुद जिसका मामला है यानी छोटे नवाब अब तक उनका दम भरते हैं। और हम क्यों न भरें ? सारा जमाना छोटे नवाब से फिर गया। भैया अभी तक आठ आने रोज मंडू को दिये जाते हैं।

हकीम साहब बेशक आठ आने रोज मंडू को देते हैं। मगर अभी तक एक नोट बाकी भी तो है जिसके नम्बर गुम हैं। कोम नम्बरों का पता लगाने कलकत्ते गये हुए हैं। इस नोट का भी खातमा हो जाय फिर आठ आने रोज दें तो जानें।

कुलसुम बेगम 'फिर कोई भी तो किसी को ये मवसब देता है

हकीम साहब 'यह कहो। अब राह पर आईं। हम के काबिल हैं।'

कुलसुम बेगम : 'और तुम काबिल नहीं हो?'

हकीम साहब 'मैंने क्या काम किया?'

कुलसुम बेगम 'एक काम? सैकड़ों काम।'

अब बातचीत में रफ्तार ज्यादा होती थी। कनिया साथ का बचन देना जरूरी था।

कनिया साथ 'अच्छा तुम्हें पुराने फसानों से बहस क्या है? अपनी अपनी बातें करो।'

इस बीच में मियाँ नबीबख्श दूध लेकर आ गये थे। मोमियाई और दूध हकीम साहब को पिलाया गया। रात ज्यादा हो गई थी। आज हकीम साहब ने यहीं आराम किया।

बयालीस

कुछ दिनों हमसे दोस्ती रखते
दुश्मनों को भी आजमाया था।

आजमाना कैसा? आजमा चुके। साढ़े तीन लाख के नोट पूरे हो गये। सिर्फ ग्यारह हजार नवाब साहब के हाथ आए। मगर अभी वही कारखाना है। नवाबी ठाठ में बिल्कुल कमी नहीं। सरकारदारी ज्यादा बढ़ गई, क्योंकि परियों के बाबू का शौक तो दौलत की कमी के साथ तरक्की में आ चुका था। अमीर के मुसाहिबों ने कोई काम न किया और न उनसे काम लिया गया।

इसलिए कि सब चीज़ें बुक चुकी थीं। थोड़ी बहुत जेब और घर की पहचान हो गई थी। शाहज़ी खासी निकले। उसको सब बातें याद थीं। खर्मीर के नुस्खों का महीन क्या? मुख्तसर जवाब के मिलाप के बाद गड़बड़ हो गई थी। जिन लोगों ने वफ़ा की थी, उन का आना जाना धीरे धीरे घटने लगा कम हो गया था। अगरचे नवाब ने किसी को मना नहीं किया मगर अब कौन आता है? भारी भारी रक़में लेके अपने अपने घरों में बैठ रहे। कितना कहा? अगर किसी मौक़े पर इत्तफ़ाक़ से सामना हो गया आँखें चार हुईं। मामूली सलाम के बाद वहीं तक बस मामला उस मौक़े से टल गया। अब सिर्फ़ उन लोगों से राह-रस्म बाक़ी रह गया जिन्होंने साढ़े तीन लाख के नोटों में से कोई हिस्सा न लिया था। ग्यारह हज़ार के आने में शिरकत थी। कुर्की और वारंट हुए थे ज़्यादा थे। इसलिये घर से निकलना बिलकुल बंद था। इस ज़माने में नवाब साहब ने शाहगंज में एक मकान किराये पर लिया था। वहीं रहते थे। इन दिनों नक़लचियों का शौक़ पैदा हो गया था। ग्यारह हज़ार में से बहुत सी रक़म नक़लचियों में उड़ा दी। ग्यारह हज़ार की असल ही क्या थी? वह भी ख़तम हुई। अब रहा सहा जो असासा बाक़ी था उसके बिकने की नौबत आई। यह भी इस नये पुराने हाथ में हज़ार दो हज़ार से ज़्यादा था। किसी बाज़ारी रंडी को नौकर तो नहीं रक्खा मगर रोज़ाना किसी न किसी का आना ज़रूर था। कुछ दिनों यह मामला रहा। फिर बिस्मन नामी एक रंडी से मुहब्बत बढ़ी। कई महीनों वह रात को आया की। नवाब उसके मकान पर भी जाते थे। बिस्मन के कमरे से मिला हुआ खुरशीद का कमरा था। वहीं एक दिन खुरशीद से सामना हो ही गया।

अगली पिछली बातें छोड़ो। इस क़िस्म की बातें हुईं जो ऐसे मौक़ों पर हुआ करती हैं।

खुरशीद 'क्यों नवाब तुम न कहते थे?

नवाब (सर झुकाके) तुम सच कहती थीं

सिवाय इसके इस मौक़े पर और क्या बात होती। खुरशीद की शिकायतें सब ठीक थीं मगर ग़लतियों का एहसास करना नवाब के ज़मा

की तरफ़ देखकर नवाब से ज्यादा लिपटने लगी। यह खुरशीद को और भी बुरा लगा। अब किसी क़दर ज़िद पैदा हुई। क्यों? क्या हममें यह ताक़त नहीं कि इस छोकरी को नीचा दिखावें? बातें जो हमने बयान की हैं अगरचे इनका भेद समझना ज़रा मुश्किल है मगर ऐसे मौक़े पर यह सब हरकतें दिल ही दिल में हो सकती हैं और अपनी अपनी हालत के मुताबिक़ नतीजे निकाल लिये जाते हैं। औरतों के दिल के भेद-भाव और इच्छाओं का समझना बहुत ही मुश्किल है। लिहाज़ा हम सिर्फ़ ऊपर के वाक़यात ही बयान करते हैं। खुलासा यह की खुरशीद ने कुछ ही दिनों में नवाब को अपना कर लिया। बिस्मन से अब बिगड़ गई। मगर खुरशीद पाबंद थी। इसलिये चोरी-छुपे मिलना होता था। खुरशीद के दिल में नवाब की मुहब्बत पहले से थी। मगर इतनी नहीं कि पाँच सौ रुपये की नौकरी पर वह उनकी ख़ातिर लात मार देती। न वह ऐसी बात चाह ही सकते थे। मगर धीरे धीरे हुआ ऐसा ही। नवाब से जब दुबारा मेल मुहब्बत हुई तो सब से पहले यह भेद बिस्मन को मालूम हुआ। उसको छुपाने की कोई वजह न थी। बिस्मन को ज्यादातर इस मामले में ज़िद न पड़ती मगर बात यह थी कि नवाब बिस्मन के कमरे से उठकर अक्सर खुरशीद के मकान में जाया करते थे क्योंकि हम पहले लिख चुके हैं कि दरवाज़े पर पहरा रहता था। एक दिन इत्तफ़ाक़ से बिस्मन नशे में थी। इस हालत में नवाब उसके पास से उठकर खुरशीद के कमरे में जाने लगे। बिस्मन ने दामन पकड़ लिया।

बिस्मन "मैं तो न जाने दूँगी।

नवाब भी नशे में थे। दामन छुड़ाने लगे। इस कहस में नवाब का नया दारुनी अँगरखा चिरल गया। नवाब फिर उठके जाने लगे। दीवार पर से होकर रास्ता था। नवाब दीवार पर चढ़ रहे थे कि बिस्मन ने टाँग पकड़ कर घसीटी। यह धम से गिर पड़े। सख़्त चोट आई। इस गुस्से में नवाब ने एक तमाचा बिस्मन को मारा और हाथ से ढकेल कर खुद खुरशीद के मकान में चले गये। बिस्मन चीखें मार मार कर रोने लगी। इसके बाद खुरशीद को गालियाँ देना शुरू किया। खुरशीद ने बहुत ज़ब्त किया मगर फिर भी वह औरतज़ात

कहाँ तक चुप रहती। आखिर वह भी जवाब देने लगी। धीरे धीरे वह जवाब की लड़ाई हुई कि भटियारियाँ मात हो गईं। चौक में लोगों की भीड़ हो गई। दो बजे तक दोनों तरफ़ से गाली गलौज हुआ की। दूसरे दिन ताल्लुकेदार साहब को पता लगा। उन्होंने खुरशेद को निकाल दिया। चलिये मैदान खाली हो गया। मगर खुरशेद को इस नौकरी के छूट जाने का ज़्यादा रंज न हुआ। न ऐसे लोगों को रंज होता है। इसलिये कि ऐसे लोगों के बहुत खरीदार होते हैं। जब से होश सँभाला कोई मुसीबत पड़ी नहीं। हमेशा ऐश में कटी और तुर्रा यह है कि जिस मरने वाले से जो कह देंगे वह हो जायगा और ऐसा अवसर होता भी है। उधर नवाब ने इस से ज़्यादा तावेदारी करना शुरू की। चंद ही रोज़ के बाद शहर भर को मालूम हो गया कि खुरशेद के घर पड़ गये।

तेतालीस

एक दिन हकीम साहब अपने हिसाब-किताब को देख रहे थे। अम्मा जानम वाले मकान का रहन नामा बही में से निकल आया। हिसाब लगाया तो उनके सतरह महीने का किराया चढ़ा हुआ था। नबीबख्श को आवाज़ दी।

नबीबख्श हुज़ूर।

हकीम साहब नबीबख्श जाओ तो। आज अम्मा जानम से किराया वसूल करके लाओ। कहना कि साढ़े सतरह महीने चढ़ गये हैं। अब ज़्यादा की हमको गुंजायश नहीं है। फ़ौरन किराया दीजिये और मकान को खाली कर दीजिये। उसमें कोई किरायेदार रख दिया जाय क्योंकि आपसे किराया अदा न होगा वरना हम नालिश कर देंगे।

नबीबख्श 'बहुत खूब। तो ग्रभी खाऊं ?

हकीम साहब 'ग्रौर कब।

नबीबख्श 'ग्रभी तो अफ़ीम नहीं खाई है।

हकीम साहब अफ़ीम खाओ। क्या अफ़ीम खाने में कुछ देर लगती है ?

नबीबख्श देर तो नहीं लगती है मगर ग्रापसे कह देना ग्रच्छा है इसलिये कि शायद खाते खाते ज़रा देर लग जाती तो ग्राप खफ़ा होते।

हकीम साहब 'ग्रच्छा तो कब तक ग्रा जाग्रोगे ?

नबीबख्श 'यही कोई दो घंटे में।

हकीम साहब 'ग्राज तुमने दिन भर की फ़ुरसत की !

नबीबख्श 'जी नहीं। जल्दी ग्राऊंगा।

हकीम साहब 'हां ग्रभी ग्राई चार बजे तक।

नबीबख्श 'ए हुज़ूर दोपहर तो यहीं हो गई है।

हकीम साहब 'दोपहर ? ग्रभी तो दस बजे हैं।

नबीबख्श 'दस बजे हैं ? मैं कहता हूं ग्यारह कबके बज गये बल्कि बारह का ग्रमल है।

हकीम साहब 'घड़ी में दस बजे हैं। तुम कहते हो बारह का ग्रमल है।

नबीबख्श 'ए हुज़ूर, शाहग्रालम के यहां के घड़ियाली से कोई घंटा भर हुग्रा मैंने पूछा था। उसने कहा था ग्यारह बज गये। खुदा जाने ग्रापकी घड़ी कैसी है ?

हकीम साहब 'जी हां तुम्हें शाहबाबा साहब के घड़ियाल पर यक़ीन होगा ग्रौर हमारी घड़ी का एतबार नहीं।

नबीबख्श 'तो क्या घड़ियाल ग़लत है।

हकीम साहब 'घड़ियाल का क्या एतबार है ? वह तो शाहबाबा साहब की गुलामती मनाता है। घड़ियाली ऊँघा करता है। जब ऊँघते ऊँघते चौंका तो उसके जी में ग्राया बजा दिया।

नबीबख्श : 'ठीक है मगर बादशाही से इस वक्त तक सारे ज़माने का काम उस पर चल रहा है ग्रौर यह घड़ी घंटा कोई जानता भी न था।

बादशाही में कहीं बड़े बड़े अमीरों के पास घड़ियाँ थीं और बड़ी मँहगी आती थीं। अब ऐसी घड़ियाँ निकल पड़ी हैं जिनको देखो एक घड़ी पाँच रुपये की ले ली। एक पीतल की जंजीर डाल के लटका ली। अकड़ते चले जाते हैं। भला यह पाँच पाँच रुपये की घड़ियाँ क्या ठीक वक्त बताएँगी ?'

हकीम साहब 'अब तुम्हारी हुज्जतों का कौन जवाब दे ? पाँच रुपये वाली घड़ियाँ भी खूब ठीक चलती हैं और यह मेरी घड़ी वाच इंगलिश है। एक मिनट का कभी फ़र्क नहीं पड़ता।

नबीबख्श 'जी हाँ जब से आपने नीलाम में ली है कोई पाँच रुपये तो मेरे हाथों घड़ीसाज़ ले चुका है। बस ऐसी घड़ी है। घड़ी वगैरह, आठ आठ सौ वाली के सिवा ठीक नहीं होती है।

हकीम साहब नबीबख्श की आदत से खूब वाकिफ थे कि जब यह बहस करते हैं किसी से बंद होते ही नहीं और हकीम साहब को भी इनके साथ कहा सुनी करने की आदत हो गई थी। मगर इस वक्त हिसाब-किताब देख रहे थे। हर सूरत में इन्हें टालना मंजूर था। चुप हो रहे।

नबीबख्श : अच्छा तो मैं जाता हूँ। तम्बाकू, गोश्त तरकारी के लिये पैसे दे दीजिये। उधर ही से लेता आऊँगा।

हकीम साहब (हिसाब देखने में बहुत मसरूफ थे) यह सब फिर ले आना इस वक्त तो जाओ।

नबीबख्श : 'हुज़ूर, आपको दो दो बार टाँगें दुखवाने से क्या फ़ायदा ? दे भी दीजिये। बेगम साहिबा से संदूकचा माँग लाऊँ।

घुमाता बहु सी बुड़ बुड़ करके नबीबख्श उठे। उस वक्त के गये गये शाम को अमर के आए तो यह खबर लाए।

नबीबख्श उस मकान में तो कोई जवाब ही नहीं देता जैसे कोई रहता ही नहीं।

हकीम साहब फिर, तुम अन्दर गये थे ?

नबीबख्श 'अन्दर क्यों कर जाता ?'

हकीम साहब : क्यों क्या बाहर से ताला लगा था ?

नबीबख्श : 'जी नहीं जाता तो न था ।

हकीम साहब 'फिर अन्दर चले गये होते ।

नबीबख्श 'अन्दर क्योंकर जाता ? पराए मकान में दनदना घुस जाता ?'

हकीम साहब 'पराया मकान कैसा ? मकान हमारा है ।'

यह हकीम साहब ने इसलिये कहा था कि आपको यह यकीन था कि उम्मे सालम बेचारी से न रहन का रुपया अदा हो सकेगा न किराया । रहन की मियाद पूरी होने पर दावा कर दूंगा । मकान को नीलाम पर चढ़वा कर अपने नाम छुड़वा लूंगा । ऐसे मामले हकीम साहब ने बहुत से किये थे ।

नबीबख्श 'यह आपही का सही मगर मैं तो अन्दर नहीं जा सकता था ।

हकीम साहब 'बीसियों बार मेरे साथ गये ।

नबीबख्श 'आपके साथ जाने की और बात है । आप जहाँ जाइयेगा मैं आपके साथ चलूंगा ।

मियाँ नबीबख्श की बात ऐसी न थी कि हकीम साहब फौरन उसे काट सकते और इस वक्त एक एक वाक्ये की जाँच करनी थी ।

हकीम साहब 'फिर तुम्हें क्योंकर मालूम हुआ कि मकान खाली पड़ा है ?

नबीबख्श 'कई बार आवाज दी कुण्डी खड़खड़ाई । दरवाजा जोर से खटखटाया । कोई होता तो बोलता न ?

हकीम साहब 'उम्मे सालम कोठे पर रहती है, वहाँ एक आवाज न गई होगी ।

नबीबख्श 'जी हाँ क्या बहरी है ?'

हकीम साहब यह देखा होता कि कुण्डी अंदर से बंद थी या नहीं ।

नबीबख्श 'यह तो मैंने नहीं देखा ।

हकीम साहब 'बस यही तो तुम्हारी हरकतें हैं । जिस काम को जाते हो कभी पूरा करके नहीं आते । गये तो थे ? यह भी देख लेते ।

नबीबख्श 'यह आपने कहा था ?'

हकीम साहब 'साहीस-अक्ला-मुत्मत इतनी तुममें अक्ल न थी ?

नबीबख्श 'इतनी अक्ल होती तो फिर तीस रुपये महीने की नौकरी

क्या करते ? हम भी न आपकी तरह मसनद पर बैठे होते ? अब देख आऊँ ?'

हकीम साहब : 'जी हाँ सुबह के गये गये तो अब आए हो। अब कहीं गये तो कल आओगे। यहाँ यहाँ दोनों जगह का सौदा-सुलफ़ करता है।

नबीबख्श : 'फिर यह आप जानिये।

हकीम साहब : 'अच्छा तो कल मैं खुद ही जाऊँगा। देखूँ क्या माजरा है ?'

चवालीस

दूसरे दिन हकीम साहब खुद तशरीफ़ ले गये। आवाज़ें दीं। कुण्डी खटखटाई। तमाम मुहल्ले में ख़बर हो गई, मगर उस मकान से किसी की आवाज़ न आई। मकान की कुण्डी खुली हुई थी। अन्दर चले गये। इधर उधर देखा कोई न था। पहले उस कोठे पर गये जहाँ अक्सर आया करते थे जब बेगम साहिबा से ताल्लुक बताया जाता था। फिर इधर से ऊपर के दूसरे कोठे पर गए। ज़ीने पर से किसी के बोलने की आवाज़ आई। ऊपर के ज़ीने से कोठे पर क़दम रखा ही था कि किसी ने चिल्लाकर कहा : 'कौन है ?' यह आवाज़ औरत की थी।

हकीम साहब : 'कोई नहीं। मैं हूँ।

यह आवाज़ : 'आप कौन साहब हैं ? ज़नाने मकान में दनदनाते चले आए।

हकीम साहब : 'क्या करूँ ? कल से आदमी फिर फिर आता है। कोई मकान में बोलता ही नहीं ? आख़िर आज मैं खुद आया। यह उम्दा ख़ानम कहाँ है ?'

मामाज 'कौन उम्दा खानम ?

हकीम साहब 'कौन उम्दा खानम ? जिसका यह मकान है।

मामाज 'मकान मीर साहब का है। उम्दा खानम कौन होती है ? उनका तो नाम तक हमने नहीं सुना।

हकीम साहब 'मीर साहब कौन ?'

मामाज 'यही मीर साहब बड़े मीर साहब के बेटे। अभी कहीं बाहर गये हैं। आते होंगे। अभी आप बाहर जाइये। जब वह आएँगे तब उनसे पूछियेगा।

आखिर की कुछ बातें इस ढंग से कही गई थीं कि हकीम साहब को सिवा कोठे से उतरने के कोई चारा न था। नीचे उतरे। दरवाजे के पास थोड़ी देर ठहरे। फ़िक्र करने लगे कि आखिर अब किससे उम्दा खानम को दरयाफ़्त करूं ! मालूम होता है कि उम्दा खानम ने किसी को किराये पर उठा दिया है। यह लोग किरायेदार हैं। यह अभी यहीं थे कि बाहर से किसी के आने की आहट मालूम हुई। आने वाले ने दरवाजे के अन्दर कदम रक्खा कि हकीम साहब से सामना हुआ। देखा वाक़ई बड़े मीर साहब के बड़े बेटे हैं। मीर साहब ने गरम मिजाज़ से हकीम साहब की तरफ देखकर कहा 'खैर तो है ?

हकीम साहब 'जी खैरियत है। उम्दा खानम के पास आया था। मा' हा आप इस मकान में किराये पर रहते हैं।

मीर साहब 'खुदा के फ़ज़ल से आज तक तो मैं किराये के मकान में नहीं रहा। मकान मेरा खानी है। और आपकी बेतकल्लुफ़ी ने भी क़यामत की। ज़नाने मकान में आप क्यों तशरीफ ले गये ? बाहिर से और आपसे मुलाकात है। मुझसे तो आपसे इस क़दर मेल जोल भी नहीं। यह आपने कमाल खूब किया।

हकीम साहब 'जनाब माफ़ कीजियेगा। मैं उम्दा खानम के पास आया था जिसका यह मकान है। बल्कि मेरे पास रहन है।

मीर साहब : 'यह उम्दा खानम कौन बला है ? मकान मेरा है। यह आप फ़रमाते क्या हैं ?

हकीम साहब 'मैं सही कहता हूँ।

मीर साहब : अच्छा सही हो या गलत मगर बाहर तशरीफ़ रखिये। फ़र्माइये तो कुछ बैठने को मँगवा लिया जाय क्योंकि आप नासिर के दोस्तों में से हैं। सो मुझसे कुछ मेल नहीं।

हकीम साहब (बात के पहलू को समझ के) 'तो यह मकान आपका है ?'

मीर साहब मैं नहीं समझता कि इस बात को फिर से पूछने से आपको क्या फ़ायदा होगा ? मगर आपके सवाल का जवाब दिये देता हूँ। जी हाँ मकान मेरा जाती है। और न इसमें कोई शरीक है न इसमें किसी का दावा है। अगर आप हुक्म दीजिये तो क़बाला भी हाज़िर किया जाय।

हकीम साहब बड़े मीर साहब ने मोल लिया था ?

मीर साहब जी नहीं। 'उनकी नहीं है और यों तो हाँ उन्हीं का है। मैं खुद उनका हूँ मगर यह मकान मैंने अपने जाती रुपये से मोल लिया है।

हकीम साहब 'किससे मोल लिया ?

मीर साहब 'अब इसका जवाब मैं यहाँ न दूँगा। माफ़ कीजिये।

हकीम साहब अच्छा तो मैं जाता हूँ।

मीर साहब 'मैं तो नहीं अर्ज़ कर सकता। तशरीफ़ रखिये। कुछ बैठने को मँगवा लिया जाय। हुक्का भरवा मँगवाऊँ।

हकीम साहब ने देखा कि इन कोरी आवभगत से कोई फ़ायदा नहीं लिहाज़ा अब घर ही चलना मुनासिब है।

नबीबख्श (अब तक मकान के अन्दर रहे और मीर साहब से बातें हुआ की वह सब गौर से सुना किये। एक न बोले। बाहर निकलकर) 'यह कैसी बात हुई ?

हकीम साहब (जवाब देने को जी न चाहता था मगर जवाब देना ही पड़ा) आप ही देखिये। यह मियाँ अनवर का दूसरा जाल निकला। आप ही उनको लाये थे।'

नबीबख्श जी हाँ। आप तो कहिये ही था। मैं जानता था कि आपने बुलवाया था ?'

मिर्ज़ा नबीबख्श को क्या ग़रज़ थी कि अनवर पर ज़रा न बहुत मुलाहिज़ा

इतना बड़ा इलजाम अपने जिम्मे लेते। इसलिये कि वह बहुत बड़े आदमी थे।

नबीबख्श 'यह आपने क्या कहा मैं बुला लाया था? आप ही ने उन लोगों को घेरा। मैं तो जानता था। वह मदरी एक छटी हुई है और मसजद को तो मैं उस जमाने से जानता हूँ जब वह लँगोटी बाँधे फिरता था। एक ही छिछोरिया लौंडा है। मेरा बस होता तो ऐसे लोगों को घुसने भी न देता।

हकीम साहब 'मियाँ अजब आदमी हो। पहले तुम्हीं तारीफें किया करते थे अब यों कहते हो।

नबीबख्श 'तारीफें न करता तो क्या करता? आप उन्हें बुलाते थे बिठाते थे। फिर मैं उनसे क्यों बुरा होता और मुँह पर भी कोई किसी को बुरा कहता है?

हकीम साहब 'तुमने उनके मुँह पर न कहा था तो उसके पीछे हमसे कुछ उनका हाल तो कह दिया होता।

नबीबख्श 'क्या आप नहीं जानते थे?

हकीम साहब 'मैं क्या जानता था कि ऐसे वाहिए हैं।

नबीबख्श तो वह रुपया जो आपने मिरजी को दिया है, वह कहीं नहीं गया है?

हकीम साहब 'गया नहीं तो क्या मिलता है? दो सात सौ रुपय पर पानी फिर गया।

नबीबख्श 'यह किस्मत की बात है।

हम भी हैं मुख्तार लेकिन इस क़दर हैं अख़्तियार,
जब हुए मजबूर क़िस्मत को बुरा कहने लगे।

पैंतालीस

ख़त्म है यारों मगर ए 'सबा'
एक नई बात जी में आई है।

इस वाक़यात के दस बारह बरस बाद छोटे नवाब साहब से मुलाक़ात हुई। पुराने हैदरगंज में रहते हैं। सवा सवा रुपया माहवार किराये का मकान है। माल असबाब से सिवा कपड़े बोरिया टीन का लोटा एक अदद मिट्टी का हँडिया दो अदद मिट्टी के घड़े दो अदद, इसके सिवा मकान में नज़र कुछ न आया। हाँ एक तरफ़ कोने में एक बोतल भी रक्खी हुई थी। मगर यह पक्के तौर से मालूम हुआ कि यह सरकारी माल नहीं। ज़रूरत के वक़्त कलारी से उधार आ जाती है। पुराने आदमियों में अब कोई बाक़ी नहीं। सिर्फ़ एक बड़ी अम्माजी का दम है। वही रात दिन ख़िदमत करती हैं। या दोस्तों में कोई पास नहीं फटकता। लेकिन इस हालत में जब किसी आफ़त के मारे को अपनी ज़रूरत से घर से एक रात के लिये ग़ायब हो जाना ज़रूरी होता है और कोई जगह फ़ौरन नहीं दीखती तो आप ही के घर पर बेतकल्लुफ़ चला आता है। इस हालत में ज़रूर है कि यहाँ अपने वास्ते खाने पीने की फ़िक्र करे नवाब साहब और उनके आदमियों का भी ख़याल रक्खे। वरना क्या ज़रूर है कि नवाब साहब उसके लिये अपने क़ीमती वक़्त को ख़र्च करके ज़रूरी चीज़ें मँगायें। या महल्ले से चारपाई माँगते फिरें या एक जोड़े कपड़े जो वक़्त वक़्त पर बाज़ रिश्तेदार या दोस्तों से उधार कर नज़र किये हैं, उनमें से जिनकी ज़रूरत बिलफ़ेल नहीं होती वह अक्सर कलवार-ख़ाने में और बनिये की दुकान पर बतौर अमानत

रहते हैं। मगर तबियत नवाब साहब की टढ़ुनों से फ़ायदा उठाने वाली थी। इसलिये उस्तादों ने जिन फ़र्मों के ज़रिये से आप से रुपया वसूल किया उसकी बहुत कुछ तिफाकत आपको भी आ गई है मगर मस्ती उसको अमल में लाने की ज्यादा फ़ुरसत नहीं देती। जिस दिन नवाब साहब को पेंशन या वसीक़ा मिलता है अगरचे वह कुछ मिलाकर कम से भी कम है लेकिन एक दो दिन के लिये नवाबी कारख़ाना हो जाया करता है। कुरयीन से मुलाक़ात का हाल ऊपर आ चुका है। उसके बाद एक और बाज़ारी औरत से कई साल लुत्फ़ रहा और उससे भी कुछ दिनों खूब साथ दिया। उसकी आमदनी की रक़म नवाब साहब के वसीके पेंशन से कई गुना ज्यादा थी और यह सब आप ही के खर्च में आती थी। मगर जहालत और उसके साथी एब बैरे कुदरतों और बेवफ़ाई जो आपने कई साल की आवारा पनों के हासिल किये थे ऐसे थे कि उनकी वजह से यह मुमकिन नहीं था कि आप से किसी से दोस्ती निभ सके। इसलिये कि यह जौहर मुमकिन नहीं कि कभी कुन न जावे। मतलब यह है कि उससे भी अलग हो गये। यहाँ अय्याशी का साथ देना बहुत काम आया और अभी कुछ दिनों और आवेगा। आपकी माँ करवला गई थीं फिर नहीं मालूम कहाँ गुम हो गई।

एक ज़माने में आपने अपने ख़ास दोस्तों को यह चकमा भी दिया था कि वालिदा ने मेरे कुछ नोट चुरा लिए थे उनका पता लगाइये। मगर आपके पुराने संगी-साथियों ने इस फ़िक़रे पर बल न पड़ने दिया और किसी को आप पर यक़ीन न हुआ न हमदर्दी हुई। कचहरी के कारोबार में भी आपको कुछ दख़ल है। जिस मोहल्ले में आप रहते हैं वहाँ के पुलिस वालों से भी अक्सर यह मामला रहता है,

> तुम हमें पूछो न पूछो हम तुम्हारे दोस्त हैं,
> क़द्र करने के लिए इतना तआल्लुक़ कम नहीं।

इतना तआल्लुक़ ग़रीब मुहल्ले वालों के धमकाने के लिए काफ़ी है। अगर किसी से कोई गुस्ताख़ी हो गई और नवाब साहब नाराज़ हो गये तो 'वल्लाह थानेदार साहब से कह कर मुहल्ले से निकलवा दूँगा।

बेचारे ग़रीब धनवान मुमकिन है कि ऐसे दो-एक फ़िक़रों से वो एक बार चौंक उठें मगर जब यह बार बार कहे जाने लगे और नतीजा कुछ हुआ नहीं तो लोग समझ गए। ग़रज़ कि जो रौब जमाना चाहा था न जमा। जब चाल फ़रेब की हिकमत से काम न चला तो ख़ुशामद से काम चलता रहा। इस फ़न की बदौलत नवाब साहब को अक्सर फ़ायदे हुए। मगर यही ढंग रहा तो फ़ायदे होते रहेंगे। कुछ नवाब साहब के लिए ही ख़ास बात नहीं बल्कि अक्सर बेवक़ूफ़ अमीरज़ादों की यह आदत होती है कि जो लोग उनकी इज़्ज़त के ख़याल से उनके साथ किसी क़िस्म की मुरव्वत करते हैं तो वह बजाय इस के कि उसका एहसान मानें उस रियायत को अपना हक़ समझते हैं। इससे शेख़ी बढ़ती जाती है और वह तरह तरह की ख़राबियों की वजह होती है।

अब हम इस कहानी को ख़त्म करते हैं और ख़त्म करने के साथ सिर्फ़ इतनी इत्तला और है कि यह कहानी और इसके अलावा जो और नावेल हमने लिखे हैं उनमें किसी में ऐसा कोई वाक़या नहीं है जिससे किस दिमाग़ पर कोई बुरा असर पैदा होता या डर पैदा हो सके क्योंकि अव्वल अव्वल हमारा नावेल लिखने से पहले पढ़ने के ढंग के ख़ास बात इकट्ठा करना है।

हमारे नावेल न ट्रेजेडी हैं न कमेडी। न हमारे हीरो तलवार से ख़त्म हुए, न इनमें से किसी ने ख़ुद-कुशी की। न मिलाप हुआ न विछोह।

हमारे नावेलों को मौजूदा ज़माने की तवारीख़ समझना चाहिये। उम्मीद है कि यह तवारीख़ फ़ायदेमन्द साबित हो और लोग हमें बधाई देकर याद करें।